हमारी लोक-कथाएँ

जल-कन्या

बुन्देलखण्डी

एक समय की बात है। कौनऊ नगर में एक राजा हतो। ऊके राज में रैयत के लोग पेट भर खात और नींद भर सोउत हते। कोऊखों काऊ बात की अड़चन नैं हती।

ओई शहर में राजा के महल के लिगा एक जसोंदी की टपरिया हतो। ऊके घर में मताई-बेटा दोई प्रानी हते। बेटा स्यानो हो गव तो। जसोंदी तो आय, उए गावे बजावे को बड़ो शौक हतो। जब मन में हुलास उठै तबई सारंगी उठाके गाउन-बजाउन लगत तो। राजा साब जसोंदी कौ गावो सुन के मगन हो जात ते। घंटों सुनत रैत ते। राजकाज सें फुरसत पाके जब राजा रातखों अपने महल में सोबेखों आउत हते तो पलका पै परे-परे जसोंदी की ताने सुनके दिन भर की थकान भूल जात ते।

एतरां भौत दिन निकर गए। एक दिना की बात है कै राजा राज-काज से निबट कें रातखो अपने पलका पै आके सो गव। हारो थको तो आय, पर तऊं नीद लग गई। फसर फसर सोउन लगो। सोउत में उए सपनो आव। का देखत है कै एक भौत बड़ो घनो जंगल है। जंगल के बीच एक तला है। तला की पार पै एक मन्दिर है। मन्दिर के भीतर एक भोंहरो है। ओ भोंहरे मे से घुसो तो नौ छिड़ियां उतर कै एक कुआ दिखानो। वो कुआ मे कूंद परो तो नैचे जाकें का देखत है कै एक सुन्दर बाग है। बाग के बीच में एक महल बनो है। महल में एक सोरा वर्ष की भौत कबूल सूरत कन्या ठाड़ी है। राजा ईतरां सपनो देख रव हतो। एई बिरियां रूं-रूं-रूं करके जसोंदी की सारंगी बज उठी। राजा को सुख-सपनो भंग हो गव। नीद खुल गई। राजा ने सपने में जो जो बातें देखी हती, जगवे पै उतै एकऊ नै

जल-कन्या

हिन्दी रूपान्तर

एक समय की बात है। किसी नगर मे एक राजा था। उसके राज्य में प्रजा के लोग पेट-भर खाते और नींद-भर सोते थे। किसी बात का कष्ट न था।

उसी शहर मे राजा के महल के पास जसोदी की एक झोपडी थी। उसके घर में मा-बेटे दो ही जने थे। लडका सयाना हो गया था। जसोदी को गाने-बजाने का बडा शौक था। जब उमग उठती तभी सारंगी उठाकर गाने-बजाने लगता। राजा साहब जसोदी का गाना सुनकर मस्त हो जाते थे। घटो सुनते रहते थे। राज के काम से फुरसत पाकर रात को जब वे अपने महल में सोने के लिए आते तो पलग पर पडे-पड़े जसोदी की तानें सुनते और दिन-भर की थकान भूल जाते।

इस तरह बहुत दिन बीत गए। एक दिन की बात कि राजा कचहरी से निबट कर रात को महल में सो रहे थे। खूब गहरी नींद मे थे। उन्हें सपना आया। देखते क्या है कि एक बडा जगल है। जगल के बीच में एक तालाब है। तालाब के किनारे एक मदिर है। मदिर के भीतर एक भोहरा है। भोहरे में घुसे तो नौ सीढिया उतरने पर उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया। वह कुए में कूद पडे। नीचे जाकर क्या देखते है कि एक बहुत सुन्दर बाग है। बाग के बीच मे एक महल बना है। महल में एक सोलह वर्ष की रूपवती कन्या खडी है। राजा इस प्रकार सपना देख रहे थे। इसी समय 'रू-रू-रू' करके जसोदी की सारगी बज उठी। राजा का स्वप्न टूट गया। नींद खुल गई। राजा ने सपने में जो-जो बातें देखी थी, जागने पर उनमें से एक भी दिखाई न दी। राजा को बडा क्रोध आया। इस दुष्ट ने मेरा बना-बनाया

दिखानी। राजाखों क्रोध उपजो। ये दुष्ट ने बनो बनाओ काम बिगार दव! सिपाई सें कई—"जाव जसोंदी खों पकर ल्याव।" सिपाई जसोंदी के घरै जाकें बोलो—"चलो, तुमें राजा साब बुलाउत हैं।" वो मन में सोचन लगो, राजा हमें कायखों बुलाउत हुइएं? मैंने काऊ की टटिया तो काटी नैयां, नै काऊ की वहू-बिटिया पकरी है। फिर जौ आधी रात के समैं बुलौवा कैसो? फिर मनमें गुनी 'कर नईं तो डर नईं' जाके सुनो चाइये। वो सिपाई के संगे हो गव। राजा की नजर जसोंदी पै परी तो कान लगो—"कायरे पाजी, तू बेरा कुबेरां हमेसईं गाउत बजाउत है। तोरी तान से हमाई नींद टूट गई। सुख-सपनो भंग हो गव। वो तला, वो मंदिर वो बाग और वा जल-कन्या सब बिला गईं। खबरदार! अब तू जो कऊं आज से गाहे-बजाहे तो तोखों राजसें निकार दैहों या जानसें मरवा डार हों।" जसोंदी राजा की बात सुनके घबरा गव। 'सरकार की जैसी मरजी' कहके घरै लौट आव।

जसोंदी खों गावे-बजावे की आदत हती। रात खों सोवे के पैलऊ जबलौं वो घरी दो घरी गा बजा नैं लेत हतो तौलौं नींद नै आउत हती। अब राजा ने रोक लगा दई। बिछौना पै परै तो नींद नै आवे। ई करोंटा ऊ करोंटा करकें रात काटन लगो। एक दिना ऊसें नै रहो गव। सारंगी उठाई और गाउन लगो। राजा ऊ समय सो रव हतो। गावे की अवाज सुनी तो नींद खुल गई। जसोंदी खों पकर बुलाओ। देखतऊं गुस्सा भड़क परी—दो कौंड़ी को आदमी और हमाई हुकमउदूली करै! आव देखो नै ताव, जल्लादों खों बुलाकें हुकम दै दव कै "जाव ई की मूंड़ काट डारो और आंखें निकार ल्याव।"

जल्लाद जसोंदी को हात पकर के जंगल में लै गए। तरवार निकार कें मारन लगे। जसोंदी घबरा गव। पांव पै गिर के विन्ती करन लगो—"मोय जिन मारो, मैं गरीब आदमी हों। छोड़ देव तो बड़ो पुन्न हुइये। और जा बात सोई समझ लेव कै राजों के चित्त को कछू ठिकानो नईं रय। कौन बेरां का कैन लगें। आज मारबे की कई है, काल कऊं कान लगे हमें जसोंदी

काम बिगाड दिया। उन्होने तत्काल सिपाही से कहा, "जाओ, जसोदी को पकड लाओ।"

सिपाही ने जसोदी के घर जाकर कहा, "चलो, तुम्हे राजा साहब बुलाते है।" जसोदी मन मे सोचने लगा कि राजा साहब मुझे किसलिए बुलाते होगे ? मैने किसीकी न तो चोरी की है और न किसी की बहू-बिटिया को बुरी निगाह से देखा है। फिर आधी रात के समय यह बुलावा कैसा ? मन मे सोचा, "जब कर नही तो डर नही।" जाकर सुनना चाहिए। वह सिपाही के साथ हो गया। राजा की नजर जसोदी पर पडी तो वह कहने लगे, "क्यो रे पाजी, तू समय-असमय हमेशा गाता-बजाता रहता है ? तेरी तान से मेरी नीद टूट गई। मेरा सुख-स्वप्न भग हो गया। वह तालाब, वह मदिर, वह बाग और वह जल-कन्या गायब हो गई। खबरदार ! आज से अब अगर गाया-बजाया तो तुझे राज्य से निकाल दूगा या जान से मरवा डालूगा।"

"सरकार की जैसी मरजी"—कहकर जसोदी घर आ गया।

जसोदी को गाने-बजाने की आदत थी ही। रात को सोने के पहले जबतक वह घडी दो घडी गा न लेता, तबतक उसे नीद न आती। अब राजा ने रोक लगा दी। बिछौने पर लेटे तो नीद न आवे। इस करवट, उस करवट करके रात बिताने लगा। एक दिन उससे न रहा गया। सारगी उठाई और गाने लगा। राजा उस समय सो रहा था। गाने की आवाज सुनी तो नीद खुल गई। जसोदी को पकड बुलाया। देखते ही क्रोध भडक उठा। दो कौडी का आदमी और मेरी आज्ञा न माने ! आव देखा न ताव, जल्लादो को बुला कर हुक्म दे दिया—"जाओ, इसका सिर काट डालो और आखे मेरे सामने पेश करो।"

जल्लाद जसोदी को पकड कर जगल मे ले गए और वहा उसे मारने लगे। जसोदी घबडा गया। उनके पैरो पर गिर कर कहने लगा, "मुझे मत मारो, मै गरीब आदमी हू। मुझे छोड दोगे तो आप लोगो को बडा पुण्य होगा, क्योकि मै निरपराध हू। यह बात भी आपके समझने की है कि राजाओ के चित्त का कोई ठिकाना नही, किस समय क्या कहने लगे। आज मार

खों चाने है, उए हाजर करो; तो का कर हो ?" जल्लादों को जसोंदी की बात जंच गई। जसोंदी खों छोड़ दव और एक बुकरा मार के ऊकी आंखें राजा के सामने पेश कर दईं।

एक दिना की बात राजा व्यारू करकें सो रव। सोउत में फिर ओई सपनो देखन लगो—एक बडो जंगल है। जंगल के बीच में तला है। तला की पार पै मंदिर बनों है। मंदिर के बीच में भोंहरो है। भोहरे की नौ छिड़ियां उतरवै पै एक कुआ दिखानो। वो कुआ में कूंद परो तों का देखत है नैंचे एक भौत सुन्दर बाग है। बाग के बीच में महल है। महल में एक जल-कन्या रेत है। ऊ के संगे हमारो ब्याव हो गव है।

सपनो पूरो हो गव। नींद खुल गई। जगवे पै देखो तो कहूं कछू नें दिखानो। राजा मनमें विचारन लगो मैंने नाहक जसोंदी खो मरवा डारो। राजा ऊ दिन से उदास रहन लगो। खावो पीवो सब फीको लगन लगो।

अब जसोंदी कौ किस्सा सुनो। जल्लादों के हात सें छूट कैं वो प्रान लैकें भगो। भगत-भगत संजा समै जंगल के बीच ओई तला पैंजा पौंचो जेखों सपने में राजा ने देखो हतो। जसोंदी ने सोची कछू दिना इतईं लुक-छिप कैं रव चाइये। एकांत जगा है। जो कऊं राजाखों मोरो पतो चल जैहे तो पकरवा के मरवा डार है। रात भई तो वो तला की पार के एक रूख पै चढ़ गव। अंधयारो बढ़न लगो। वो डार सें चिपट कैं रैं गव।

आधी रात के समै चंदा ऊगो। उजयारो फैल गव। इतने में का देखत है कै एक सोरा बरस की भौत कबूल सूरत कन्या तला पै आई। स्नान करके मंदिर गई। पूजा करकें सात मुठी चून चढ़ाके भोंहरे की रस्ता में चली गई। ऊके संगे एक कुत्ता आव हतो वो चून खान लगो। चून खाकें वो सोई चलो गय। जसोंदी ओई हाल नित देखत हतो। एक दिना जब जल-कन्या चून चढ़ा कैं चली गई तब जसोंदी हिम्मत करके नैंचे उतरो और ऊने वो चून समेट लव। आस-पास सें लकरिया बीनीं और तलाके पानी से चून उसन कें रोटीं बनाईं।

डालने को कहा है, कल यदि कहने लगे कि मुझे जसोदी की जरूरत है, उसे हाजिर करो तो ऐसी स्थिति में क्या करोगे ?" जल्लादो को जसोदी की बात जच गई। उन्होने उसे छोड दिया और एक बकरे की आखे निकाल कर राजा के सामने पेश कर दी।

एक दिन की बात। रात को राजा ब्यालू करके सो गये। सोते समय वह फिर वही सपना देखने लगे—एक बडा जगल है। जगल के बीच मे तालाब है। तालाब के किनारे मदिर है। मदिर के बीच भोहरा है। भोहरे की राह से नौ सीढिया उतरने पर एक कुआ दीखा। बाग के बीच एक महल बना था। महल मे एक सोलह वर्ष की सुन्दरी लडकी खडी थी। उन्होने देखा उस लडकी के साथ मेरा विवाह हो गया है। स्वप्न पूरा हो गया। नीद खुल गई। जागने पर देखा तो कही कुछ नही है। राजा मन मे विचार करने लगा कि मैंने जसोदी को व्यर्थ मरवा डाला। यह सोचकर वह उस दिन से उदास रहने लगा। खाना-पीना कुछ भी अच्छा न लगता था।

अब जसोदी का किस्सा सुनिये। जल्लादो के हाथ से छूटा तो वह जान बचाकर भागा। भागते-भागते सध्या समय जगल के बीच उसी तालाब के किनारे पहुचा, जिसे राजा ने सपने मे देखा था। जसोदी ने सोचा—कुछ दिन यही छिप कर रहना चाहिए। एकान्त जगह है। यदि राजा को मेरा पता चल गया तो वह मुझे मरवा डालेगा। रात हुई तब वह तालाब के किनारे के एक पेड पर चढ गया। अधेरा बढने लगा। डर के मारे डाल से चिपट कर रह गया। आधी रात के समय चन्द्रमा निकला। सब तरफ उजेला फैल गया। इतने मे वह देखता क्या है कि एक सोलह बरस की बहुत रूपवती कन्या तालाब पर आई। स्नान करके मदिर गई। देवता की पूजा की और सात मुट्ठी आटा चढाकर भोहरे के मार्ग से वापस चली गई। उसके साथ एक कुत्ता आया था। वह चढाया हुआ आटा खाने लगा। खाकर उसी मार्ग से वह भी चला गया। जसोदी यह हाल नित्यप्रति देखता था। एक दिन जब जल-कन्या मदिर मे आटा चढाकर चली गई तब जसोदी हिम्मत करके

अब ऊने सोची तलके पानी में हात माँ धोके भोजन करो चाइये। इतै कुत्ता मन में सोच रव हतो कै चून रोज मै खाता हतो आज ईने आके हमारो हवक छीन लव। जसोंदी तला पै हात माँ धोउन लगो। इतै छवका पाकें कुत्ता सब रोटीं उठा ले गव।

जसोंदी हात माँ धोकें लौटो तो देखत है कुत्ता सब रोटीं लंय जात है। वो पाछें दौरो। कुत्ता भोंहरे की राह में जाकें कुआ में कूंद परो। जसोंदी निराश होके लौट आव। सोची, आज गलती हो गई। भिनाने देखबी।

दूसरे दिना जसोंदी ने जंगल के फल फूल खाके दिन बिताय। रात भई तो फिर ओई रूख पै जा टंगो। जल-कन्या के आवे की बाट देखन लगो। जल-कन्या समय पै आई और मंदिर पै चून चढाकें चली गई। जसोंदी तो तकेंई बैठो हतो, झट उतरो और चून समेट लव। आज फिर दोई तरां ऊकी रोटीं बनाई। हात माँ धोवे के बहाने तला पै गव पै नजर रोटींई पै राखी। जब कुत्ता रोटी लैंवे भगन लगो तो ऊने झपट के उकी पूंछ पकर लई। कुत्ता ताकतवर हतो। वो कुड़रन लगो। कुत्ता मंदिर में घुसके भोंहरे को रस्ता सें कुआ में फूंद गव। जसोंदी पूछ सें लटको गव। भीतर पौंचो तो का देखत है कै एक सुन्दर बाग है। बाग में पहुंचतऊं जसोंदी ने पूंछ छोड़ दई। कुत्ता भगकें जल-कन्या के पास जा ठाढ़ो भव।

जल-कन्या जसोंदी खों देख कै सोचन लगी मोरे लानें भगवान ने वर भेजो है। ऊ की खातिरदारी करो चाइये। दासी खों भेजकें डेरा करा दय।

अब ऊने सोची परीक्षा तो करो चाइये जो वर गरीब घराने को है या अमीर। ऊने दो लोटो में जल भरवाव। एक चांदी को दूसरो पीतर को। दोई लोटा मेहमान के लिगा भिजवा दये। जसोंदी ने सोची, मैं तो जनम को गरीब आऊं, रोज पीतर के लोटासें पानी पियत हों, एक दिना चांदी के लोटामें पी लैहों तो का हुइये ?

ऐसी सोच ऊने पीतर को लोटा लै लव। अब जल-कन्या ने दो थारी परोसीं। एक में छप्पन भोजन और दूसरो में दार-भात। दोई

नीचे उतरा और मदिर मे जाकर आटा समेट लाया। आसपास से लकडी बीनकर उसने रोटिया बनाई। वह सोचने लगा कि हाथ-मुह धोकर भोजन करना चाहिए। उधर कुत्ता मन मे सोच रहा था कि यह आटा रोज मै खाता था। आज इसने आकर मेरा हक छीन लिया। जसोदी तालाब पर हाथ-मुह धोने गया। इधर अवसर पाकर कुत्ता सब रोटिया लेकर भाग गया। जसोदी तालाब से लौटा तो देखता है कि कुत्ता सारी रोटिया लिये भागा जा रहा है। वह दौडा। कुत्ता भोहरे के मार्ग से जाकर कुए मे कूद पडा। जसोदी निराश होकर लौट आया। आज गलती हो गई। कल देखा जायगा।

दूसरे दिन जसोदी ने जगल के फल-फूल खाकर दिन बिताया। रात हुई तो फिर उसी वृक्ष पर जा चढा। जलकन्या के आने की राह देखने लगा। जल-कन्या समय पर आई और मदिर पर आटा चढाकर चली गई। जसोदी तो ताक मे बैठा ही था। झटपट उतर कर आटा समेट लिया। आज फिर उसने रोटिया बनाई। हाथ-मुह धोने के बहाने तालाब की ओर गया पर नजर रोटियो पर ही रखी। जब कुत्ता रोटिया लेकर भागने लगा तो उसने दौडकर उसकी पूछ पकड ली। कुत्ता ताकतवर था। जसोदी को घसीट कर ले जाने लगा। कुत्ता भोहरे की राह से जाकर कुए मे कूद पडा। भीतर पहुचा तो देखता क्या है कि एक सुन्दर बाग है। बाग मे पहुचते ही उसने पूछ छोड दी। कुत्ता भागकर जल-कन्या के पास जा खडा हुआ।

जलकन्या जसोदी को देखकर विचार करने लगी कि मेरे लिए भगवान ने वर भेजा है। उसका आदर-सत्कार करना चाहिए। दासी को भेजकर डेरा करा दिया। अब उसने विचारा कि वर गरीब घराने का है या अमीर घराने का, इसकी परीक्षा करनी चाहिए। उसने दो लोटो मे जल भरवाया। एक चादी का, दूसरा पीतल का। दोनो मेहमान के पास भिजवा दिये। जसोदी ने सोचा कि मै तो जन्म का गरीब हू। नित्य पीतल के लोटे से जल पीता हू। आज चादी के लोटा से पी लूगा तो क्या होगा ? ऐसा सोच उसने पीतल का लोटा ले लिया। अब जल-कन्या ने दो थालिया सजोई। एक मे छप्पन भोजन परोसे दूसरे मे दाल-भात। दोनो थाली भिजवा दी। जसोदी ने

पाँचा दई। जसोंदी ने सोची एक दिना छप्पन भोजन खाये से का हुइये। जीभई लवक है। रोज तो दार-भात से काम परने है। ईसें दार-भात खावो ठीक। ऊने दार-भात खा लव। छप्पन भोजन की थारी ज्यों की त्यो धरी रैन दई। जब रात भई तो ऊने एक तो नोनों पलका बिछवा दव जैपै नरम गदेला और सेजें सुपेती बिछीं हतीं। दूसरी एक खटिया बिछवा दई और ऊपै कमरा डार दव। जसोंदी ने सोची अपनो काम तो रोज कमरई से परत है, एक दिना सेजों-सुपेती पै सो कैं का करहैं। वो खटिया पै सो रव। कन्या जान गई जो निचाट गरीब घराने को आदमी है। ई के संगे ब्याव कर वो जोग नैयां।

कछू दिन लौं जसोंदी उतै रहो। सोची पहुनई हो गई अब चलो चाइये। रातखों जब बेटी के संगे कुत्ता जान लगो तो जसोंदी ने ऊ की पूंछ पकर लई। वो कुत्ता के साथ तला की पार पै आ गव।

जसोंदी ने सोची जो सपनो राजाखों आव हतो वो मैंने प्रत्यक्ष देख लव। अब राजा खों ल्याकें दिखा दव चाइये। राजा भौत खुस हुइये। मोरो कसूर माफ कर दै है और कदाच बन पर है तो खासी इनाम गठ है।

ऐसी सोच वो चलो और दूसरे दिना घरै आ गव। टपरिया के दोर पै ठाड़ो होके टेरन लगो—मताई, ओ मताई! किवरिया खोलो।

मताई ने भीतर सुनी कोऊ टेरत है। वा बाहर आई। का देखत है कै ऊ को बेटा ठाडो है? वा कौक दैकें भगी। कान लगी—भूत है भूत। मोरे लरका खों तो जल्लादों ने मार डारो है जो ऊ को रूप धरकें को आ गव? डर के मारें थर-थर कपन लगी।

पीछे सें जसोंदी ने आके कई—"मताई डराव नैं। मैं तोरो लरका आउं। जल्लादों ने हमें मारो नैयां—छोड दय है। लिंगा आके देखो।"

डुकरिया खों परतीत हो गई। लरका खों पाकें डुकरिया की खुसी को पार नैं रव।

रात भई। घुल्ला पै सारंगी टंगी देखी तो मन हो आव। उठाकें बजावन लगो। मतारी बोली—"बेटा अब ऐसी नादानी नैं करो। राजा

सोचा कि एक दिन छप्पन भोजन खाने से क्या होगा ? जीभ ही बिगड़ेगी। रोज तो दाल-भात से काम पडता है। इसलिए दाल-भात खाना ठीक होगा। उसने दाल-भात खा लिया और छप्पन भोजन की थाली ज्यो-की-त्यो रखी रही। जब रात हुई तो जल-कन्या ने एक तो उत्तम पलग बिछवाया, जिसपर नरम बिछौना और सफेद चादर बिछी थी, दूसरी एक खटिया बिछवा दी और उसपर एक कम्बल डलवा दिया। जसोदी ने सोचा कि अपना काम तो नित्य कम्बल से ही पडता है। एक दिन उजली सेज पर सो लूगा तो क्या होगा ? वह खाट पर सो गया। कन्या समझ गई कि यह बिलकुल गरीब खान्दान का आदमी है। इसके साथ विवाह करना ठीक नही है।

कुछ दिन जसोदी वहा रहा। सोचा कि अब तो मेहमानदारी हो चुकी, अब चलना चाहिए। रात के समय जब बेटी के साथ कुत्ता जाने लगा तो जसोदी ने उसकी पूछ पकड ली। वह कुत्ते के साथ तालाब की पार पर आ गया।

जसोदी मन मे विचार करने लगा कि जो सपना राजा को आया था वह मैने आखो देख लिया। अब राजा को लाकर दिखाना चाहिए। राजा बहुत प्रसन्न होगा। ताज्जुब नही, कुछ भारी इनाम गठ जावे। मेरा अपराध तो माफ कर ही देगा। ऐसा सोच वह चला और दूसरे दिन घर जा पहुचा। झोपडी के द्वार पर खडे होकर पुकारने लगा, "मा, ओ मा, किवाड खोल दो।" बुढिया ने भीतर से सुना कि कोई बुला रहा है। वह बाहर आई तो देखती क्या है कि उसका लडका खडा है। वह चीख मारकर भागी। कहने लगी, "भूत है—भूत। मेरे लडके को तो जल्लादो ने मार डाला है। यह उसका रूप बनाकर कौन आ गया ?" वह डर के मारे थर-थर कापने लगी। इतने मे पीछे से जसोदी ने आकर कहा, "मा, डरो मत। मै तुम्हारा ही लडका हू। जल्लादो ने मुझे मारा नही है, छोड दिया है। पास आकर देखो।" बुढिया को भरोसा हो गया। लडके को पाकर उसकी खुशी का पार न रहा।

रात हुई। खूटी पर सारगी टगी देखी तो उसका मन हो आया। वह सारगी लेकर बजाने लगा। मा बोली, "बेटा, अब फिर ऐसी नादानी न कर।

सुनहै तो बुलाकें मरवा डार है।" लरका बोलो—"का चिन्ता है? एक दिना तो सबईखों मरने है।" सारंगी रूं-रूं-रूं करके बज उठी। गीत की गुंजार दसई दिशों मे फैल गई। राजा अपने महल में परो हतो। जसोंदी के कंठ की अवाज सुनी तो वो भौंचक्को होके रै गव। सोचन लगो, जसोंदी जो मारो गव, फिर जौ को गा रव है? अवाज तो बिलकुल जसोंदी जैसी है। राजा ने हुकम दव—"जो को गा रव है, तुरत पकर ल्याओ।" सिपाई ने जसोंदी खों पकर कें राजा के सामने ठाडो कर दव।

राजा की नजर जसोंदी पै परी तो अचक कें रै गव। बोलो—"अरे तू कहां से आ गव? का जल्लादों ने मारो नैया?" जसोंदी ने उत्तर दव—"सरकार, आपई के काम के लाने कछू दिनन की मुहलत माग लई है। एक जरूरी काम से सरकार के पास आव हों। मरजी होय तो सुनाऊं?" राजा बोलो—सुनाओ। जसोंदी कहन लगो—सरकार आपने जो कछू सपने में देखो हतो वो हमने प्रत्यक्ष देख लव है। हमारे संगे चलवो होय, मैं आपखों आंखों से दिखा दऊं।" जसोंदी की बात सुनके राजा उछल परो। कान लगो—सांची कैत है? जसोंदी बोलो—"साची कात हों राजा साब सांची। चनकट को का उधार, भुनसरां संगे चलो और अपनी आंखो से देख लेव।" राजा बोलो — जसोंदी, जो तुम हमखों हमारो सपने से प्रत्यक्ष बता दै हो तो हम तुम खों मों मागी इनाम देहें और राज को मंत्री बना देहें।" राजा की बात सुनकें जसोदी की बाछें खिल गईं। बोलो—"सरकार अब मैं घरै जात हों। भ्याने अवसई चलवो होय।"

भुनसरा होतऊं राजा ने दो ठौल घोड़ा तैयार कराये। एक पै राजा बैठो, दूसरे पै जसोंदी। दोई चले। चलत-चलत दिन लटके तलाकी पार पै जा पौंचे। घोडा कछू दूर एक रूख से बाध दये। तोबरों में दानो चढ़ा दव। तला की पार पै बैठ के दोई जनों ने भोजन करे और लौलैयां लगतऊं पेडे पै चढ़ गए। जब कछू रात बीत गई तब राजा पूछन लगो—"बा कितनी बिरियां आउत है?" जसोंदी ने जुआप दव—"बस राजा साब, तनक

राजा सुन पावेगा तो मरवा डालेगा।" लडके ने निर्भय होकर कहा, "क्या चिन्ता है, मा ? एक-न-एक दिन तो सभी को मरना है।" सारगी रू-रू रू रू करके बज उठी। गीत की गुजार दशो दिशाओ मे फैल गई। राजा महल मे पडा था। उसने जसोदी के कठ की आवाज सुनी तो वह चकित होकर रह गया। आवाज तो बिलकुल जसोदी जैसी है। राजा ने हुक्म दिया, "इस गानेवाले को पकड लाओ।" सिपाही ने जसोदी को पकडकर राजा के सामने खडा कर दिया।

राजा की नजर जसोदी पर पडी तो वह भौचक्का-सा रह गया। बोला, "अरे, तू कहा से आ गया ? क्या तुझे जल्लादो ने मारा नही है ?" जसोदी ने उत्तर दिया, "महाराज, आप ही के काम के लिए कुछ दिनो की मुहलत माग ली है। एक जरूरी काम से आपके पास आया हू। आप की आज्ञा हो तो सुनाऊ ?" राजा बोला, "सुनाओ।" जसोदी कहने लगा, "महाराज, आपने जो-कुछ सपने मे देखा था वह मै अपनी आखो देख आया हू। आप मेरे साथ चलने की कृपा करे। मै आपको प्रत्यक्ष आपकी आखो से दिखा दूगा।" जसोदी की बात सुनकर राजा खुशी से उछल पडा। बोला, "सच कहता है ?" जसोदी ने जवाब दिया—"सच कहता हूं, महाराज, सच। 'चनकट का क्या उधार ?' सवेरे हमारे साथ चलिए और अपनी आखो से देख लीजिए।" राजा बोला, "जसोदी, जो तुम मेरा सपना मुझे प्रत्यक्ष दिखा दोगे तो मै तुमको मुहमागा इनाम दूगा और तुम्हे राज्य का मत्री बना दूगा।" राजा की बात सुनकर जसोदी की बाछे खिल गई। वह बोला, "महाराज, अब मै घर जाता हू। सवेरे अवश्य ही चलिए।"

सवेरा होते ही राजा ने दो घोडे तैयार कराये। एक पर राजा बैठा, दूसरे पर जसोदी। दोनो चले। चलते-चलते दिनढले तालाब के किनारे जा पहुचे। घोडे कुछ दूर एक पेड से बाध दिये। दाना-पानी दे दिया। तालाब के किनारे बैठकर दोनो ने खाया-पिया और सध्या होते ही दोनो पेड पर चढ गए। जब कुछ रात बीत गई तब राजा पूछने लगा, "वह कब आती है ?" जसोदी ने उत्तर दिया, "बस महाराज, थोडी देर मे आने ही वाली है।"

देर में आउन चाहत हैं।" कछू समय इतै-उतै की बातों में और बीत गव। इतने में पैजनों की झनकार सुना परी। जसोंदी बोलो—"राजा साब हुसयार हो जाव, जल-कन्या आउत है।" राजा टकटकी लगा के देखन लगो। जल-कन्या अपने रूप को उजयारो फैलाउत आई और तला की पार पै ठाड़ी हो गई। देखतऊं राजा खों झमा आ गव। जब कछू समाधान भव तो कान लगो—"बस बस, जई आय। एईखां सपने में देखी हती। कैसी नोनीं लगत है। काय जसोंदी तुमने तो नीरे सें देखी हुइये?" जसोंदी बोलो—"राजा साब, उकताव नै, धीरज धरो। भ्याने भुनसारें तुम खुद नीरे सें देख लियो। अबै तो चुपचाप बैठे-बैठे तमाशो देखो।"

जल-कन्या ने देह पैसे चोली उतारी, तला में घुसी और सपर खोर कें सूखे उन्ना पैरे। फिर मंदिर में जाके पूजा करी और सात मुठी चून चढ़ाकें चली गई। जसोंदी सपाटे से उतरो और मंदिर में जाकें चून उठा लव। राजाखों बुलाकें कई—'तुम बैठो हम रोटी बनाउत हैं।'

जब रोटी बनकें तैयार हो गई तब बोलो—"सुनो राजा साब, कुत्ता जब रोटी लैके भगन लग है तब हम ऊको पूंछ पकर लैहें। तुम सोई लपककें हमारो हात गह लियो। बज्जुर को गहियो जी से छूटन नै पावे। हुसयार हो जाव।"

इतनी कहकें दोई जने तला की ओर गये। कुत्ता बैठो बैठो छक्का तक रव हतो। उनके हटतऊं वो उठो और रोटी लैके भगन लगो। जसोंदी मन तक देख रव हतो। झपट के ऊने एक हात से कुत्ता की पूंछ पकर लई और दूसरो हात राजा की ओर फैला दव। राजा ने ऊको हात गह लव। कुत्ता ताकतवर हतो। दोई जने कुड़रत गए। वो कूंद के मन्दिर में घुस गव और भोहरे की रस्ता से जाके कुआ में कूंद परो। नैचें आये तो फुलवारी में पोंच गए। जसोंदी ने पूंछ छोड़ दई। दोई जने बाग देखन लगे। अजूबा बाग हतो। राजा ने ऐसो बाग अपनी जिंदगी में कभऊ नै देखो हतो। देखतई बनत तो।

जल-कन्या जसोंदी खो तो चीनत हती, ऊके संगे एक सुन्दर युवक देख

कुछ समय और यहा-वहा की बातो मे बीत गया। इतने मे पेजनो की झनकार सुनाई दी। जसोदी बोला,"महाराज, होशियार हो जाइए। जलकन्या आ रही है।" राजा ध्यानपूर्वक देखने लगा। जलकन्या अपने रूप का प्रकाश फैलाती हुई तालाब के पार पर आ खडी हुई। देखते ही राजा को मूर्च्छा आ गई। कुछ समय मे जब सावधान हुआ तो कहने लगा,"बस-बस,यही है। इसी को मैने सपने मे देखा था। कैसी भली लगती है! क्यो जसोदी, तुमने उसे नजदीक से तो देखा होगा?" जसोदी बोला,"महाराज, आतुर मत हूजिए। धीरज रखिए। कल सवेरे आप उसे नजदीक से देख सकेंगे। अभी तो चुप बैठिए और तमाशा देखिए।"

जलकन्या ने देह पर से चोली उतारी, तालाब मे घुसी और स्नान करके सूखी धोती पहनी। फिर मदिर मे जाकर पूजा की और सात मुट्ठी आटा चढाकर चली गई। जसोदी सपाटे से उतरा और मदिर मे जाकर आटा उठा लिया। फिर उसने राजा को बुलाकर कहा, "आप बैठिए, मै रोटी बनाता हू।" जब रोटिया बनकर तैयार हो गई तब जसोदी कहने लगा, "सुनिए, राजा साहब, कुत्ता जब रोटिया लेकर भागने लगेगा तब मै दौडकर उसकी पूछ पकड लूगा। आप भी भागकर मेरा एक हाथ पकड लें। हाथ मजबूती से पकडे जिससे छूटने न पाय। अब सावधान हो जाइये।" इतना कह दोनो तालाब की ओर गए। कुत्ता बैठा हुआ मौका ताक रहा था। ज्योही वे वहा से हटे कि वह रोटिया लेकर भागा। जसोदी तो देख ही रहा था। दौडकर उसने एक हाथ से उसकी पूछ पकड ली और दूसरा हाथ राजा की ओर फैला दिया। राजा ने उसका हाथ पकड लिया। कुत्ता ताकतवर था। दोनो को घसीट कर ले गया। कुत्ता कूदकर मदिर मे चला गया और भोहरे के मार्ग से जाकर कुए मे कूद पडा। नीचे आये तो बाग मे पहुच गए। जसोदी ने पूछ छोड दी। दोनो बाग मे घूमने लगे। राजा ने ऐसा विचित्र बाग अपनी जिन्दगी मे कभी न देखा था। देखते ही बनता था।

जलकन्या जसोदी को पहचानती थी। उसके साथ एक सुन्दर युवक को देखकर प्रसन्न हुई। मन मे विचारने लगी कि भगवान ने आज मेरे लिए

के प्रसन्न हो गई। मन में कान लगी, भगवान ने आज मोरे लाने सुन्दर वर भेजो है। दासी भेजके महलन में डेरा करा दव। खूब आव-भगत करी।

जल-कन्या ने सोची अब परीक्षा लव चाइये। ऊने जैसी परीक्षा जसोंदी की लई हती वैसई राजा की लई। चांदी और पीतर के चरुओ में जल भेजो। राजा ने चांदी को लै लव और पीतर को जसोंदी खो दै दव।

बेटी मन में कान लगी—ठीक। जो राजा मालूम परत है और वो चाकर। सब तरां से परीक्षा लै लई। बेटी को मन भर गव। दोई जनो को व्याव हो गव। तीनई जने—जलकन्या, राजा और जसोंदी राजधानी में आ गये। राजा ने जसोंदी खों मंत्री बना दव। अबका है? जसोदी के दिन फिर गए। ठाटबाट से रान लगो।

एक दिना की बात राजा-रानी दोई बैठे बतकाव कर रये हते। राजा बोलो—"रानी साब, इतै रैत रैत मन उकता गव है, चलो नै कछू दिनन खों सैर—सपाटो कर अइये?"

रानी पतिव्रता हती। हरदम राजा को रुख देख के चलत हती। राजा की बात सुनकें बोली—"भौत अच्छी बात है। जैसी आपकी मरजी। हमें तो उतई नोंनों लगत है जहां आप रात हो।"

राजा, रानी और जसोदी मंत्री तीनई जने अपने-अपने घोड़ों पै असवार होके चले। चलत-चलत दो चार कोस निकर गए। जब टीकाटीक दुपरिया हो गई तो एक पेड़े की छाया तरें उतर परे। रानी ने कलेवा को डबा निकारो। राजा और मंत्री खों भोजन कराकें आप खावे के लाने बैठी। थारी परोसी हती, इतने में ऊपर डगार से एक सुआ टपको और धरती में गिरके छटपटाकें मर गव। रानी बोली—"राजा साब मुरदा डरो है। धरम कहत है कै मुरदा रहत भोजन नै करो चइयें। ईसे आप ईखां जिंदा कर देव।" राजा बोलो—"रानी साब, जिंदा करबो बाएं हात को खेल है, पै संजीवन गुटका तो घरै छोड़ आव हो।" राजा ने जसोदी से कई—"तुम जल्दी जाओ और घर सें गुटका उठा ल्याव। उलायते अइयो। रानी साब भूखीं बैठी है। पै खबरदार गुटका को खोल के नै पढ़ियो।" जैसी मरजी कहके जसोंदी

सुन्दर वर भेजा है। दासी भेजकर महल मे डेरा करा दिया। खूब आदर-सत्कार किया।

जलकन्या ने सोचा कि अब परीक्षा लेनी चाहिए। उसने जैसी परीक्षा जसोदी की ली थी वैसी ही राजा की ली। चादी और पीतल के लोटो मे जल भेजा। राजा ने चादी का लोटा ले लिया और जसोदी को पीतल का दे दिया। बेटी मन मे कहने लगी कि हो न हो,यह राजा मालूम पडता है और वह नौकर। सब प्रकार से परीक्षा ले ली। बेटी का मन भर गया। अब क्या था? दोनो का विवाह हो गया। तीनो आदमी—राजा, जलकन्या और जसोदी राजधानी मे आ गए। राजा ने जसोदी को मत्री बना दिया। जसोदी के दिन फिर गए। वह ठाठबाट से रहने लगा।

एक समय की बात है कि राजा रानी बैठे बातचीत कर रहे थे। राजा बोला, "रानी, यहा रहते-रहते मन ऊब गया है। चलो न, कुछ दिन बाहर सैर कर आवे?"

रानी पतिव्रता थी। हमेशा राजा का रुख देखकर चलती थी। राजा की बात सुनकर बोली,"बहुत अच्छी बात है। मुझे तो वही अच्छा लगता है, जहा आप रहते है।"

राजा, रानी और जसोदी मत्री, तीनो अपने-अपने घोडो पर सवार होकर चले। चलते-चलते दो-चार कोस निकल गए। जब ठीक दोपहर हो गया तो एक पेड की छाया मे तीनो उतर पडे। रानी ने भोजन का डिब्बा निकाला। राजा और मत्री को भोजन कराया। वह भी अपने लिए थाली परोसकर बैठी। इतने मे पेड पर से एक सुआ गिरा और छटपटा कर मर गया। रानी बोली, "महाराज, मुर्दा सामने पडा है। धर्म कहता है कि मुरदे के रहते भोजन नही करना चाहिए। इस कारण आप इसे जिन्दा कर दीजिए।"

राजा बोला,"रानी, जिन्दा करना बाए हाथ का खेल है। पर सजीवनी पुस्तक तो घर छोड आया हू।" राजा जसोदी से बोला,"तुम शीघ्र जाओ और घर से पुस्तक उठा कर लाओ। जल्दी आना। रानी भूखी बैठी है। पर देखो पुस्तक को खोलकर मत पढना।" "जो आज्ञा।"कहकर मत्री चला गया।

चलो गव। महलनमें जाके गुटका उठाओ और तुरतईं लौट परो। गली में ऊने सोची, जी डारबे को मंत्र कैसो होत है हमें सोई सीख लव चइये। पुस्तक खोलकें गली-गली मंत्र घोकत आव। ठिकाने पै आव तो पुस्तक राजा के हात में दै दई। राजा ने पुस्तक खोली। मंत्र पढ़के अपने शरीर सें प्रान निकारे और सुआ के शरीर में डाल दये। सुआ फडफडा कै उठो और डार पै जा बैठो। राजा की निर्जीव देह डरी देख जसोंदी के मन में वद दयांती उठी और ऊने मंत्र पढ़के अपने प्रान निकार के राजा के शरीर में डार दये। राजा को शरीर तो उठ बैठो और जसोंदी को शरीर मुरदा होके धरती पै गिर परो। रानी समझ गई। धोको हो गव। बिचारी हाय खाके रै गईं। कछू उपाव नै सूझो। जसोंदी जो राजा के शरीर में हतो बोलो—"चलो रानी साव, सैर हो चुकी, महलन खो चलिए।" रानी बेबस होके कछू ऊतर दये बिना ऊके संगे लौटके महलों खों आ गईं।

अब का हतो ? राजा तो सुआ बन गव और जसोंदी राजा। लोगन ने पूंछी मंत्री जू कहां रै गए ? तो कै दई, भगवान की लीला, वो तो मर गव। लरका को मरवो सुन के जसोंदन डुकरिया खूब बिलख-बिलख के रोउन लगी। राजा ने ऊखों अच्छी तरां समझाकें कही बूड़ी चिंता ने करो। हम तुमाये दूसरे लरका मौजूद हैं। हम तुम्हारो सब इन्तजाम राख हैं।" राजा ने डुकरिया की सेवा के लाने कुल्ल दासी राख दईं।

बीच में जो खेल हो गव ऊखों रानी और जसोंदी के सिवाय कोऊ नैं जानत हतो। जसोंदी सुख से राज करन लगो। रानी दिन पै दिन सूखन लगी। एक दिना जब जसोंदी रानी के लिंगा गव तब रानी बोली—"सुनो राजा साव, जो कछू होने हतो सो गव। अब मैं तुमाई हो चुकी। पै मैंने तीन साल को व्रत लव है। ऊखों पूरो हो जात देव, फिर तुम राजा और हम रानी।" जसोंदी ने सोची उकताये सें काम नसा जैहै। मैं राजा तो बनई गव हों। कोऊ कछू भेद नईं जाने। जो कऊं जोरजबरजस्ती करत हों तो रानी भेद खोल दे है और बनो बनाओ काम बिगर जैहै। ईसे गम खाये में ही भलाई है। तीन बरस पीछूं रानी सोई मिल जैहै। ऐंसी सोच जसोंदी ने

महल मे जाकर पुस्तक उठाई और तुरत लौट पडा। रास्ते मे उसने सोचा कि जिन्दा करने का मत्र कैसा होता है, मुझे भी सीख लेना चाहिए। पुस्तक खोलकर रास्ते मे मत्र याद करता आया। ठिकाने पर पहुचा तो पुस्तक राजा साहब के हाथ मे दे दी। राजा ने पुस्तक खोली। मत्र पढकर अपने शरीर से प्राण निकाले और सुआ के शरीर मे डाल दिये। सुआ फड़फडा कर उठा और डाल पर जा बैठा। राजा की निर्जीव देह पडी देखकर जसोदी के मन मे कपट उत्पन्न हुआ। उसने मत्र पढकर अपने प्राण निकालकर राजा के शरीर मे डाल दिये। राजा का शरीर उठ बैठा और जसोदी का शरीर मुरदा हो गया। रानी समझ गई कि धोखा हो गया। बेचारी "हाय" कहकर रह गई। उसे कुछ उपाय न सूझा। जसोदी जो अब राजा के शरीर मे था, बोला, "चलो रानी, सैर हो चुकी, अब महल मे चले।" रानी ने कोई उत्तर नही दिया। बेबस होकर चुपचाप उसके साथ महल लौट आई।

अब क्या था! राजा तो सुआ बन गया और जसोदी राजा। लोगो ने पूछा, "मत्रीजी कहा रह गए?" तो कह दिया कि भगवान की लीला। उनका तो स्वर्गवास हो गया। लडके का मरना सुन कर जसोदन बुढिया बहुत रोई। राजा ने उसे अच्छी तरह समझाया। कहा, "माताजी, चिन्ता मत करो। तुम्हारा दूसरा लडका मै बना हू। मै तुम्हारी सब खबरदारी रखूंगा।" ऐसा कहकर उसने बुढिया की सेवा के लिए अनेक दासिया रख दी।

बीच मे जो खेल हो गया, उसे रानी और जसोदी के सिवा कोई न जानता था। जसोदी सुख से राज करने लगा। रानी दिन-पर-दिन सूखने लगी। एक दिन जसोदी जब रानी के पास गया तो रानी बोली, "सुनो महाराज, जो कुछ होना था सो हो गया। अब मै तुम्हारी हो चुकी। पर मैने तीन साल के लिए व्रत लिया है, उसे पूरा हो जाने दो। फिर तुम राजा और मै रानी।" जसोदी ने सोचा कि जल्दबाजी से काम बिगड जायगा। मै राजा तो बन ही गया हू। कोई कुछ भेद जानता नही। यदि जोर-जबरदस्ती की गई तो रानी भेद खोल देगी। बना-बनाया काम बिगड जायगा। इससे गम खाने ही मे भलाई है। तीन वर्ष के बाद रानी मिल ही जायगी। ऐसा सोच उसने रानी की बात

रानी की बात मान लई।

जल-कन्या ने सोची अपने पति को खोज करो चाइये। ऊने गाव-गाव में डोंडी पिटवा दई कै जो कोऊ जितने जियत सुआ पकर के ल्याहे, वाए उतनेई रुपैया दै हो। वहेलिया सुआ पकर-पकर के ल्याउन लगे। जलकन्या सबखों रुपैया दे कैं सुओ खो परख परख के छुडा देत हती। जो सुआ कछू हुसयार सो दिखात हतो वाएं पिंजरा में पाल लेत ती। ई तरां रोज हजारन सुआ आउन लगे।

इतै को हाल सुन लव, अब सुआ को किस्सा सुनो।

सुआ के शरीरमें घुसके राजा पेडे की एक डगार पै जा बैठो हतो। जसोदी ने ऊके संगे जो छल-कपट करो ऊने अपनी आखों देखो हतो। अब राजासुआ मनई मन पछतान लगो। मैं भौत चूका खा गव। अब तो बात बिगरई गई है। देखो भगवान आगें का करत है, ऐसी सोच वो उड़ चलो। उड़त-उड़त कछू दूर जाके का देखत है कै एक रूख पै हजारन सुआ बैठे हैं। वो उन में जा मिलो। सब सुओं ने ईकी चतुरई देखके अपने झुंड को राजा बना लव। सलाय होन लगी, आज चरवे खों कहां चलो चाइये? कोऊ ने ठिकानो बताव। ऊ गांव के लिंगा एक भौत बड़ो आम को पेड़ो है वो लद-बदौअन फरो है। आज ओई की अमिया खाव चाइये। बात सब ने मंजूर कर लई। राजासुआ बोलो—"ठीक, उतई चलो। पै एक सुआ आगे-आगे उडे। पाछू सब उड़ें। सबके पाछूं मैं रह हो। जो सुआ आगे चले वो जब रूख पै बैठन लगे तो अच्छी तरां देख लये, कौनऊं खतरा तो नैयां। और जो कऊं कछू खतरा दिखाय तो सबखो हुसयार कर देवे।"

सुओं को झुंड उड़ चलो। अगुआ सुआ उडत-उड़त जाकें ओई आम के ऊपर बैठ गव। राजासुआ के कहवे को कछू ख्याल नै राखो। बैठतऊं ओखों अंदाज परो—मै तो जाल में फंस गव! ऊने सोची जो हम कछू कैंत हैं तो सब भग जैं हैं और मैं अकेलो फंसो रह जैहों। ईसे जैसी मोरी गत भई ऊंसई सबकी होन दे। वो चिमानो बैठो रव। पाछूं से सब झुंड आके पेड़ पै बैठ गव। राजासुआ सबकी देख-रेख करत पाछूं आ रव हतो। वो सोई

मान ली।

जल-कन्या ने अपने पति को खोजने की बात सोची। उसने गाव-गाव में मुनादी करवा दी—जो कोई जितने जीते सुआ पकडकर मेरे पास ले आयगा उसे उतने ही रुपए दिए जायगे। बहेलिया लोग सुआ पकड-पकडकर लाने लगे। जलकन्या सबको रुपए देकर और सुओ को देख-परख कर छुडवा देती। जो सुआ होशियार दीखता, उसे पिंजरे में रख लेती। इस प्रकार नित्य हजारो सुआ आने लगे।

इधर तो यह हो रहा था, उधर सुए का हाल सुनिये। सुआ के शरीर मे घुसकर राजा पेड की डाल पर जा बैठा था। जसोदी ने उसके साथ जो छल किया वह भी उसने देख लिया था। अब राजासुआ मन-ही-मन पछताने लगा—मैं बहुत चूक गया। बात बिगड गई। देखो, अब भगवान आगे क्या करता है। ऐसा सोच वह उडा और उडते-उडते कुछ दूर जाकर उसने देखा कि एक पेड पर हजारो सुए बैठे है। वह उनमे जा मिला। इसकी चतुराई देखकर सब सुओ ने उसे अपना राजा मान लिया। सलाह होने लगी कि चुगने के लिए आज कहा चलना चाहिए? किसी ने ठिकाना बताया—उस गाव के पास एक बहुत बडा आम का पेड है, वह खूब फला है। आज उसीकी अमिया खानी चाहिए। बात सबने मजूर कर ली।

राजासुआ बोला—"ठीक है, वही चलो। परन्तु एक सुआ आगे-आगे चले। जब उस पेड पर बैठने लगे तो उसे अच्छी तरह देख ले। कही कोई खतरा तो नही है। फिर बैठे। यदि कोई खतरा दिखाई दे तो वह सब सुओ को सावधान कर दे।"

सुओ का झुण्ड उड चला। अगुआ सुआ उड़ते-उडते उसी आम के वृक्ष पर जाकर बैठ गया। राजासुआ के कहने का कुछ ख्याल न किया। बैठते ही उसे अन्दाज पड गया कि वह जाल में फँस गया है। उसने सोचा कि अब अगर दूसरे सुओ को सावधान करता हूँ तो वे सब भाग जायगे और मै अकेला फँसा रह जाऊँगा। जैसी मेरी गति हुई, वैसी सबकी क्यो न हो? वह चुपचाप बैठा रहा। पीछे से सारा झुण्ड आकर पेड पर बैठ गया। राजासुआ भी पीछे

आकें पेड़े की टुनग पै जाकें बैठ गव। थोरी देर में सबखों पतो चल गव। हम सब फंस गए हैं। राजासुआ बोलो—"कौन सुआ आगे आव हतो ? ऊने सब खा सचेत काय ने करो ? देखो हम सब जाल में फंस गए। सबकी जान जोखम में है। पै जो तुम सब हमाई कही मानो तो सबके प्रान बच सकते हैं। एक काम करो, तुम सबके सब अपनी अपनी धींचे नैंचेखों लटका के ऐसे रैं जाव मानो मर गए होव। बहेलिया आहे तो मरे जान के हम सबखों जाल में से निकार के धरती पैं डार दैहे। अपन एक हजार एक हैं। जो सुआ पैंलऊ धरतीपैं फेंको जाय वो मन में गिनती करत रहे।" जब गिन्ती पूरी हो जाय तो पैंलो सुआ उड़ जावे। ऊखों देखके सब उड़ जावें। सब सुओं ने बात मान लई। सब घींच लटकाकें रैं गए।

बहेलिया आव तो दूर सें का देखत है कैं आज सुओं से पेडो भरो है। वो आनंद सें फूल गव। सोचन लगो आज तो हजारक रुपैयन को सेजो दिखात है। पै जब लिंगा आव तो सबरी खुसी विला गई। सब सुआ मर गए। सब की धींचे लटक परी हैं। पेड़े पै चढ के देखन लगो और उनखों मरे जान एक-एक खों निकार के धरती पै फेंकवो शुरू कँर दव। पैंलो सुआ गिनती करत गव। सब सुआ मुरदा की नाईं डरैं रहे। एक हजार सुआ निकार के फेंक चुको। ऊने देखो एक सुआ ऊपर टुनग पै बैठो है। ऊपर चढ़न लगो तो ऊके हात को बका सटक के धरती पै गिर गव। पैंले सुआ ने सोचो एक हजार एक धमाके पूरे हो गए। वो फर्र सें उड़ गव। ऊखों उड़त देख सबई उड़ गये। बहेलिया ने जो तमाशो देखो तो ठगो सो रैं गव। सोचन लगो—सुआ बहुत बदमाश निकरे। देखो, मोय, कैसो मूरख बना दव। पै अबै एक सुआ बचो है। सारे खों भूंजकें खैहों। ऊपर चढ़कें राजासुआ खों पकर लव। नैंचें उतरो। कहन लगो—"जो सुआ सबको सरदार जान परत है। एई ने आज हजार रुपैयन पै पानी डारो है। ईखों आगी में भूंज हो।" राजासुआ बोलो—"तुम कायखों ऊनो मन करत हो, जल-कन्या के पास हमें लैं चलो, हम तुम्हें दूने रुपैया दुवा दैहें।" बहेलिया आशा को बांधो जलकन्या के पास पौंचो। ऊने पूंछी—"ई सुआ की का कीमत है ? बहेलिया बोलो—"सुआ

अपनी कीमत आप बता देहे।"

रानी बोली—"कहो तोताराम, तुम्हारी का कीमत है ?"

तोता बोलो—"रानी साब, हमारे मोल को कछू कूत नैयां। हजारों लाखों भी थोरे हैं। पै ई बहेलियाखों आप दो हजार रुपैया दे देव।"

सुआ की चतुराई देखके रानी ने सोची होय न होय जोई हमारो पति हुइये। ऊने झट दो हजार रुपैया बहेलिया खों गिन दये और सुआखों सोने के पिंजरा में धर के सब सुओं के बीच में टांग दव। रानी ईखों प्रानो की जागा राखन लगी।

अब जा किस्सा इतई छोड़ के एक राउत की किस्सा सुनाउत हो। कौनऊं गांव में एक राउत हते। उनके लरका को व्याव हतो। बरात जा रई ती। दूला म्याने में बैठो हतो। बरात चली जा रई हती। चलत-चलत गैल में एक नदिया मिली। दूला खों निस्तार खों जाने हतो। ऊने म्यानो रुकवा लव और लोटा लैकें मैदान खों चलो गव। ऊ नदिया की ढ़ी पै एक पीपर हतो। ऊमें एक प्रेत रात हतो। प्रेत ने दूला खों मैदान में जात देखो तो वो दूला को रूप बनाके म्याने में आन बैठो। कहारों से बोलो—"म्यानो लै चलो।"

कहार म्यानो उठाके चलन लगे। इतने में दूला हात मौ धोके आव तो चिल्यानो—अरे म्यानो कहां लंय जात हो। हमें तो बैठ जान देव।"

वो दौर कें म्याने के पास पोचों। देखत का है हमारेई रूप-रंग को एक दूसरो दूला म्याने में बैठो है। ऊने हल्ला मचाओ। दूला को बाप और बराती सबै जुट आये। एक रूप-रंग के दो दूला देखकें सब हैरत में पर गए। कोऊ कछू निश्चो नै कर सको कौन असली दूला आय। आखर हार के सब जने उन खों राजा के लिंगा ले गए। सब हाल सुनाव। दोई दूल्हों को एक सूरत के देखके राजा सोई कछू निर्णय नै कर सको। वे निराश होके लौटने लगे।

गंगाराम रानी सें कहन लगो—"सुनो रानी साब, राजा खों प्रजा के झगड़े सुरझाव चाइये। जो राजा झगड़ा नईं सुरझा सके वो काय को राजा ?

इसको भूनकर न खाऊँ तो मेरा नाम नही ।" राजासुआ बोला—"तुम अपना मन क्यो गिराते हो ? मुझे जलकन्या के पास ले चलो, मै तुम्हे दूना रुपया दिला दूगा ।" बहेलिया की आशा वँधी, वह उसे जलकन्या के पास ले गया। अच्छा सुआ देखकर जलकन्या ने उसकी कीमत पूछी। बहेलिया बोला, "रानीजी, सुआ अपनी कीमत आप वतला देगा ।" रानी ने तोते से पूछा, "कहो तोताराम, तुम्हारी क्या कीमत है ?" तोता बोला, "रानी साहिबा, मेरी कीमत का कोई अन्दाज नही है। लाखो रुपए भी थोडे है। परन्तु आप इस बहेलिया को दो हज़ार रुपया दे दीजिए।" सुआ की चतुराई देखकर रानी ने बहेलिया को दो हजार रुपये दे दिये। सुआ को सोने के पिजरे में रखकर सब सुओ के बीच मे टाग दिया। रानी इसे प्राणो की तरह रखने लगी।

इधर यह हुआ, उधर एक रावत का किस्सा सुनिये। किसी गाव मे एक रावत था। उसके लडके का ब्याह था। बरात जा रही थी। दूल्हा म्याने मे बैठा था। बरात चली जा रही थी। चलते-चलते रास्ते मे एक नदी मिली। दूल्हा को निबटने के लिए जाना था। उसने म्यानाँ रुकवा लिया और लोटा लेकर मैदान को चला गया। उस नदी के किनारे एक पीपल का पेड था। उस पेड पर एक प्रेत रहता था। उसने दूल्हा को मैदान मे जाते देखा तो वह दूल्हा का रूप बनाकर म्याने मे जा बैठा। कहारो से कहा,—"म्याना ले चलो।" कहार चलने लगे। इतने मे दूल्हा हाथ-मुँह धोकर आया तो देखता क्या है कि म्याना जा रहा है। उसने कहारो को पुकारा, "मुझे छोडकर म्याना कहाँ लिये जा रहे हो ?" म्याना रुक गया। दूल्हा दौडकर उसके पास पहुँचा तो देखता क्या है कि ठीक उसी के रग-रूप का एक दूसरा दूल्हा म्याने मे बैठा है। उसने हल्ला मचाया। बराती और दूल्हा का बाप, सब जुड आये। एक ही तरह के दो दूल्हे देखकर सब हैरत मे पड गए। असली दूल्हा कौन है, कुछ निश्चय न कर सके। आखिर सब लोग उनको लेकर राजा के पास पहुँचे। एक सूरत के दोनो दूल्हे देख राजा भी कुछ निश्चय न कर सका। दोनो अपने को रावत का लडका बतलाते थे। वे निराश होकर लौटने लगे। यह देखकर तोताराम रानी से बोला, "सुनो रानी साहिबा, राजा को रैयत के झगडे

ई वदनामी से तो मरबो कबूल । तुमाई रजा होय तो मैं ई झगड़ा खों सुरझा दऊं ?"

रानी बोली—"नेकी उर पूंछ-पूंछ । ईसे बड़कें बात का है ? तुम झगड़ा सुरझा दै हो तो राज की पत तो रै जैहे ।"

फरयादी फिर बुलाये गए । राजासुआ को पिंजरा बाहर कचैरी में टांगो गव । सुआ ने दोई दूलो खो बुलाके पैलऊं अच्छी तरां देखो फिर कान लगो— "सुनो भैया हो, मैं इन्साफ करत हों । कान खोल के अच्छी तरां सुन लियो । तुम दोई में से जे कोऊ करवा की सात टोंटो मे से निकर जैहे बोई राउत को लरका आय । जो निकर सकत होय वो आगे आवे ।"

प्रेत खुशी होकें झट सुआ के पिंजरा के लिंगा पौंच गव । कहन लगो— "सात तो सात, मैं सत्ताईस टोंटों में से निकर सकत हो । हुक्म बगसो जाय ।"

राजासुआ बोलो—"ठीक है, मालूम परत है तुमईं राउत के लरका आव । एक काम करो । तुम कुमार के घरै जाकें एक सात टोंटी को करवा ले आओ ।"

प्रेत करवा लेनें चलो गव । इतै सुआ ने राउतखो बुलाके कही—"सुनो राउत, जो प्रेत आय जो करवा लेवे गव है । जब वो करवा लैके आवे और टोंटो में से निकरन लगे तब तुम हर टोंटी मे गोबर भरत जैयो । सातवीं टोंटी से जब वो करवा में घुसे तो फुरती से ऊमें सोई गोबर भर दियो । बच्चा-राम करवा में कैद हो जैहैं ।"

प्रेत करवा लैके आ गव । सुआ बोलो—"अब तुम एक-एक टोंटी मे से निकरो । प्रेत पैली टोटों में से घुसो और दूसरी में से निकर आव । राउत ने पैली टोटी गोबर लगा के बंद कर दई । ई तरां छै टोटिन में से घुस कें जब वो सातईं में घुसो तो राउत ने ऊमें सोई झट गोबर भर दव । सब टोटी बंद हो गई । कऊं से निकरबे खों गैल नै रई । प्रेत करवा में कैद हो गव ।

सुआ बोलो—"राउतजी, तुमारो लरका जो तुमाये सामने ठाड़ो है । ईखां ले जाव और अब खुशी सें ब्याव करो । जो करवा सोई लेत जाव ।

सुलझाना चाहिए। जो राजा झगडे न सुलझा सके, वह काहे का राजा है ? इस बदनामी से तो मर जाना अच्छा है। तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं इस झगडे को सुलझा दूं।" रानी बोली, "नेकी और पूछ-पूछ। इससे अच्छी और क्या बात होगी। तुम झगडा सुलझा दो, राजा की इज्जत रह जायगी।"

फरियादी फिर बुलाये गए। राजा-सुआ का पिजरा कचहरी मे टागा गया। राजासुआ ने दोनो दूल्हो को बुलाकर पहले अच्छी तरह उन्हे देखा, फिर कहा, "सुनो भैया, मैं इन्साफ करता हूँ। तुम कान खोलकर अच्छी तरह सुनना। तुम दोनो मे से जो करवा की सात टोटो मे से निकल जायगा, वही रावत का लडका है। जो निकल सकता हो, वह आगे आ जावे।"

प्रेत प्रसन्न होकर झट पिजरा के पास पहुँच गया। कहने लगा, "सात तो सात, मै सत्ताइस टोटो मे से निकल सकता हूँ। आज्ञा दी जाय।"

सुआ बोला, "ठीक, मालूम होता है कि तुम्ही रावत के लडके हो। एक काम करो,तुम कुम्हार के घर जाकर सात टोटी का एक करवा ले आओ।" प्रेत करवा लेने चला गया। इधर सुआ ने रावत को बुलाकर कहा, "सुनो रावत, यह प्रेत है, जो करवा लेने गया है। जब वह करवा लेकर आवे और टोटो मे से निकलने लगे, तब तुम हर टोटी मे गोबर भरते जाना। सातवी टोटी से जब वह करवा मे घुसे तो तुम उसमे भी गोबर भर देना। बच्चेराम करवा मे कैद हो जायगे।"

प्रेत करवा लेकर आ गया। सुआ बोला, "अब तुम एक-एक टोटी मे से करवा मे घुसो।" प्रेत पहली टोटी मे से घुसा और दूसरी मे से निकल आया। रावत ने पहली टोटी गोबर लगाकर बन्द कर दी। इस प्रकार वह छह टोटियो मे से निकलकर जब सातवी मे घुसा तो रावत ने उसमे भी गोबर भर दिया। सब टोटी बन्द हो गई। कही से निकलने का रास्ता न रहा। प्रेत करवा मे कैद हो गया।

सुआ बोला, "रावतजी, तुम्हारा लडका तुम्हारे सामने खडा है। अब इसको ले जाओ और खुशी से विवाह करो। यह करवा भी लेते जाओ। इसे बाहर गॉव घूरे मे गहरा गाडते जाना।" रावत और बराती

ईमां प्रेत पिड़ो है। ईखा बाहर गाव गूडा में गाड़त जैयो ।" राउत और बराती राजासुआ की जै जैकार बोलत चले गए। सुआ की चतुरई देखके रानीखो पूरो भरोसो हो गव कै जेई हमारे पति आय। रानी मौका की तलाश में रहन लगी।

रानी ने कुल्ल सुआ पाल राखे हते। अपने भोजन करवे के पैलऊं वा आंगन में भौत सो भात धर के सब सुओ खों छोड देत ती। सुआ भात के सीत बीन-बीन के खात रैत ते। राजासुआ को पिंजरा अपनी थारी के लिंगा धर के पैलऊं उए दूध-भात खुवाउत हती पाछें अपन खात ती। नित्त ऐसई होत तो। एक दिना की बात है कै सब पखेरू आगन में चुन रये हते और रानी राजासुआ खो दूध-भात खुवा रई हती। इतने में कऊं से एक बिलैया आ गई। और आंगन में एक सुआ को गरो धर दबाओ। सुआ टेंटें कर के मर गव। राजा साब उतई बैठे पान मसाले खा रयते। सुआ खों मरो देख के रानी बोली—"राजा साब, मुरदा सामने डरो है। मैं कैसे भोजन करूं? सुआ को जिंदा कर देव।" राजा बोले—"रानी, जो तो मोरे बाय हात को खेल है। अबईं जिवांय देत हो।" ऐसी कहके ऊने राजा की देह से प्रान निकार के सुआ की देह में डार दये। सुआ जी उठो। मौका देखो तो राजासुआ ने अपने प्रान सुआ की देह से निकार के राजा की देह में डार दये। अब का हतो, राजा फिर राजा हो गए और जसोदी सुआ। राजा ने झट ऊ सुआ खो पकर कें पिंजरा में बन्द कर दव।

आज रानी की खुसी को ठिकानो नै हतो। खोओ पति उसे आज फिर मिल गव। खूब आनन्द-मंगल मनाओ गव। राजा ने आज जसोदी की बद-दयाती सब लोगों खो सुनाई। लोग कहन लगे—"ऐसे पाजी खों तो तुरतई मार डारों चाइये। जसोदी सुआ की घीच मरोर के फेंक दई गई। राजा और जल-कन्या दोई आनन्द से रैन लगे। जैसे बिछरे जो मिले ऊंसे सब मिलें। किसा भी सो पूरी हो गई। सांची बात है। स्याने कह गये हैं :—

करै बुराई सुख चहै कैसे पावे कोय।
बोवे बीज बबूर को आम कहा ते होय॥

तोताराम की जयजयकार बोलते हुए चले गए। राजासुआ की बुद्धि देखकर रानी को पूरा भरोसा हो गया कि यही मेरे पति है। रानी अवसर की ताक मे रहने लगी।

रानी ने बहुतेरे सुए पाल रखे थे। अपने भोजन के पहले वह आगन मे भात का ढेर लगाकर सब सुओ को पिजरो से छोड देती थी। सुए भात के दाने बीन-बीन खाते थे। राजासुआ का पिंजरा वह अपनी थाली के पास रखती थी। पहले उसे दूध-भात खिला देती थी, बाद मे आप खाती थी। यह उसका नित्य का नियम था।

एक दिन की बात कि सब पक्षी आगन मे किलोल करते हुए चुग रहे थे। इतने मे कहीसे एक बिल्ली आ गई और उसने एक सुआ को धर-पकडा। उसकी गर्दन दबा दी। सुआ 'टे-टे-टे' करके मर गया। राजा वही पास बैठे पान-मसाले खा रहे थे। सुआ को मरा हुआ देखकर रानी बोली, "महाराज, मुरदा सामने पडा है। मै भोजन कैसे करूँ? सुआ को जिन्दा कर दो।" राजा बोला, "रानी, यह तो मेरे बाए हाथ का खेल है। अभी जिलाये देता हूँ।" ऐसा कह उसने राजा की देह से अपने प्राण निकालकर सुआ की देह मे डाल दिये। सुआ जी उठा। मौका देखा तो राजासुआ ने भी अपने प्राण सुआ की देह से निकाल कर राजा की देह मे डाल दिये। अब क्या था, राजा फिर राजा हो गया और जसोदी सुआ बन गया। राजा ने झपटकर सुए को पकड लिया और उसे एक पिंजरे मे बन्द कर दिया।

रानी की खुशी का आज ठिकाना न था। खोया हुआ पति उसे फिर मिल गया। खूब आनन्द-मगल मनाया गया। राजा ने आज जसोदी की बेईमानी सब लोगो को कह सुनाई। सब कहने लगे कि ऐसे पापी को तो तुरन्त मार डालना चाहिए। सुए की गर्दन मरोड दी गई। जसोदी मर गया। जलकन्या और राजा दोनो आनन्द से रहने लगे। जैसे बिछुडे वे मिले, वैसे ही सब मिले। किस्सा पूरा हो गया। सच है, सयाने कह गए है :—

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
बोवै बीज बँबूल को, आम कहाँ से होय॥

जाटु और सुनारु   : २ :

ब्रजभाषा

एक सुनार औरु जाट में यारई ई। एक पोत जाटु सुनार के न्या आयौ। सुनार नें बड़ी खातिरदारी करी। संजा कूं जब रोटी जेंबे कौ बखतु आयौ तौ सुनार ने एक सोने की थारी में खाइबे कूं परोस दयौ। जाट की नजरि में बु थारी चढ़ गई। वाने अपने मन में सोची, जि थारी तौ कैसेऊ ने कैसेऊ लैनी चहयें। जि बात वा सुनार नें ऊ समझि लई कै जा जाट की नजरि जा थारी पै जमि रई ऐ। सो जि जाइ राति कूं चुरावैगौ।

सुनार ने का चालाकी करी कै वा थारी में म्हौं तक पानी भर्यौ औरु बु एक छींके पै धरि दई। वा छींके के नीचे वाने अपनी खाट बिछाइ लई औरु वाई पै सोइ गयौ। वाने अपने मन में सोची कि जब जाइ उतारैगो तौ पानी जरूर फैलैगौ औरु मेरी आंखि खुलि जायगी।

राति कूं जाटु उठ्यौ, थारी धीरें सूं देखी, जाटु समझि गयौ कि जामे तौ पानी भरि रह्यौ ऐ। वानें का कामु कर्यौ कि चूल्हे के जौरें जाइकें चलनी में राख छार्नी औरु छनी भई राख वानें वा थारी में धीरें-धीरें डारिबो सुरू कर्यौ। जासूं भयो जि कि थारी के पानी कू राख सोखि गई। फिर वा जाट ने थारी उतारि लई। उतारिकें गाम बाहिर एकु गढ़ा ओ, वा में घोंटू-घोंटू घुसि के वा थारी ऐ गाड़ि आयो और फिरि वाई सुनार के न्या आइके सोइ गयौ।

सबेरें सुनारु सोबत सूं जग्यौ। वाइ थारी न दीखी, परि जाटु सोबतु पायौ। वाने सोची—जि जाटु थारी इं तौ कऊं धरि आयौ ऐ औरु फिर न्यां आइकें सोइ गयौ ऐ। करम की बात वा जाट कौ एकु पाऊ

जाट और सुनार : २ :

हिन्दी रूपान्तर

एक जाट और सुनार मे बडी गहरी मित्रता थी। एक वार जाट सुनार के यहा आया। सुनार ने अपने मित्र की बडी आवभगत की। शाम को जब रोटी खाने का समय आया तो सुनार ने एक सोने की थाली मे जाट के सामने खाने को परोसा। जाट की दृष्टि उस थाली पर पडी। उसने अपने मन मे सोचा कि यह थाली तो बहुत अच्छी है। किसी-न-किसी प्रकार इसे प्राप्त करना चाहिए। सुनार भी जाट के मन्तव्य को समझ गया कि रात को यह जाट इस थाली की चोरी करेगा।

सुनार ने भी बडी चतुराई से काम लिया। उस थाली मे उसने पानी भरा और एक छीके पर उसको रख दिया। इस छीके के नीचे ही उसने अपनी चारपाई बिछाई। उसी चारपाई पर वह रात को सोया। सुनार ने अपने मन मे सोचा कि यदि यह जाट इस थाली को उतारेगा तो पानी गिरने से मेरी नीद खुल जायगी।

रात को जाट उठा और धीरे से थाली को छूकर देखा तो मालूम हुआ कि इसमे पानी भरा है। जाट ने चूल्हे के पास जाकर राख छानी और इस थाली मे थोडी-थोडी डालता गया। अन्त मे उस राख ने पानी को सोख लिया। जाट ने थाली को इस प्रकार उतारा कि सुनार को पता भी न चला।

प्रात काल सुनार जागा तो देखा कि थाली नही है। जाट उस थाली को उतारकर रात को ही गाव से बाहर एक पानी के गढे मे गाड आया था। उसके पैर पर पानी का निशान बन गया था। होनहार की बात कि जाट का

सौरि में ते बाहिर निकरि रह्यौ ओ। सुनार ने वा पै पानी कौ गंडा बन्यौ देख्यौ। सोई बु समझि गयौ कि काऊ गड्ढा में थारी कूं जि गाड़ि आयौ ऐ। वाने डोरा त बु गंडा नापि लीयौ। और गाम बाहिर वाई गड्ढा में घौंटू-घौंटू घुसि के थारी कूं निकारि लायौ।

जाट ने सुनार ते कही क भैया अब तौ हम जांगे। सुनार ने कही—"यार, आजु तौ और रहि, कल्लि चल्यौ जइयौ।" जाट ने कही—"अच्छा भाई, तू कहतु ऐ तौ कल्लिई चले जागे।"

राति कूं सुनार ने वाई थारी में फिरि खाइबे कूं परोस्यौ। जाट ने कही—"यार तेरे ञ्या कितनी सौने की थारी ऐं। एक कूं तौ हम लै गए।" सुनार ने कही कि यार, जि बुई थारी ऐ। और वानें सबु अहवाल कहि दीयौ। जाट ने कई—यार हम तौ अपने मन में हुस्यार बन्त ई ऐ, परि तैंने हमारेऊ कान काटि लए। अब हम तुम दोऊ कऊँ बंजु-व्यापारु करिवे चलें। बड़ौ फाइदा होइगौ। दोऊ एक सूं एक जादा हुस्यार जौ ठैरे। जा वात पै सुनारुऊ तैयार है गयौ, और दोऊ कहूं, रुपया कमाइबे कूं निकरि परे।

आगे-आगे उन्हें एक ल्हास मिली। वा ल्हास के संग भौतु से आदिमी ए। सुनार ने जाटसूं कही कि जि तौ कोई बड़ौ भागिमानु आदिमी मर्‍यौ ऐ। जाट ने कही—जि बात तौ तेरी ठीक ऐ। ला ञ्याईं धंदो सुरु करिदें। सुनार ने कही—भैया, धंदौ है तौ सकतु ऐ। दोऊन ने मतौ कर्‍यौ और ल्हास ते पहलें ईं मरघटन पै पहुचि गए। मां चिता जरिबे के ठौर पै उननें झटपट एक गुफा खोदी और वा में सुनार कौ बैठारि दयौ।

सेठि की ल्हास मा फूंकि पजारि के लोग अपने घर कूं लौटे। सेठ को पतौ लगाइ-लगूह कें जाट वा सेठ के घर पौंहच्यौ और सेठि की पूछी। वा सेठि के छोरन्नें बाते कही—भाई, हमारे पिताजी तौ आजु ई मरि गए, अभी हम उनाकूं फूंकि पजारि के आइ रहे ऐं।

सोई बु जाटु रोबै सो रोबै। सेठि के छोरन ने कही— बात का

एक पैर सोते-सोते चादर से बाहर निकल गया । सुनार ने उसपर पानी का निशान बना हुआ देखा । वह समझ गया कि वह पानी के गढे मे थाली को गाड आया है । उसने सूत के एक धागे से वह पानी का निशान नाप लिया और उसी गहराई तक गढे मे घुसकर पानी में थाली को टटोला तो उसे थाली मिल गई ।

सवेरे जाट भी जगा । उसने सुनार से कहा कि भाई, अब मै जा रहा हूँ । सुनार ने कहा, "भाई, कम-से-कम आज तो और रहो । कल चले जाना । ऐसी जल्दी ही क्या है ?"

जाट ने कहा, "अच्छा कल ही चला जाऊँगा ।"

शाम को सुनार ने उसी थाली मे जाट को फिर खाना खिलाया । जाट वडे अचरज मे रह गया । जाट ने सुनार से पूछा, "भाई, एक वात तो वताओ कि तुम्हारे यहा कितनी सोने की थालिया है ? एक थाली तो रात को मै चुरा ले गया हूँ ।"

सुनार ने कहा, "यह वही थाली है । मै उस गढे मे से निकालकर ले आया हूँ, जिसमे रात को तुम गाड आए थे ।"

इसपर जाट ने कहा, "मै तो अपने मन मे काविल बनता ही हूँ, पर तुम मेरे भी गुरु निकले । इसलिए चलो, दोनो कही व्यापार करने चले । दोनो की कावलियत का कुछ-न-कुछ लाभ अवश्य उठाया जाना चाहिए ।" इस प्रकार सोचकर दोनो रुपए कमाने घर से निकल पडे ।

चलते-चलते वे किसी शहर मे जा पहुँचे । आगे चलकर उन्हे एक लाश आती हुई दिखाई दी । उसके साथ वहुत से आदमी आ रहे थे । जाट और सुनार ने अपने मन मे सोचा कि यह तो कोई वडा भारी सेठ मरा है । यही हमारा धधा हो सकता है ।

मरघट पर जाकर जहा उसकी लाश जली, वही उन दोनो ने एक सुरग वनाई । उस सुरग मे सुनार को विठा दिया । जाट इन लोगो के पीछे-पीछे

ऐ। तब वा जाट ने कही—तुमारे वाप पै मेरे दस हजार रुप्या जमा ए। अब मैं अपनी अमानत कू कैसे पाऊं? सेठि के छोरान्नें कही—बहीखाते ऐ देखत एँ। जो जमा हुंगे तौ हम तेरौ पइसा-पइसा देनदार एँ। उनने बही देखी, परि कहूं जमा न निकरे। जाट ने कही कै जमा न करे हुंगे, परि रुप्या तौ मेर जमा हतए। औरु जो तुम साचु न मानौ तौ मरघटन पै चलौ। जो मेरो रुप्या सच्चौ ए तौ तुमारौ बापु अवाज देगौ।

सेठि के छोरा औरु बु जाटु मरघटान पै आए। मां आइके जाट ने पूछी—कौन से ठौर पै जरायौओ। छोरान्नें बताई दई।

जाट ने बड़ी जोर से अवाज लगाई—भाई सेठि, बे दस हजार रुप्या जो मैंने तोपै जमा करे काए वे वही में नाइ मिले। सो, जो मैंने रुप्या जमा करे होंइ तौ तू अपने बेटन ते कहि दै और जो मेरे रुपया न होंइ तौ नाहीं करि दै। मांते अवाज आई—बेटाओ, जाके रुप्या मो पै जमाए, मैंने बु वही में नाए चढाए। जाको कौड़ी-ऊ-कौड़ी दै दीजों, नईं तौ मेरी आंसी ऊजरी न होइगी और मैं नरक में चल्यो जागो।

अब वाके छोरन्नें जाट ते कही—चलि भाई घर कूं औरु अपने दसऊ हजार सम्हारि लैउ। जाट कूं वे अपने घर लै गए और सबु रुप्या वाइ सम्हारि दीए।

इतमें जाट नें जि सोची कि मरदूं सुनार ऐ और सबु रुप्यान्नें लैके अपने घर कूं चलूं। उतमें सुनार ने ऊ अपने मन में सोची कि अब जि जाटु रुप्यान्नें लैके इतमें पांउ ऊ न मारैगो, सो चलौ, कैसे ऊ रुप्यान्नें वा पै सूं लेलऊं।

सुनार ने दस-बारह रुपया की एक जूता जोडी मोल लई औरु वाई रस्ता के किनारे पौंच्यौ जो वा जाट के गाम कू जातुओ। वा रास्ता पै जाइकें वानें एकु जूता डारि दीयो। वांते कोई सौ दो सौ गज आगें दूसरौ ऊ जूता डारि दीयो औरु खुदि एक खेत में छिपि के बैठि गयौ। अब बु जाटु वा रुप्यान की गठरिया ऐ कंधा पै धरिकें आयौ। वातें एकु जूता पर्यौ

चलकर सेठ के घर आ गया। वहा आकर उसने पूछा कि सेठजी कहा है ?

सेठ के लडको ने कहा, "वे तो आज ही मर गए है। अभी उनको जलाकर आ रहे है।"

अब तो जाट बडे जोरो से रोने लगा। सेठ के लडको ने उसके रोने का कारण पूछा। जाट ने कहा, "सेठ पर मेरे दस हजार रुपए जमा थे। अब मुझे कैसे मिलेगे ?"

सेठ के लडको ने कहा, "यदि वहीखाते मे रुपए जमा होगे तो तुम्हारे रुपए हम अवश्य देगे।"

वहीखाता देखा गया, पर कही जाट के रुपयो की बात नही मिली। तब जाट ने कहा, "हो सकता है कि सेठ ने मेरे रुपए वही मे न लिखे हो, पर मेरे तो रुपए जमा थे। अब तुम सब लोग मरघट मे चलो। यदि मेरे रुपये सच्चे है तो सेठ स्वय ही बोल देगा।"

मरघट पर जाकर जाट ने जोर से आवाज दी—"अरे भाई सेठजी, मैंने जो दस हजार रुपये तुम्हारे पास जमा किये थे, वे वहीखाते मे नही मिले है। यदि मेरे रुपये तुमपर हो तो 'हा' कर दो, नही तो 'ना' कर दो।

वहा से सुनार ने आवाज लगाई—"इसके रुपये मेरे पास जमा थे। इसका एक-एक पैसा चुका देना, नही तो मुझे नरक मे जाना पडेगा।" घर आकर सेठ के लडको ने जाट को दस हजार रुपया दे दिया।

जाट ने सोचा कि सुनार को मरने दो। सब रुपये अपने ही घर ले चलू। इधर सुनार ने भी सोचा—वह रुपया लेकर मेरे पास नही आयगा। अब तो कोई और ही उपाय सोचना चाहिए।

सुनार ने एक दस-बारह रुपये का बहुत ही अच्छा कीमती जूता खरीदा। जूतो को लेकर वह उसी रास्ते पर गया जो जाट के गाव को जाता था। सुनार ने रास्ते मे एक स्थान पर उस जोडी मे से केवल एक जूता गिरा दिया। दूसरा जूता आगे चलकर कोई सौ-दो सौ गज की दूरी पर गिरा दिया और स्वय छिपकर एक जगह बैठ गया।

देख्यौ। जाट ने मन में कही—भाई जूता, जूताई ऐ। परि विना जोड़ी के तौ वेकार ई ऐ। मैंने तौ अपने जनम में कबहू ऐसौ जूता नाइ देख्यौ। परि अकेलो जूता ऐ लैके का करूंगो। झट्ट वु आगें बढि गयौ। आगें जाइके दूसरौ ऊ जूता पर्‌यौ पायौ। वानें अपने मन में कही—जि तौ वाई जोड़ी कौ जूता ऐ। ला वाऊ कूं लै आऊं। परि जा रुप्यन की गठरिया ऐं ज्याईं छोड़ि चलूं। को वां तक जाइ लादै। माल लैके आव तूं, थोरी सी दूरि तौ हतुई ऐ। सो जाटु वा रुपैयन की गठरिया ऐ वइँ छोड़िके वा जूता ऐ लैवे चल्यौ।

इतमें झट्ट वु सुनारु वा झूआ के पीछें ते निकर्‌यौ और बु गठरिया उठाइ के कंधा पै धरी। लै वा गठरिया कू, सुनार दाब पाइकें दूसरे रस्ता सूं अपने घर आयौ और अपनी सुनरिया सूं कही क ला एक गोरि, जिन रुपैयन्नै वाई गोरि में गाड़ि दुंगो। वाने सब रुपैया वा गोरि में धरिके पढ़ैंनी के नीचे गाड़ि दए औरु वाने अपनी सुनरिया तें कही क मैं तौ अधौआ कुआ में जाइके रहुंगो, बु जाट आबैगौ सो तू वाइ काऊ तरह ते पतौ मति लगन दैयो। उल्टी वाई ते पूछियौ कि मेरे सुनार ऐ कहा छोड़ि आए। सुनरिया ने कही—अच्छा।

इतने जब जाटु वा पहले जूता कू लैकें लौट्यौ तो वां गठरिया ई न! वु समझि गयौ कि रुपैयन की गठिरिया कूं सुनारा कौ लै गयौ। औरु कौन में इतनी हुस्यारी होइगी।

जाटु सूधौई सुनार के घर गयौ। सुनरिया ने जाट कूं देखत खन वा जाट ते कही—मेरे सुनार कूं कहां छोड़ि आए? बु तौ तुमारे ई संग गयौ ओ। जाट ने कही—अबई नाइ आयौ का? सुनरिया ने कही—नांइ तौ।

जाटु समझि तौ गयौ कि सुनारु आइ गयौ ऐ, रुप्यान्नें लैके जाइगौ कहा? परि कहूं दुबकि रह्यौ ऐ। परि कब तक दुबक्यौ रहैगौ। मैं ऊ ज्याते नाऊं टरतु।

रोजु सुनरिया पहलें जाट ऐ रोटी खवाइये, फिर पानी भरिवे जाइ औरु सुनार ऐ रोटी दै आवै। जा तरह तें कैऊ दिना वीत गए। जाट ने

जाट रुपयो की गठरी को लेकर आया। उसने पहला पडा हुआ जूता देखा। जूता उसको बहुत पसद आया। पर एक जूते का वह क्या करता ? छोडकर आगे चला गया। आगे जाकर उसे दूसरा जूता भी पड़ा मिला।

जाट ने सोचा, यह जूता भी उसी जूते के साथ का है। उसे भी ले आना चाहिए। यह सोच उसने रुपयो की गठरी तो वही रख दी और उस पहले जूते को लेने चला।

इधर वह जूता लेने गया और उधर रुपयो की गठरी को उठाकर सुनार अपने घर आ गया। सुनार ने अपनी स्त्री को सारी बात कह सुनाई और उसे समझा दिया कि यदि वह जाट आये तो उसे मेरे बारे मे कुछ न बतलाना। मै एक अँधेरे कुए मे जाकर छिप जाता हूँ। तुम वही रोटी पहुँचाती रहना।

यह कहकर उसने वे रुपये एक गोल मे रखकर पन्हेडी के नीचे गाड दिए और वह एक बिना पानी के कुएँ मे जाकर छिप गया।

वह जाट इधर उस पहले जूते को लेकर लौटा तो वहा रुपयो की गठरी नही थी। उसे यह समझते देर न लगी कि यह सब सुनार की करतूत है। जाट सीधा सुनार के घर पहुँचा। सुनार की स्त्री ने उससे कहा, "मेरे पति को कहा छोड आए हो, वे तो तुम्हारे साथ ही गए थे।"

जाट ने उत्तर दिया, "क्या वह अभी घर नही आया ? वह तो मुझसे पहले ही चल दिया था।"

सुनार की स्त्री ने उत्तर दिया, "अभी कहा आये है !"

जाट समझ तो गया कि सुनार की स्त्री झूठ बोल रही है। वह अवश्य आ गया है, किन्तु उसके पास अब कोई चारा नही था। पर उसने यह निश्चय कर लिया कि जबतक कोई पता नही लगेगा, वह जायगा नही।

सुनार की स्त्री रोज खाना बनाती, पहले जाट को खिला देती, फिर पानी भरने जाती। सुनार के लिए खाना ले जाती। उस अधेरे कुएँ मे खाना डाल-

सोची—सुनरिया घर ऐ छोड़िके कहूं जाति नांएं, बस्सि पानी भरवेई जाति ऐ। स्याइति जबई सुनरा ऐ रोटी-फोटी दै आवति होइ।

एक दिना जाटु चुप्पु-ई-चापु सुनरिया के पीछें-पीछें चलि दयौ। सुनरिया ने कुआ पै तौ बासन धरे। रोटीन की पोटली निकारी और वाई अधौआ कुआ पै जाइके अवाज लगाई—लेऊ रोटी। सुनार ने कही—फेंकि दै।

जाट ने जि सबरौ करतबु देख्यौ और चुप्प-ई-चापु लौटि आयौ। दूसरे दिना फाऊ और पै रोटी करवाइके एक पोटरी में बांधी और सुनरिया तें पहलें ई जनाने कपड़ा पहरि ओढि के वाई अधौआ के जौरें पोंहच्यौ और अवाज लगाई—लेऊ रोटी। सुनार ने कही—आजु बड़ी जल्दी लै आई। सुनरिया नें कही—हा आजु जल्दी ई कामु-धंदौ सिमटि गयौ, रोटी जाइते जल्दी हुं गई। परि बु जाटु तौ अबई टरतु नाएं। रुप्या-पैसा की बड़ी तंगी हु रई ऐ। का करूं? सुनार ने कही कि बु गोरि जो पढैनी के नीचे गाड़ि दई ऐ, वाई में से खर्चु-पानी कूं रुपया निकारि लयौ करि।

इतनी सुनि के झट्ट जाटु समझि गयौ कि रुप्या पढ़ैनी के नीचें ई गडि रहे एं। घर आइ के चुप्पु-चापु जाटु बैठि गयौ। सुनरिया ने रोटी करी। जाट ने रोटी-फोटी तौ खाई न, बु गोरि उखारी और वाकूं लैकें चलतौ भयौ।

इतने में सुनरिया ने अधौआ के जौरें जाइके अवाज दई—लेऊ रोटी। सुनार ने कही—अभाल तौ दै गई ऐ, फिरि लै आई। सुनरिया ने कही—मैं तौ नांइ आई। सोई सुनार ने कही—अरी निकारि मोइ। जाटु ई तेरे से कपड़ा पहरिकें आयौ ओ। बु सबु रुपैयन्नें लै गयौ। घर आइकें देखें तौ पढ़ैनी के नीचे एकऊ रुप्या नाओ।

दोऊ एक ते एक जादा हुस्यार निकरे, परि जाटु अखीर में रुपैयन्नें लैई गयौ।

कर दूसरे कुएँ से पानी भरकर आ जाती। यह उसका नित्य का काम था। इस प्रकार कई दिन बीत गए।

एक दिन जाट चुपचाप उस सुनार की स्त्री के पीछे-पीछे चला गया और उसने देखा कि कुएँ के पास जाकर उसने आवाज दी—"लो रोटी।" जाट सारी बात समझ गया।

दूसरे दिन जाट उस सुनार की स्त्री-जैसे कपडे पहनकर, रोटियो की पोटली बाधकर उस कुएँ पर पहुँच गया और उसी प्रकार आवाज बनाकर कहा, "लो रोटी।" फिर उसने कहा, "वह जाट तो टलता नही है, मेरे पास कुछ रुपया-पैसा रहा नही है। क्या करूँ?" सुनार ने भीतर से ही कहा, "पन्हेडी के नीचे जो रुपयो की गोल गडी है, उसीमे से निकाल लिया करो।"

इस प्रकार जाट ने रुपयो का पता लगा लिया। सुनार की स्त्री नित्य की भाति रोटी लेकर गई। आवाज लगाई, "लो रोटी।" सुनार ने कुएँ मे से कहा, "अभी तो दे गई थी, फिर ले आई?" सुनार की स्त्री बोली, "मै कब आई हूँ?" सुनार ने तुरन्त जान लिया कि जाट चालाकी से रुपया ले गया। वह बोला, "अरी, मुझे शीघ्र कुएँ मे से निकाल। जाट ही तेरे सरीखे कपडे पहनकर आया था। वह सब रुपया ले गया होगा।"

घर आकर देखा तो पन्हेडी के नीचे एक भी रुपया न मिला। सुनार की स्त्री जबतक रोटी लेकर अँधेरे कुएँ को गई, तबतक वह सब रुपये निकाल-कर चम्पत हो गया।

वैसे तो सुनार और जाट एक-से-एक बढकर चालाक थे, पर जाट रुपयो को अन्त मे निकाल ही ले गया।

छत्तीसगढ़ी

दुझन मीत रहिन । एक बाम्हन रहसि दूसर भाट । एक दिन भाट हर अपन मीत ला कहिस, "चल मीत हम मन राजा के दरबार में जा बोन । गोपाल राजा खुस हो ही तो हमार मन के भाग खुल जाही ।" बाम्हन हाँसिस अउ ओकर बात ला टारे बर कहिस, "देही तो कपाल, का कर ही गोपाल । भाग में हो ही तो मिल ही । "भाट कहिस,"नाहीं । देही तो गोपाल, का कर ही कपाल । गोपाल राजा बड़ दानी हे । ओहर हम मन ला सिर सोन अउ बड़ धन दे ही ।" दुनो झन ए बात के झगरा करिन, अउ गोपाल राजा के दरबार में जाके अपन-अपन बात ला कहिन । भाट के बात ला सुन के राजा खुस हो गईस । बाम्हन के बात ला सुन के ओहर रिसाईस । ओहर दुनो झन ला दुसर दिन दरबार में हाजिर होय के हुकुम देईस ।

दुनो मीत दुसर दिन दरबार में जाय पहुँचिन । राजा के हुकुम पाके ओकर सिपाही मन बाम्हन ला एक मूँठ चाउर, एक मूठ दार अऊ एक मूठ नून दीन । भाट ला एक सेर चाउर, एक सेर घी और एक मखना दीन । राजा के हुकुम पाके सिपाही मन मखना में एक सेर सोन भर दिये रहिन । दे के राजा कहिस, "अब जाके तुम मन चनाव खाव । खा पी के उठो ज्वार दरबार में हाजिर हो जाहो ।"

दरबार ले चलके ओमन नदी पार गईन—ऊँहा जहाँ रतिहा सूते रहिन मनेच मन भाट गुनत रहिस, "को जानि कावर राजा हर बाम्हन ला तो या देईस हे अऊ मोला मखना दे देईस हे । छोलो, काटो अऊ राँधो एकर साग । कौन करही अनेक झंझट ? अऊ एकर खाए ले मोर कनिहा के पीरा जग जाही तो ।" ऐसन विचार करके भाट हर बाम्हन ला का कहिस, "मीत मखना

हिन्दी रूपान्तर

दो मित्र थे। एक ब्राह्मण था, दूसरा भाट। भाट ने एक दिन अपने मित्र से कहा, "चलो, राजा के दरबार मे चले। यदि गोपाल राजा खुश हो गया तो हमारे भाग्य खुल जायगे।"

ब्राह्मण ने हँसकर उसकी बात टालते हुए कहा, "देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल ? भाग्य मे होगा वही मिलेगा।"

भाट ने कहा, "नही, देगा तो गोपाल, क्या करेगा कपाल ! गोपाल राजा वड़ा दानी है, वह हमे अवश्य वहुत धन देगा।"

दोनो मे इस प्रकार विवाद होता रहा और अन्त मे गोपाल राजा के दरबार मे जाकर दोनो ने अपनी-अपनी वात कही। भाट की बात सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण की बात सुनकर उसे क्रोध आया। उसने दोनो को दूसरे दिन दरबार मे आने की आज्ञा दी।

दोनो मित्र दूसरे दिन दरवार मे पहुँचे। राजा की आज्ञा से उसके सिपाहियो ने ब्राह्मण को एक मुट्ठी चावल, एक मुट्ठी दाल और कुछ नमक दे दिया। भाट को एक सेर चावल, एक सेर घी और एक कद्दू दिया। राजा के आदेश से कद्दू मे सोना भर दिया गया। राजा ने कहा, "अब जाकर वना-खा लो। शाम को फिर दरवार मे हाजिर होना।"

दरवार से चलकर वे नदी किनारे के उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्होने रात बिताई थी। भाट मन-ही-मन सोच रहा था—"न जाने क्यो, राजा ने ब्राह्मण को तो दाल दी, ओर मुझे यह कद्दू दे दिया। इसे छीलो, काटो और फिर वनाओ इसकी तरकारी। कौन करे इतना झझट ? ऊपर से यह भी डर है कि कही इसके खाने से फिर से कमर का पुराना दर्द न उभर आवे।"

खाहूँ तो मोर कनिहा में पीरा हो ही। ऐला लेके तें मोला अपन दार दे दे। बाम्हन ओकर बात मान गईन। अपन-अपन सामान ला ले के ओमन रसोई में जुट गईन। भाट हर अपन दार-चाँउर ला खाके आमा रूख के छैया में सूत गईस। बाम्हन हर जब मखना ला काटिस तब ओला भीतर राजा के भरवाए सोन दिखिस। ओहर मनेच मन गुनिस—मोर भाग में रहिस तो मोर पास आ गईस। गोपाल राजा हर तो एला भाट ला देत रहिस। सोनला एक अँगोछी में बांध के बाम्हन आधा मखना के साग रांधिस अऊ आधा ला अपन पास राखिस। खा-पीके ओहर घड़ुक सूत गईस।

संझाकुन दुनो झन गोपाल राजा के दरबार मां पहुँचिन। बाम्हन बांधे मखना ला अँगोछी में बांध के अपन संग ले गे रहिस। राजा हर बाम्हन ला नी देख के पूछिस—"अब तो मानगे—देही तो गोपाल, का कर ही कपाल?" बाम्हन बांधे मखना ला ओकर सामने धर दीस अऊ अपना मूड़ला नंवा के कहिस—"नहीं महाराज, दे ही तो कपाल, का कर ही गोपाल?" राजा विचार करिस "बाम्हन सांच कहत हे। सोन बाम्हन के भाग में बदे रहिस, भाट के भाग में नि बदे रहिस, तभे तो भाट हर अपन मखना ला बाम्हन ला दे देईस।" ऐसन गुन के राजा कहिस—"तोरेच बात सांच हे। देही तो कपाल, का कर ही गोपाल?" राजा दुनों झन ला दान-भेंट देईस अऊ बिदा कर देईस।

ऐसा सोचकर उसने ब्राह्मण से कहा, "मित्र, कद्दू खाने से मेरी कमर मे दर्द हो जायगा, इसे लेकर तुम अपनी दाल मुझे दे दो।" ब्राह्मण ने उसकी वात मान ली। अपना-अपना सामान लेकर दोनो रसोई मे जुट गए। भाट दाल-चावल खाकर एक आम के पेड के नीचे सो गया। ब्राह्मण ने जव कद्दू काटा तो उसे वह सोना दिखाई दिया, जो राजा ने उसमे भरवा दिया था। उसने मन-ही-मन सोचा, "मेरे भाग्य मे था, मेरे पास आ गया। गोपाल तो इसे भाट को दे देना चाहता था।" उसने सोना एक कपडे मे वाध लिया। कद्दू का आधा भाग वचाकर आधे की तरकारी वना ली। वह भी खा-पीकर सो गया।

संध्या के समय दोनो मित्र फिर गोपाल राजा के दरबार मे पहुँचे। ब्राह्मण ने शेष आधा कद्दू एक कपडे मे लपेटकर अपने पास ही रख लिया था। राजा ने ब्राह्मण की ओर देखकर पूछा, "अव तो मान लिया—देगा तो गोपाल क्या करेगा कपाल ?"

ब्राह्मण ने आधा कद्दू राजा की ओर वढा दिया और नम्रता से सिर झुकाकर कहा, "नही महाराज, देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल ?"

राजा ने सोचा कि ब्राह्मण सच कह रहा है। ब्राह्मण के भाग्य मे सोना था, भाट के नही और इसीलिए भाट ने कद्दू ब्राह्मण को दे दिया। राजा ने कहा, "तुम्हारा कहना ही ठीक है। देगा तो कपाल, क्या करेगा गोपाल ?"

उसने दोनो को भेट मे धन देकर विदा कर दिया।

निमाड़ी

एक अच्छो सो गाव थो। गांव का पासज नद्दी बयति थी। नद्दी का किनारऽ हरा-भरा झाड़ लहरई रह्या था। आजू-बाजू खेती-बाडी थी। भला आदमीन की बस्ती थी। यों तो जहां बस भला आदमी रहेन वहां दुइ चार लुच्चा लफंगा कहा नी रहेता? गाव का इच म मौका की जगह एक बडो जंगी घर कई बरससी खाली खंडेरो पडेल थो। गांव म केतरइ लोग आया, अच्छा—बुरा, गरीब-अमीर नेठू रहण्या[1] न चलता, मुसाफिर पण कोई भी उ घरन फोकट म भी रहण ख तैयार नी होय। गांव वालान को कयणो थो कि ओम भूत रहेज। अन जो कोई वोम रहेणऽ जाज वोखऽ उ खाइ जाज। फिरी असो कुण भयो[2] होयगा जो बलतो घर भाड़ ले।[3] अद तो अर कदि ढोर भी ओम भरइ जाय तो रखवालो उनखऽ दगड़[4] मारी न भाग्रह निकालइ दे, पण उना घर म पायी नी धरऽ[5]।

एक दिन की बात छे कि एक वाण्यो के तरइं बड़ा-बड़ा शहेरन म फिरतो चार पैसा कमइ न उना गाव म आयो। अन कहण लग्यो कि "भाइ न होण अब तो हऊं इनाज गाव म नेठू हुइ न घर माडीन, पांय जमइ न रहूंगा। देसऽ देस बहुत फिर्यो पण जब तक आदमी एक जगह नी रहतो तब तक वोकी जड़ नी जमती। अब कदी तुम मरब अपणा पदरम लइ लेव न ई मौका की जगा पर पडती खंडेरा म चार भाई मिलइ न घर बंधाडो

---

१. नेठू रहण्या—स्यायी निवास। २. भयो—पागल। ३. बलतो घर भाड़ ले—जलता घर किराये पर ले। ४. दगड—पत्थर। ५. लिखावट में संस्कृत में ऽ (अकार का चिह्न)।

जंगी भूत : ४ :

हिन्दी रूपान्तर

एक गाव था। बडा अच्छा-सा था। गाव से थोडी ही दूर एक नदी थी। सुहावने वृक्ष थे। आस-पास खेती-बाडी थी। भले आदमियो की बस्ती थी। यो तो दो-चार बुरे लोग सभी गावो मे रहते है। गाव के बीचोबीच मौके की जगह पर एक बडे घर का खडहर था—वर्षो से वीरान। कई मुसाफिर आते, नए बसनेवाले आते, किन्तु उस खडहर मे कोई भी रहने का साहस नही करता था, क्योकि बस्तीवालो को भलीभॉति मालूम था कि उस खडहर मे भूत रहता है, जो लोगो को खा जाता है। यही कारण था कि रातबीते उस तरफ कोई जाना तो दूर, देखना भी पसद नही करता था। गर्जेकि कोई भी आदमी उस पर को मुफ्त मे लेने को भी तैयार न था। ऐसा कौन पागल होगा जो जलता घर भाडे पर लेगा ? दिन मे दो-चार ढोर वहॉं बैठे रहते, पर रात होने के पहले ही ढोरवाले उस खडहर से पत्थर फेककर अपने ढोर निकाल ले जाते थे। खडहर की हद में पैर रखने की भी हिम्मत नही करते थे।

सयोग से एक सेठ साहब अपना देस मारवाड छोड़कर कुछ समय बडे-बडे शहरो मे व्यापार से धन कमाकर यहा आ गए। कहने लगे, "मै अब स्थायी रूप से यही रहूँगा और दूकान चलाऊँगा। अब उम्र ढलती पर आ गई है और घूमने-फिरने की इच्छा भी नही है, क्योकि आदमी जबतक एक जगह न जमे, उसकी जड नही जमती। मैने इस खडहर पर मकान बनाने का निश्चय किया है। यदि आप लोग मदद करके मेरा मकान खडा करवा दे तो

देव, तो हऊं यहां एक अच्छी दूकान धरूंगा। ओम म्हारो भी घर चल्गा न तुम्हारो भी काम सरऽगा।"

लोगन न बहुत समझायो कि भइ वहां मत रहे। उना घर म तो भूत रहेज। उन्न आज तक का किस्सा सुणाया, मरन वाला न की गिन्ती गिणाड़ी, कइ एक न का नांव सुणाया पण ओन एक नी मानी। न कह्यो कि "भाई मरूंगा तो हऊं न जिऊंगा तो हऊं, तुम क्यों फिकर करोज।"

लोगन् न सोच्यो कि जब इ कोइ की नी सुणतो अन मरन्ज ख आयोज तो मरण देव। अपुण ख काइ? अन उनऽ सबइनन चार आड़ा सीधा लक्कड़ लगाइन ओको घर तैयार करी दीयो।

वाण्या न ओम सामान धरयो दुकान मंडई, न रातखऽ आराम सी जाइन वहां सोइ गयो।

आधी रात को वखत हुयो कि ओकी नींद भरड़[1] सी खुली गई। न ओन देखयो तो सामनऽ एक बड़ो जंगी भूतडो उभेरा थो। पहले तो ऊ घबराण्यो।

पण फिरी हिम्मत करीन ओन पूछ्यो—"तू कुण आय? न तुख काई चायजे?"

ओन कह्यो—"हऊं भूत आय, न मख म्हारो नेग चायजे। कदि रोज मख म्हारो नेग नी मिल्यो तो हऊं तुख खाई जाऊंगा।"

वाण्यो तो काफी चणेल थो नी। ओन कह्यो कि "भाई मरा थारी वात मंजूर छे। पण मख काई विश्वास की तू भूतज आय। म्हारी एक अरज छे कि कदि तू सच्चो म भूतज होय न थारो भगवान का घर आवणो जाणो होय तो तूं मख काल तक एतरी वात बतई द कि ओका खाता वही म म्हारी उमर केतरी लिखेल छे। यका सी मख थारो भरोसो आइ जायगा, न थारी वात पूरी करन म कईं हरकत नी रहेणऽ की।"

जाण काई सोची न भूत उन दिन वापस चली गयो अन दूसरऽ दिन ठीक वखत पर आइन कह्यो कि "देख रे वाण्या मन ठेठ भगवान का घर

१. भरड़—चौंककर

मै यहा एक अच्छी दूकान खोलूगा। मेरा घर बन जायगा और तुम्हारा काम भी निकलने लगेगा।"

लोगो ने उन्हे उनके भले के लिए बहुत-कुछ समझाया, बीती कहानियां सुनाईं, मरनेवालो की गिनती बताई, किन्तु उसने किसी की नही मानी। कहने लगा, "भाइयो, मरूँगा तो मै और जिऊँगा तो मै। मेरी मरजी, तुम सब क्यो परेशान होते हो ? अगर हो सके तो तुम लोग सिर्फ इतनी मदद करो कि सब मिलकर मेरे रहने लायक एक मकान खडा करा दो।"

गाव भर मे इस नए बहादुर पर एक-दो दिन तक कानाफूसी होती रही और फिर उसकी जिद पर सबने यही तय किया कि वह मरने ही आया है तो उसकी इच्छा। अपने को क्या ? जैसा करेगा, वैसा भरेगा। आखिर सबने मिलकर आडी-टेढी लकडिया डालकर जैसे-तैसे उसके रहने लायक मकान खडा कर दिया। मकान तैयार होते ही सेठ ने उसमें थोडा-सा सामान रख दिया और दूकान खोल दी। रातको निश्चित होकर उसी मकान मे सो रहा।

कोई आधी रात बीते अचानक धक्के से उसकी नीद खुल गई। सामने जो देखा तो एक डरावनी शकल नजर आई। देखते ही पहले तो वह घबडाया, लेकिन दूसरे ही क्षण कुछ सँभल गया और साहस बटोरकर कहने लगा, "तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?" प्रश्न सुनते ही शकल गरजकर बोली, "मै भूत हूँ—जगी भूत। अपना हक लेने आया हूँ। यदि रोज मुझे मेरा भक्ष्य नही मिला, तो मै तुझे खा जाऊँगा।"

सबकुछ शातिपूर्वक सुनकर सेठजी बोले, "दोस्त मेरे, मुझे तुम्हारी सारी शर्ते मजूर है। लेकिन मेरी सिर्फ एक ही प्रार्थना है। वह यह कि तुम यदि सचमुच भूत हो और ईश्वर के दरबार मे तुम्हारा प्रवेश है तो कृपाकर कल तक मुझे सिर्फ इतना ही बतला दो कि ईश्वर के कागजो मे मेरी क्या उम्र दर्ज है ? इससे मुझे तुमपर विश्वास हो जायगा और तुम्हारी शर्तें पूरी करने में कोई हिचकिचाहट न रहेगी।"

सेठ की बात सुनकर भूत चला गया। दूसरे दिन निश्चित समय पर आकर बोला, "देख रे बनिया, मैने खुद भगवान के घर जाकर पता लगा

आइन सच पतो लगाई लियो। उनका खाता मही म थारी उमर ज्यादा नी कमती ठीक असी बरस की लिखेल छे। समझ्यो, अब ला म्हारो नेग।"

वाण्या ने घेंघइ[1] न कह्यो—"भाई, ई तो घणो बुरो हुयो। अल्मी म तो म्हारी साँस सदा फसी रहेगा। असो कि मनऽ सुण्योज कदि तू सिरफ भूत आय न थारा म जरा भी दया माया होणु चावजे। न मख भरोसो छे कि असी आफत की घड़ी म तू म्हारी जरूर एतरी मदद करऽगा कि भगवान स कहन म्हारी उमर म सी एक दिन घटाड़ द या एक दिन बढ़ाड़ व। हऊं तोरो बहुत अयसान मानूंगा।"

भूत न कह्यो—"अच्छी बात छे। पण काल थरी हऊं एक नी सुणन को। याद राखजे हऊं भूत आय, भूत अन क म्हां को म्हांज चम्पत हुइ गयो।

तीसरऽ दिन क बखत सी भी पहेल आइ धमक्यो अन गरजी न बोल्यो—"सुन रे वाण्या, मन भगवान ख बहुत समझायो कि या तो थारी उमर एक दिन घटइ दे या बढ़इ दे, पण उन्न एक नी मानी न कह्यो कि एक दिन की तो काइ ओन सी एक घड़ी भी घटी या बढी नी सकती। समझायो? अब हऊं लाचार छे। तून मख तीन दिन तक बहुत बहलायो पण अब थारो एक नी चलन को। ला मारो नेग कहां छे? नहीं तो हऊं तूख खाइ जाऊंगा। समझ्यो।"

तब वाण्या न हँसतऽ-हँसतऽ कह्यो—"केरे दोस काई अब भी थारी समझ म नी आयो कि म्हारो उमर ठीक असी साल की छे। ओम सी एक क्षण भी कोइ घटइ या बढ़इ नी सकतो। यानि कि मौत सी पहल कोइ ख मारी नी सकतो। ई म्हारो भगवान का यहां को न्याय छे। काइ अब भी तूख काइं करणु ज?"

सुणतई सी जंगी भूत शरम खाई न चलो गयो। अन फिर कदि समय सी पहेल नी आयो।

---

1. घेंघइ—घिघियाकर

लिया है। उनके खाते मे तेरी उम्र ठीक अस्सी वर्ष की लिखी है। अब लाओ, मेरा हक कहा है ?"

सेठ बहुत चतुर था। उसकी बात समाप्त होते-न-होते उसने बहुत घिघयाकर कहा—"भाई, यह तो बहुत बुरा हुआ। अस्सी में तो सदा मेरी सांस फँसी रहेगी, जैसाकि मैंने सुन रखा है। क्या तुम महज शैतान हो ? आदमियत का तुममें कोई भी अश नही है ? नही-नही, ऐसा कभी नही हो सकता। तुममे जरूर आदमियत होनी चाहिए। मै सोचता हूँ कि ऐसे सकट के समय तुम मेरी इतनी सहायता तो अवश्य करोगे कि ईश्वर से कहकर मेरी उम्र मे से कम-से-कम एक दिन या तो घटवा दो या एक दिन बढवा दो। मै तुम्हारा सदा अहसानमन्द रहूँगा।"

न जाने क्या सोचकर यह कहते हुए कि अच्छा, लेकिन कल तुम्हारी कोई फरयाद नही सुनी जायगी, भूत इस दिन भी चला गया।

तीसरे दिन निश्चित समय के पूर्व ही आकर भत अत्यत क्रोधावेश से बोला—"देखो, मैने ईश्वर से बहुत आरजू-मिन्नत की, वे तेरी उमर मे या तो एक दिन घटा दे या बढा दे, लेकिन उन्होने एक न सुनी और कहा कि एक दिन तो क्या, उसमें से एक क्षण भी घट या बढ नही सकता है। अत मैं लाचार हूँ। समझा। अबतक मैंने तेरी बहुत बातें सुनी और तू मुझे लगातार टालता ही जा रहा है। लेकिन आज यह सब नही होगा। ला, मेरा हिस्सा कहा है ? चल, जल्दी कर, नही तो तेरी खैर नही। मै तुझे खा जाऊँगा।"

सेठ मुस्कराते हुए बोला, "दोस्त, अब भी तुम नही समझ सके कि मेरी उम्र के अस्सी बरसो मे से एक क्षण भी कोई घटा या बढा नही सकता है और यह कि मौत के पहले कोई किसी को मार नही सकता। यह ईश्वरीय विधान है। क्या अब भी तुम्हे और कुछ कहना है ?"

यह सुन भूत शरमाकर चला गया और फिर उस मुद्दत के पहले कभी नही आया।

मालवी

सात भई-वेन था। वे एक गांम में रेता था। छे. भई था, ने सातवीं वेन। उको नाम विरणवई थो। जदे उका मां-वाप तिरथ जावा लागा तो मां ने भोजायां होण के कियो के तम सव विरणवई के घणी लाड से राखजो। कोई भी इका से काम मत कराजो। भोजायां होण वोली—"सासू जी, हम तो तमारा सामे जो भी केणो होय कई दां, पण तमारा पीठ पाछे कई भी नी कां। धन भाग धन घड़ी, हमारे तो एकज नंनद हे, कंई दस-पांच तो हे नी! फेरवी तो अपना भई होण से भी जादा लाड़ में रिया हे।"

मां-वाप था तो तिरथ चल्या गया। भई होण था तो सेवा-चाकरी पे गया ने[1] आंचड़ो भोजायां होण ने पीली खान को रस्तो लियो।

"चलो बई अपण पीली लई आवां, घर में पीली खुटी गी हे।"

नंनद होंसीली[2] थी। "हो भाबी, चलो तडाक फड़ाक खोदी लावां।"

सब जणी पीली लेवा गई ने सव खोदवा लागी। भोजायां खोदे तो पीली निकले ने नंनद खोदे तो मोतीड़ा। भोजायां ने पीली की टोपल्यां भरी ने नंनद ने मोत्या की। यो देखी ने भोजायां रीसा बलीगी[3]। उनने मनका माय कियो—"या राड कजान कंई अन्तर-मन्तर जाणे हे। इके तो यांज[4] छोड़ी जाणो चइये, नी ता या घरे भी कजाणां कंई टोटका बटका करेगी।"

भोजायां वोली, "बई तम यांज ऊबा रो। तमार से या टोपली नी तोकायगी,[5] हम अपनी टोपल्यां कूड़ी[6] आवा ने फेर तमारी टोपली लई चलांगा।"

---

१. ने—और। २. होसीली—उत्साही। ३ बलीगी—जल गई। ४. याज—यहीं। ५. तोकायगी—उठेगी। ६. कूड़ी—खाली करना

बिरणबाई

हिन्दी रूपान्तर

एक गाव मे सात भाई-बहन रहते थे। छ तो भाई थे और सातवी बहन। उसका नाम बिरणवाई था।

जब उसके मा-बाप तीर्थ जाने लगे, तो मा ने भौजाइयो को बुलाकर कहा, "तुम मेरी लाडली बिरणबाई को सुख से रखना और कोई भी काम इससे मत कराना।"

भौजाइया कहने लगी, "सासूजी, हम तो आपके सामने जो कुछ कहना हो कह देती है, पर आपके जाने के बाद हम कुछ भी नहीं कहती। धन घडी, धन भाग, हमारे तो केवल एक ननद बाई है, दस-पाच तो है नहीं। और फिर वह तो अपने भाइयो से भी अधिक लाड से रही है।"

मा-बाप तीर्थ चले गए। इधर सब भाई अपने-अपने काम से बाहर जाते। एक दिन सब भाई इसी तरह बाहर गए हुए थे। भौजाइया बोली, "चलो, हम सब मिलकर पीली मिट्टी खोद लावे।" ननद उत्साही थी। बोली, "हा भाभी, चलो, जल्दी ले आवे।"

सबकी-सब पीली मिट्टी लेने गई। भौजाइया खोदती तो पीली मिट्टी निकलती और ननद खोदती तो मोती निकलते। भौजाइयो ने पीली मिट्टी की टोकरी भरी, ननद ने मोतियो की। भौजाइयो ने देखा तो जल गई। मन मे कहने लगी, "राड न जाने क्या जादू जानती है। घर पर भी न जाने क्या टोटका-टमना करेगी।" फिर वे कहने लगी, "बाई, तुम यही खडी रहो, तुमसे यह टोकनी नही उठेगी। हम अपनी टोकनिया खाली कर आवे, फिर

"नी भाभी, हूँ भी चलूं, तोकी लूंगा इके तो।"

"नी बई, तम ने इतरो भार कदी नी तो क्यो हे। कदी तमारे कम-बत्ती हुई जाय तो तमारा वीराहुण हम के खई जायगा। इका सरू[1] सबूरी करो ने थोड़िक देर ऊभारो।"

नंनद बिचारी ऊबी री। रस्तो देखतां देखतां घणी देर हुई गी। भाभी अबी आवे—भाभी अबी आवे। पर भाभी होण का मन में तो दाव थे। वा कई जाणे बिचारी। बैठे-बैठे आखो[2] दन हुव गयो पर भौजाया नी अई। सभी सांज[3] की बखत हुई ने वई से सादू की जमात निकली। विरणवई ने एक सादू से कियो के म्हराज म्हारी टोपली चढ़ई दो। सादू ने विरणवई के एकली देखी ने पूछयो—"क्यों बच्चा, तू एकली क्यो हे?" विरणवई ने तो सब हाल सादू के कियो। सादू ने मोको देख्यो ने विरणवई के अपना सांते लग ग्यो। विरणवई रोवा लागी, पण उने धमकई ने चुप कर दी।

नरा दन[4] हुई गया। उ सादू उ के कंई भी नी जावा देता थो। फेर वा छोटा मोटा गाम में मागवा जाणे लगी। धीरे-धीरे अपना घरबार की बी सुध विरण नी री। वयांड़ी[5] सादू ने उके उना गांम जावा से मना करी दयो थो के वां कोई भिक्स्या नी देगो।

एक दन सादू के ताप चढयो। उ कंई उठी नी सकतो थो। इका वास्ते विरण वई भिक्स्या लेवा ने निकली। उके याद नी री ने वा अपना घर की गैल में मांगवा लगी। बड़ा भई के घरे गई तो भाभी ने ललकारी दी। फिर उक से छोटा घरे गई ता वां भी कंई नी मिल्यो। सबका पाछे सबसे छोटा भई का घरे गई। भाभी कमाड़-कनेज[6] उबी थी। विरणवई जई ने गावा लागी—

> सात भई की एकली विरणवई।
> मोतीड़ा हो खोदते जोगीड़ा हो पकड़ी।
> माय माय भिक्स्या दे . . .

---

१. इसलिए। २. सम्पूर्ण। ३. गोधूलि-वेला। ४. कई दिन। ५. उस ओर। ६. द्वार के पास।

तुम्हारी ले चलेंगी।" वे जाने लगी।

विरण बोली, "नही भाभी, मैं भी चलती हूँ। उठा लूगी इसे तो।"

"नही वाई, तुमने इतना बोझ कभी नही उठाया। तुम्हे कहीं कुछ हो गया तो तुम्हारे भाई हमे खा जायगे। तुम तो थोडी देर यही खडी रहो, हम अभी आती है।"

ननद बेचारी खडी-खडी भौजाइयो की बाट जोहने लगी कि भौजाइयां अब आती हैं, अब आती है, पर भाभियो के मन का कपट बेचारी क्या जाने ? बैठे-बैठे सारा दिन बीत गया, पर वे नही आईं।

साझ हो गई। उसी समय वहा से साधुओ की एक जमात निकली। विरणवाई ने एक साधु से कहा, "महाराज, मेरी टोकनी उठवा दो।"

साधु ने देखा कि लडकी अकेली है। कहा, "बच्चा, तू यहा अकेली क्यो है ?"

विरणबाई ने सब हाल कह सुनाया। मौका देखकर साधु अपनी जमात मे ले गया। विरणबाई रोने लगी, पर कौन सुननेवाला था ?

कई दिन हो गए। साधु ने उसे कही नही जाने दिया। धीरे-धीरे वह उसे छोटे-मोटे गाव मे भिक्षा मागने भेजने लगा। अब वह सब घर-बार भूल गई थी। साधु ने उसे उस गाव मे जाने से मना कर दिया था, जहाँ की वह थी। उसने कहा कि उधर तुझे कोई पकड लेगा और वहा भीख नही मिलेगी।

डर के मारे वह बेचारी उधर नही जाती थी।

एक दिन साधु बीमार था। विरणवाई को कुछ याद नही रहा और भूल से वह उसी गाव की गली मे चली गई, जहा की वह थी। उसकी एक भौजाई द्वार पर खडी थी। विरणवाई जाकर गाने लगी :

सात भाई की एक विरणवाई,
मोतीरा खोदत जोगिरा पकड़ी।
माई-माई भिक्षा दे।

इतरा में विरणबई की मां सामने अई ने बोली,—"वई-वई तू कंई गाती थी, फेर से गा तो।" विरणवई ने फेर से गई द्यो। मां का आख से नोसरधार[1] वेवा लागी। विरण का नेना ने तलाव भरी आया। मा सोचवा लागी। ऐसीज म्हारी विरण थी। पीली खोदतां खोदतां खान में दबी के मरी गई। (क्योंकि भौजायां ने अई ने सबके ऐसीज कियो थो।)

"वई तू रोज आया कर हूं म्हारे अपनी बेटी समझी ने सब कई दिया करूंगी।" मां ने कियो। दुख में भूली बात याद अई जावे है। विरणवई के अपनी सब बात याद अई गी। मां की छाती से चोंटी ने विरण खूब रोई ने अपनी बीती सुणई। मां ने उके घर में लई जई ने न्हवई ने अच्छा कपड़ा पेराया। भोजयां यो देखी के जली-बली ने राख हुई गी।

अबे मां-बाप ने विरण को ब्याव करने का लदवो[2] जमायो। वंयाडो सादू के मालम पड़ी। ऊ आछो हुई ने यां आयो। उत्ती वखत विरण की सगाई हुई री थी। सादू बोल्यो—"सगाई तो करो, पण चेलो तो म्हारी है।"

जदे ब्याव हुइ ग्यो तो उने फिर कियो—"ब्याव तो करयो, पण चेलो तो म्हारी है।" विरण विदा होवा लागी। बेरा होण ने बिदई का गीत गाया। लाड़ावाला लाड़ी के लई ने जावा लागा। उनाज वखत सादू ने अई ने कियो—"लाड़ी तो लई जाव, पण चेली तो म्हारी है।" इस तरह जगे-जगे सादू के वा लाग्यो—"चेली तो म्हारी है—चेली तो म्हारी है।"

विरणबई घबरई गई। उने कियो—"ओ सायबजी,[3] ओ सास जी, म्हारे सात तालो में रोकी दो, नी तो म्हारे सादू पकड़ी लई जायगो।"

विरण के ससराल में सात तालो में रखी ने सोवाड़ी[4]। अंधारी रात। हात के हात नी सूजे। खड़को हुयो। कच्ची नींद की सोवा वालो विरण जागी। उने खड़को सुनो ने कियो —

---

१. नोसरधार—अश्रुओं की धार। २ लदवो—आयोजन।
३. सायबजी—प्रियतम। ४ सोवाड़ी—सो जाना।

(सात भाइयो की एक बिरणबाई को मोती खोदते हुए जोगी न पकड़ लिया है। हे माई, भिक्षा दे।)

भाभियों ने उसे देखा तो ललकार कर भगा दिया। वह सब भाइयो के घर होती हुई आखिर छोटे भाई के द्वार पर पहुँची। वहा भी उसने यही गाना गाया। इतने मे उनकी मा सामने आ गई। कहने लगी, "बाई, तू क्या गाती थी, एक बार फिर से तो गा।"

उसने फिर से गा दिया। मा की आखो से आसुओ की धार बहने लगी। बिरण की आखे भी डबडबा आईं। मा सोच रही थी कि ऐसी ही मेरी बिरण-बाई थी। पीली मिट्टी खोदते समय खान मे दबकर मर गई। (क्योंकि भौजा-इयो ने आकर सबको ऐसा ही बताया था)

मा कहने लगी, "बाई, तू रोज आया कर। मै तुझे अपनी बेटी समझ-कर खूब चीजे दिया करूँगी।"

बिरणबाई को अपनी सब बात याद आ गई। उसने सारा हाल कहा तो मा-बेटी मिलकर खूब रोईं। इस प्रकार बिरणबाई फिर अपने घर आ गई।

अब मा-बाप ने उसका व्याह करने का विचार किया। उधर साधु को मालूम हुआ कि बिरणबाई अपने घर चली गई है तो वह अच्छा होने पर वहां आया। उस समय बिरणबाई की सगाई हो रही थी। साधु बोला, "सगाई तो करो, पर चेली तो मेरी है।"

जब उसका व्याह हुआ तो साधु आकर फिर कहने लगा—"व्याह तो करो, पर चेली तो मेरी है।"

व्याह पूरा हुआ और बिरणबाई अपनी ससुराल जाने लगी। साधु फिर आया और कहने लगा—"लाडी तो ले जाओ, पर चेली तो मेरी है।" इस तरह साधु बिरणबाई के पीछे पड गया। बरात घर पहुँची तो वहा भी साधु आकर कहने लगा—"बरात तो आई, पर चेली तो मेरी है।"

जब इस प्रकार साधु बिरणबाई को जगह-जगह छेडने लगा तो बिरण-बाई घबडाई। उसने कहा, "ओ प्रियतम, ओ ससुरजी, मुझे सात ताले में बन्द करो, नही तो यह साधु मुझे पकड ले जायगा।"

"पैलो तालो टूट्यो, सासू जी जागो ।
दूजो तालो टूट्यो, ससराजी जागो ।
तीजो तालो टूट्यो, जेठजी जागो ।
चोथो तालो टूट्यो, जेठानीजी जागो ।
पांचमो तालो टूट्यो, देवरजी जागो ।
छठवों तालो टूट्यो, देरानीजी जागो ।
सातमो तालो टूट्यो, सायबजी जागो ।"

इस तरे बिरण सब के जगई दे । ठीक उत्तीज वखत सादू सातमो तालो तोड़ी ने बिरणवई के लेवाने भरायो । सब जणा ने मिली ने उक पकड़ी ल्यो ने ऐसो कूट्यो के फेर उने वंयाड़ी मुंडोवी नी कर्‌यो ।

बिरणवई फर अपनो घर बसायो ने सुख से सासू-ससरा की सेवा करी ने रेवा लागो ।

बार्ता यों तो पूरी हुईगो ने सुनवा वाला बूढ़ा हुई गया ।

बिरणबाई को ससुरालवालो ने सात तालो में बन्द करके सुलाया। अधेरी रात थी। रात को खडका हुआ, बिरणबाई जागी। उसने कहा—

"पहला ताला टूटा, सासूजी जागो।
दूसरा ताला टूटा, ससुरजी जागो।
तीसरा ताला टूटा, जेठजी जागो।
चौथा ताला टूटा, जेठानीजी जागो।
पाँचवाँ ताला टूटा, देवरजी जागो।
छठा ताला टूटा, देवरानीजी जागो।
सातवां ताला टूटा, प्रीतमजी जागो।

इस तरह बिरणबाई ने सबको जगा दिया। उसी समय साधु ने सातवा ताला तोडकर बिरणबाई के कमरे मे प्रवेश किया। सबने मिलकर उसे पकड़ लिया और उसकी ऐसी मरम्मत की कि फिर उसने कभी उस ओर आने का साहस नही किया।

बिरणबाई अपने घर मे सास-ससुर की सेवा करती हुई आनन्द के साथ रहने लगी।

किस्सा था सो पूरा हो गया, सुननेवाले बूढे हो गए।

अवधी

याक दिन जमराज औ नारद जी मां ई वतं भाई कि मनई[1] सूध होत हवै कि नांही। जमराज कहति रहें कि मनई तौ सद्भ्वासर[2] होत हवै, मुला[3] नारदजी कहति रहें कि मनई बहुतु चलता पुर्जा होत हवै। नारदजी येहौ कहै लागि कि भाई जमराज, तुमका मरे मनइन ते हमेसा पाला परा हवै, मुदा जियत मनई ते सामना परी तौ जइस कहति हो वह चौकड़ी भूल जइहौ।

इन बातन का सुनि कै जमराज अपने दूतन का हुकुम दीन्हेंनि कि मिरतु लोक मा जाय कै कौनौं जियत मनई का लै आव। दूत जब मिरतुलोक मां पहुंचे तौ उनका सबते पहिले याकै लखन नाव के पटवारी मिलिगे। दूतन उनहिन का पकरि लीन्हेंनि औ कहै लागि कि चलौ तुम का जमराज बोलायेनि हवैं। पटवारी पहले तो बहुतु डेरान, फिरि ब्वाला कि तिनकु रुकि जाव, हम अपने लरिकन बच्चन ते मिलि लेई फिरि तुम्हरे साथ चलति हवै। यहि बहाने ते पटवारी अपने घरै गा औ भगवान की तरफ ते जमराज के नाएं एकु परवाना बनायेसि, जहिमां लिखा रहै कि जमराज तुम लखन पटवारी का अपन सब कामु सौंपि देव औ तुम का अबै छुट्टी हवै। ये हैं परवाना लइकै पटवारी देउता दूतन के साथ जमराज के लगे पहुंचे। पहुंचतै हाथ जोरि कै बड़ी सुधाई ते पटवारी जी वहै परवाना जमराज के पांयन मा धरि दीन्हेंनि। भला, भगवान का हुकुम को टारि सकत है, परवाना पढतै जमराज अपन सब भारु लखन पटवारी का सौंपि दीन्हेंनि। पटवारी स्वाचै लागि हम तौ जिंदगी भरि पापुइ कीन है, यहि ते अइस उपाय करैक चही

---

१. मनई—मनुष्य। २. सद्भ्वासर—सरल, सीधा। ३. मुला—पर, परंतु।

हिन्दी रूपान्तर

एक दिन यमराज और नारद मे यह चर्चा चली कि मनुष्य सीधे-सरल स्वभाव के होते हैं या चालाक ? यमराज कहते थे कि मनुष्य वहुत सीधा-सरल स्वभाव का प्राणी है और नारदजी कहते थे कि मनुष्य वहुत चालाक और धूर्त होता है। नारदजी कहने लगे, "भाई यमराजजी, आपको हमेशा मरे आदमियो से वास्ता पडता है। यदि आपको कभी जिन्दा आदमी से सावका पड जाय तो आपकी यह धारणा वदल जाय।"

यह सुन यमराज ने अपने दूतो को हुक्म दिया कि तुम मृत्यु-लोक से एक जीवित मनुष्य पकड लाओ। दूत जब पृथ्वी पर पहुचे तो उन्हे सबसे पहले लखन नाम के एक पटवारी मिले। दूतो ने उनको पकड लिया। कहा, "चलो, तुम्हे यमराज ने बुलाया है।" पटवारी पहले तो घबडा गया, फिर कुछ सोचकर बोला, "जरा ठहर जाओ, मै अपने बाल-बच्चो से मिल लू, फिर तुम्हारे साथ चलता हू।" इस बहाने समय लेकर वह घर के भीतर गया और उसने भगवान की तरफ से यमराज के नाम एक परवाना बनाया, जिसमे लिखा था, "यमराज, तुम परवाना देखते ही तुरत अपना सारा कारभार लखन पटवारी को सौंप दो। तुमको आज से पेंशन दी जाती है।" इस प्रकार परवाना तैयार करके उन दूतो के साथ वह यमराज के पास पहुचा। उसने वहा पहुचते ही वडी नम्रता के साथ वह परवाना यमराज के चरणो के पास रख दिया। भगवान की आज्ञा कौन टाल सकता है? परवाना पढते ही यमराज ने यमलोक का सारा कारभार लखन पटवारी को दे दिया। लखन यमराज की गद्दी पर जा बैठा। वह सोचने लगा कि मैने जीवनभर पाप-ही-पाप कमाया है, इसलिए मुझे अव, कुछ ऐसा प्रवध

कि जब हम मरी तो हम का हियौ सुखु मिले। वोहु जमराज के कानूनन का बदलि डारेसि औ हुकुम दीन्हेंसि कि जेतने पापी जीउ नरक मां परे हैं उन का सरग मां पठै दीन जाय औ जेतने सरग मां होंय उनका नरक मा ढकेलि आव।

यहि नये इंतजाम ते तीनऊ लोकन मां हाहाकार मचिगा। सब देउता मिलि कै भगवान की सरन मा गे औ सब हालु सुनायेनि। भगवान जमराज का बोलाय कै सब बातैं पूंछेनि। जमराज कहै लागि—"दीनबन्धु, यहु हमार कीन नहीं, लखन पटवारी का कीन कामु आय, जहिका आप परवाना दइकै जमलोक का भारु सौंपि दीन हऊ।"

भगवान सुनि कै बहुतु गील गीला[1] भे। कहै लागि कि हम तौ अइस परवाना लइकै तुम्हरे लगै कोहुक नहीं पठवा। तुरतै लखन पटवारी कै तलबी भै। बहि ते भगवान पूंछेनि तुम यहु जालु-फरेबु काहेक कीन हऊ? पटवारी ब्वाला—"दीनानाथ, जमराज कायदे के बरखिलाफ अपने दूतन ते हम का जियतै पकरि बोलायेनि। तौ हम स्वाचा कि न जानी ई हमरे साथ कइस सलूक करैं, यहिते हम अपने बचाव की नीतिन अइस काम कीन है।" पूंछै ताछै ते पटवारी का कहा सच्ची पावागा, तोहू भगवान यहु फैसला कीन्हेनि कि झगड़ा तौ पटवारी औ जमराज के बीच रहै, मुला यहु तौ जमलोक के नियमन का बदलि कै सरग के जीवन का नरक मां पठै कै बहुतु दिक्क कीन्हेंसि है। यहि ते पटवारी का कुंभीपाक नरक मा डारि दीन जाय। सजा सुनि कै पटवारी हाथ जोरि कै बिनती करै लाग कि दया-सागर, हमका थाक दंईं कुछु घंटन की खातिन मिरतुलोक मां जायका हुकुम मिलि जाय? हुवां ते लौटि कै हम यह सजा भ्वागै का तैयार हन। भगवान पूंछेनि कि तुम भुंइं पर काहेक जावा चहति हो? पटवारी जबाबु दीन्हेंसि कि हम हुवां जाय कै मनइन का बतइबे कि तुम सबु भगवान कै पूजा-ऊजा न कीन करौ, काहे ते, भगवान के दरसन ते तौ नरक मा जायवा परत है। यहै हमरे साथ भा है। हम साच्छात भगवान के दरसनौ कीन तहूं

1. गील गीला—आश्चर्य-चकित

कर लेना चाहिए कि जिससे मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिले। उसने यमराज के कानून को बदल दिया और आदेश दिया कि नरक मे पडे हुए सब पापियो को स्वर्ग भेज दिया जाय और स्वर्ग मे जो पुण्यात्मा है, उन सबको नरक मे पटक दिया जाय। नरक के पापी स्वर्ग भेज दिये गए और स्वर्ग के पुण्यात्मा सब नरक मे पटक दिये गए। इस नए प्रबन्ध से तीनो लोको मे खलबली मच गई। सब हाहाकार कर उठे। सब देवता मिलकर विष्णु भगवान के पास गए और यह सब अन्धेर कह सुनाया। सुनकर भगवान ने यमराज को बुलाया और पूछा, "तुमने यह क्या अधेरगर्दी मचा रक्खी है?" यमराज बोला—"दीनबन्धु, यह मेरा नही, लखन पटवारी का काम है, जिसे आपने परवाना भेजकर मेरी जगह यमलोक का काम सौंपा है।" यह सुन भगवान अचरज से हँसते हुए कहने लगे, "मैंने तो किसी को परवाना देकर तुम्हारे पास नही भेजा।" आखिर लखन पटवारी तलब किया गया। उसके आने-पर भगवान ने पूछा, "तुमने यह जालसाजी क्यो की?" पटवारी बोला, "दीनानाथ, यमराज ने कायदे के खिलाफ मुझे सदेह यमपुरी मे पकड बुलाया। मैंने सोचा कि यमराज मेरे साथ न जाने कैसा सलूक करेगे, इसलिए मैंने अपनी भलाई के लिए यह काम किया है।" पूछ-ताछ करने पर भगवान को मालूम हो गया कि पटवारी सच कह रहा है। पर उन्होने सोचा कि झगडा तो केवल पटवारी और यमराज के बीच था, लेकिन इसने तो यमलोक के नियमो को बदलकर पुण्यात्माओ को नरक मे डाल दिया। उन्हे अकारण बहुत कष्ट पहुचाया है। इसलिए इसे सज़ा देना उचित है। भगवान ने हुक्म दिया कि पटवारी को कुभीपाक नरक मे डाल दिया जाय। निर्णय सुनकर पटवारी हाथ जोडकर भगवान से कहने लगा, "प्रभो, मुझे आपकी आज्ञा शिरोवार्य है, पर एक बार मुझे कुछ घटो के लिए पृथ्वी पर जाने की आज्ञा दे। लौटकर फिर खुशी-खुशी दण्ड भोगने को तैयार हू।" भगवान ने पूछा, "तुम पृथ्वी पर किसलिए जाना चाहते हो?" पटवारी बोला, "दीनानाथ, थोडा-सा काम है। मैं पृथ्वी पर जाकर लोगो को समझाऊगा कि तुम व्यर्थ ही भगवान का पूजा-पाठ किया करते हो।

नरक मां जायवा परि रहा है ।

पटवारी का कहबु सुनि कै देउतन बड़ा गोलमाल मचादा । उइ पंचै भगवान ते कहै लागि कि यहिका खुब धनु-वैभव दइकै पिरथी पर पठै दीन जाय, नहीं तौ हुंवां यहि की बातें सुनि कै बड़ा गड़बड़ मचि जाई । भगवान देउतन का कहबु मानि कै बहिका घरै पहुँचा दीन्हेंनि । मुल पटवारी महुतु चिंतित रहै लाग कि मरै के बादि जमराज हम ते जरूरै बदला भँजइ हैं । यहि ते बचैक कुछु उपाय करैक चही । मुदा वहिकै तौ यह जल मैं कै आदति रहै कि कौनव नीक कामु न करै । लेबु छांड़ि कै देबु जानतय न रहै ।

यही भरमजालु मां बहि कै सारी जिंदगी बीतिगै । मरै की बेरिया बहि खाली याक पलंजरू[1] गाय पुन्नि कीन्हेंसि । मरै के बादि जब वोहु जमराज के लगै लावा गा औ वहि के करमन का ल्याखा ज्वाखा कीनगा तौ पापुइ-पापु निकसा, औ पुन्नि मा बहै पलंजरु गाय । तौ जमराज पूंछेनि कि तुम पहिले पुन्नि भ्वागा चहित हौ कि पापु । पटवरेऊ बोले कि हम तौ पहिले पुन्नि भोगिबे, फिरि तौ नरक मां सरइक है । जमराज मंजूरी दै दीन्हेंनि । तब गैवा आई औ पटवारी ते पूंछै लागि कि का हुकुम है ? जौ-उनु कहौ तौउन अबही कइ डारी । पटवारी हाथ जोरि कै कहै लाग—"हे महतरेऊ, तुम अपनि दूनौं सींघ जमराज के प्याट मा हूलि देव औ हलावत रहौ जब तक वहि मरि न जाय ।" यह्नु सुनतै गैवा जमराज की कैती[2] झपटी औ जमराज हुंवां ते जान लइकै भागि । उइ गैवा ते बहुत चिरौरी विंती कीन्हेंनि मुला वह मनतिहि न रहै ।

तब देउतन दूनौन का बीच बचाव कइकै पटवारी औ जमराज का समझउता करा दीन्हेंनि कि पटवारी का सरग मां राखा जाय । यहि तना पटवारी देउता का बैकुंठौ मिलिगा और नारदजी कै बात रहिगै कि जियत मनई ते जमराज खट्टी खागे ।

---

१. पलंजरू गाय—बूढ़ी-दुबली गाय । कैती—ओर, तरफ

भगवान के दर्शन से तो नरक जाना पडता है, जैसाकि मेरे साथ हो रहा है। मुझे भगवान के साक्षात् दर्शन होने के बाद भी नरक मे भेजा जा रहा है।"

पटवारी की बात सुनकर देवता लोग घबडाये। इसका तो बहुत बुरा असर पडेगा। पृथ्वी से भगवान की पूजा उठ जायगी। सो उन्होने भगवान से प्रार्थना की कि इसे बहुत-सा धन देकर पृथ्वी पर ही भेज दिया जाय, नरक न भेजा जाय। भगवान ने देवताओ की बात मान ली और उसे देवताओ के कहे अनुसार बहुत-सी धन-दौलत देकर पृथ्वी पर भेज दिया।

अब पटवारी को चिंता सताने लगी कि मृत्यु के पश्चात् यमराज बदला ज़रूर लेगे। उससे बचने के लिए कुछ उपाय अवश्य करना चाहिए, परन्तु हमेशा की आदत के अनुसार उससे कोई सत्कर्म या दान-पुण्य नही हो सका, क्योकि वह लेना छोड देना तो जानता ही न था। इसी सोच-विचार मे सारी जिदगी बीत गई। मृत्यु के समय उसने एक बूढी उजरऊ गाय पुण्य मे अवश्य दे दी थी।

मरने के बाद जब वह यमराज के सामने पेश किया गया और उसके कर्मो का लेखा-जोखा हुआ तो पाप-ही-पाप निकला, पुण्य तो केवल उजरऊ गाय का था। यमराज ने पूछा, "पहले तुम पुण्य का फल भोगना पसद करते हो या पाप का ?" पटवारी बोला, "पुण्य का।" यमराज ने अपनी स्वीकृति दे दी। गाय सामने आई और पटवारी से कहने लगी, "क्या आज्ञा है ? जो इच्छा हो उसकी पूर्ति करू ?" पटवारी ने कहा, "हे गऊ माता, जो तुम सत्य की साची हो तो तुम अपने दोनो सीग यमराज के पेट मे घुसेड दो और तबतक हिलाती रहो जबतक उसके प्राण न निकल जाय।" यह सुनते ही गाय यमराज की तरफ झपटी। यमराज जान लेकर भागे। उन्होने गाय से बहुत अनुनय-विनय की, पर वह न मानी। तब देवताओ ने यमराज और पटवारी मे यह समझौता करा दिया कि पटवारी यमराज को बचा ले और यमराज पटवारी को नरक के बदले स्वर्ग-लोक मे स्थान दे।

इस प्रकार जीवित मनुष्य का लोहा यमराज को भी मानना पडा और उन्होने नारद से कहा कि आपका कहना वास्तव मे सच है।

कुछ दिन रहे के बाद रकसीनियां से विजैपाल पूछलक कि अयँ नानी धर-खबा पर छै गो आंख केकर रक्खल हइ ? नानी कहलक कि इ छौबो आंख राजा के रानी के हअ। तोहर महतारी हिंआ पेठा देलक उहे। फिनु पूछलक कि इ आंख जुट कइसे सकअहे ? नानी कहलक कि फलना जगह धान के खेत हउ। उहां रोज धान कटा हे आउ रोज धान रोपा हे। उ धान के माड़ से इ आख रानी के साट देल जाय तो रानी देखे लग सकऊ हे। फेन का हल। विजैपाल नानी ही से विदागी लेके धान के खेत में गेल आउ पांच बाल लेके घर पहुँचल। चार बाल के तो कूटकाट के भात बनाकर मांड़ गारलक आउ ओकरा से छैबो आंख तीनो महतारिन के लगा देलक आउ एक बाल बुन देलक। बस बिहान होके धाने धाने झलके लगल। अब मायके सूज्झे भी लगल आउ खायला मांड़-भात भी मिले लगल। अब मकान बनबे की बारी आवल। खेती बारी में भी आदमी जन के जरूरत बढ़ते जाहल।

एक दिन फिन नानी हीं पहुँचल। नानी हीं एगो डंटा देखलक। पूछे पर पता चलल कि जे कर पास इ डंटा रहत उ जेतना अदमी आउ जानवर के खदेड़ के लावेला चहित, ले आवत। विजैपाल लेलक डंटा आउ उढ़क देलक। अब डंटा लेके सहेर के सहेर गाय, भईंस बैल आउ भैंसा ले आवल। गर-गोर खीआ, अदमी-जन मजूर सभ के डंटा से खदेड़ लौतक। अब तो गर-मकान बन गेल, खेल-पथार जोताय-कोड़ाय लगल। घर गिरहस्थी के सभ सामान भेगेल।

एक दिन एगो राजा आबल से अपन लड़की से बिआहो दान कर देलक। ऊ अप्पन सभ राजपाट विजैपाल के दे दलक। अब विजैपाल राजा भे गेल। मुला सोचलक कि जो रकसीनियां जान गेल तो बड़ा तंग करल। इ गुने इ फिन रकसीनियां के मैया ही पहुचल। दूगो किऊउरी देख के पूछलक कि इका हउ नानी। रकसीनियां कहलक---बेटा, एगो में हमर परान आउ दोसरा में तोहर माय के परान हउ। खोललं तो दुनु मर जायग। रख दे जलदी सबर !

ठिकाना लेकर विजयपाल वहा जा पहुचा । वहा जाकर उसने राक्षसी की मा से नानी का सबध जोड लिया । कुछ दिन रहने के पश्चात् विजयपाल ने नानी से पूछा, "नानी, ये छ आखे किसकी टगी है ?" राक्षसी बोली, "ये राजा की रानियो की है, बेटा । तेरी मा ने उनकी आखो को निकलवा कर यहा भिजवा दिया था ।" उसने फिर पूछा, "ये आखे फिर कैसे जुड सकती है ?" राक्षसी बोली, "अमुक जगह नितनई धान का खेत है । वहा धान नित्य बोया और नित्य काटा जाता है । उस धान के माड से यदि आखे चिपका दी जाय तो वे देखने लगेगी ।"

फिर क्या था ? विजयपाल नानी के यहा से आखे लेकर चला और धान के खेत पर पहुचा । वहा से उसने धान की पाच वाले तोडी और घर आ गया । चार वालो को कूटकर भात वनाया और उसके माड से छहो आखे तीनो माताओ के लगा दी । एक बाल बो दिया । धान पककर तैयार हो गया । अब माताओ को नित्य भात खाने को मिलने लगा और आखो से सूझने भी लगा । खेती-बाडी के लिए आदमियो की जरूरत हुई । मकान भी वनाना था । एक दिन वह फिर अपनी नानी के यहा पहुचा । उसने नानी के यहा एक डडा देखा । पूछने पर पता चला कि जिसके पास यह डडा रहता है वह चाहे जितने जानवरो और आदमियो को खदेड सकता है । विजयपाल ने मौका देखा तो डडा लेकर चल दिया । घर आया । अब वह डडा लेकर झुड-के-झुड गाय, भैस, बैल खदेड लाया । खेती-बाडी, मजदूरी और ढोर चराने के लिए बहुत-से आदमी भी ले आया । मकान बन गया । घर-गिरस्ती अच्छी चलने लगी ।

एक दिन एक राजा आया । उसने अपनी लडकी विजयपाल को ब्याह दी । अपना राजपाट भी उसे दे दिया । विजयपाल अब राजा हो गया, लेकिन उसने सोचा कि यदि राक्षसी को यह सब हाल मालूम हुआ तो वह मुझे तग करेगी । इसलिए उसे भी ठिकाने लगा देना चाहिए । वह फिर नानी के पास जा पहुचा । उसने उसके पास सिन्दूर रखने की दो डिबियो को देखकर पूछा, "ये क्या है, नानी ?"

एक दिन विजंपाल रकसोनियां से चुप्पे दुन्ने किऊउरी लेके चम्पत भे गेल। जइसहीं किऊउरी खोललक कि दून्नू माय-बेटी बम बोल गेलन। अब विजंपाल अपन बाप हीं आवल आऊ अपन परिचै देलक। बाप-बेटा गले गले मिललन। हिआ के राज भी विजंपाल के हाथ लगल। अब ओकर सोना के दिन चानी के रात होबे लागल। खिस्सा गेलो बन में बुझ्झ अपन मन में। अँघरी के बेटानी पर सभ के भाग फिरें।

राक्षसी बोली, "बेटा, इन्हे मत छूना। इन डिवियो मे मेरे तथा तेरी मा के प्राण हैं। डिविया खोलते ही हम दोनो मा-बेटी मर जायगी।"

एक दिन विजयपाल चुपचाप उन दोनो डिबियो को लेकर घर आ गया। जैसे ही उसने उन्हे खोला, मा-बेटी दोनो मर गई। अव विजयपाल अपने बाप के यहा पहुचा और अपना परिचय दिया। वाप-बेटा गले मिले। वाप का राज भी विजयपाल को मिल गया। अव क्या था? उसके दिन सोने के और राते चादी की होने लगी।

किस्सा समाप्त हुआ, मन में इसका मतलब समझे। अधरी के बेटा के समान सबके भाग खुले।

मनई केर मोल

बाघेली

ऐसेन ऐसेन रहैं एक राजा विकरमाजीत। उइ[1] बड़े न्यायी राजा रहैं। उनके न्याय कै परसन्सा दूर-दूर रहै। एक बेर ऐसेन भा कि देउतन के राजा इन्द्र सोचिन कि राजा बिकरमाजीत कै परिच्छा लीन जाय। नहीं तौ कहौं ईं[2] हमार इन्द्रासनै न पाय जांय। ऐखे खौतिर[3] उइं मनई[4] के तीन मूंड़ कटे कटाये पठइन[5] कि जौ राजा ईं तीनौ मूड़न केर अलगु-अलग मोल बताय दिहिन[6] तौ उनके सारे राज मा हुन्न[7] बरसी, नही तौ गाज गिरी। राजा राज दरबार मा तीनौं मुड़ धर के सब दरबारी पंडितन से कहिन कि तुम पंचै इनखर मोल बतावा तौ एकौ पंडित उनखर मोल न बताय सके। सारे राज दरबार मा सनाका[8] छायगा। देखैं मा अस[9] लागै कि जानौ तीनौ मूड़ एकै मनई के आयं थोरौं फरक न रहै। पंडितन का हाल देख के राजा बहुत खिसयान औ अपने पुरोहित से कहिन की देखा तुमका तीन दिन कै मोहलत दीन जात है। जो इनखर मोल बताय देहा तौ मुंहमागा इनाम पइहा, नहीं तौ फांसी पर टंगवाय दीन जइहा। दुइ दिन तक पुरोहित महराज सोचिन बिचारिन तौ कुछू मतलब बैठावा न बइठ। तब तिसरे दिन उइं बड़े सकट मां परे। सब खाब नहाब भूलगा। मारे सोच के उदास है के पिछौरी ओढ़ के पर रहे। पंडिताइन आईं औ पिछौरी उठाय के कहिन—"पंडित आज अपना कैसेन करी थे। चली उठी नहई खई।" पंडित मूड़न वाली सब किस्सा बतायगे। या सब सुनतै पंडिताइन के होस न रहिगा औ ओऊ बड़े असमंजस मा पड़ीं कि मोरे राम, अब का कीन जाय। कुछू समझ मा न आबा तौ सोचिन

---

१. वे २. यह ३. लिए ४. आदमी ५. भेजा ६. दिया ७. सुवर्ण ८. सन्नाटा ९. इस प्रकार।

६ हून

मनुष्य का मोल

हिन्दी रूपान्तर

विक्रमाजीत नाम के एक राजा थे। वे बडे न्यायी थे। उनके न्याय की प्रशसा दूर-दूर तक फैली थी। एक बार देवताओ के राजा इन्द्र ने विक्रमाजीत की परीक्षा लेनी चाही, क्योकि उन्हे डर था कि कही ऐसा न हो कि अपनी न्याय-प्रियता के कारण राजा विक्रमाजीत उनका पद छीन लें। इसके लिए उन्होने आदमी के तीन कटे हुए सिर भेजकर कहला भेजा कि यदि राजा इनका मूल्य बतला सकेगे तो उनके राज मे सब जगह सोने की वर्षा होगी। यदि न बता सके तो गाज गिरेगी और राज्य मे आदमियो का भयकर सहार होगा। राजा ने दरबार मे तीनो सिर रखते हुए सारे दरबारी पडितो से कहा, "आप लोग इन सिरो का मूल्य बतलाइये ?" पर कोई भी उनका मूल्य न बतला सका, क्योकि तीनो सिर देखने मे एक समान थे और एक ही आदमी के ज़ान पड़ते थे। उनमे राई बराबर भी फरक न था। सारे सभासद् मौन थे। राजदरबार मे सन्नाटा छाया हुआ था। एक-दूसरे का मुह ताक रहे थे। पडितो का यह हाल देखकर राजा चितित हुए। उन्होने पुरोहित को बुलाकर कहा, "तुम्हे तीन दिन की छुट्टी दी जाती है। जो तुम इन तीन दिन मे इनका मूल्य बता सकोगे तो मुहमागा पुरस्कार दिया जायगा, नही तो फासी पर लटका दिये जाओगे।"

दो दिन तक पुरोहितजी ने बहुत सोचा, परतु वे किसी भी फैसले पर न पहुचे। जब तीसरा दिन शुरू हुआ, तो वे बहुत व्याकुल हो उठे। खाना-पीना सब भूल गए। चिन्ता के मारे चद्दर ओढकर लेट रहे। पडिताइन से न रहा गया। वह उनके पास गई और चद्दर खीचकर कहने लगी, "आप

काल्ह तौ पंडित का फांसी होइन[1] जई तौ चला हम पहिलेन काहे न जिउ तेग देई। काहे पंडित कै मौत अपने आंखिन देखी। आधी रात के बखत मरै कै निरूप[2] कै के पंडिताइन शहर के बाहर निकरीं।

एहकैंती[3] का भा कि पारबती जी शंकर भगवान से कहिन कि सती के ऊपर संकट आय के परगा है तौ कुछू करा चाही। शंकर भगवान कहिन अरे पारबती या संसार आय हेन[4] ऐसेन रहल है, कहां तक तुम कुछू करिहा। पै गौरा पारबती एकौ न मानिन कहिन, नहीं कुछ जुगुत तौ करबै करी[5]। शंकर भगवान कहिन कि जो नहीं मनतिउ तौ चलो चली। दूनौ जने सियार सियारिन कै भेख धरिन औ तलाये को मेड़ मां जहां पंडिताइन बूड़ै चली जात रहैं, जाय के पहुंचगे। पंडिताइन जब तलाए के मेड़ के लघें[6] पहुंची तौ का सुनिन कि तराये के मेड़ मा एक सीगट (सियार) खूब हँसै, हुके-हुके[7] करै औ पुनि हँसै लागै। ये ही बीच मा सिगटिनिया पूछिस कि तुम आज कैसेन बैंकलाय[8] गया है कि बिना मतलबे हँसे डरत्या है। सिगटवा कहिस अरे तैं का जानस अब खूब खांय का मिली। खूब मोटाब। सिगटिनिया कहिस कि या कैसेन बात आय तुम कहत्या है कुछू समझ मा नहीं आवै, समझी तौ मानी। सिगटवा[9] कहिस कि राजा इन्द्र राजा बिकरमाजीत के हेन तीन ठै मूड़ पठइन है औ कहवाय पठइन है कि जो राजा इनकर मोल बताय पाइन तौ हुन्न बरसी नही तौ गाज गिरी। तौ सुन, मोल तो कोऊ बताय नै सकी कि सोन बरसै। अब राज मा सगले[10] हार गाजै गिरी तौ बहुत जने एक साथै मरि है तौ खूब खाबे, खूब मुटाबै। एतना कहि के सिगटऊ "हुके-हुके" कै के हँसै लाग। सिगटिनिया फेर कहिस कि तुम जानत्या है इन मूड़न केर मोल कि बैसे आय हँसत्या है? सिगटवा कहिस कि सुन, हम जानित तौ जरूर हयन पै बताउब ना। जो बताय दिहेन औ कोऊ सुन लिहिस तौ सब

---

१ हो ही २. निश्चय करके ३ इस ओर, इधर ४. यहां ५. किया ही जाय ६. पास ७. स्यार की बोली ८ पागल होना ९. स्यार (गीदड़) १०. सम्पूर्ण।

आज यो कैसे पडे है? चलिए, उठिए, नहाइए, खाइए।" पडित ने उन तीनो मूडो का सब किस्सा पडिताइन को कह सुनाया। सुनते ही पडिताइन होश-हवास भूल गई, बडे भारी सकट मे पड गई। मन मे कहने लगी—हे भगवान्, अब मै क्या करू? कहा जाऊ? कुछ भी समझ मे नही आता। उसने सोचा कि कल तो पडित को फासी हो ही जायगी, तो मै पहले ही क्यो न प्राण त्याग दू? पडित की मौत अपनी आखो देखने से तो यही अच्छा है। यह सोच मरने की ठान आधी रात के समय पडिताइन शहर से बाहर तालाब की ओर चली।

इधर पार्वती ने भगवान शकर से कहा कि एक सती के ऊपर सकट आ पडा है, कुछ करना चाहिए। शकर भगवान् ने कहा—यह ससार है। यहापर यह सब होता ही रहता है। तुम किस-किस की चिन्ता करोगी? पर पार्वती ने एक न मानी, कहा—नही, कोई-न-कोई उपाय तो करना ही होगा। शकर भगवान् ने कहा, "जो तुम नही मानती हो तो चलो।" दोनो सियार और सियारिन का भेस बनाकर तालाब की मेड पर पहुचे, जहा पडिताइन तालाब मे डूबकर मरने को आई थी। पडिताइन जब तालाब की मेड के पास पहुची तो उसने सुना कि एक सियार पागल की तरह जोर-जोर से हँस रहा है। कभी वह हँसता है और कभी "हुके-हुके, हुवा-हुवा" करता है। सियार की यह दशा देखकर सियारिन ने पूछा, "आज तुम पागल हो गए हो क्या? क्यो बेमतलब इस तरह हँस रहे हो?" सियार बोला, "अरे, तू नही जानती, अब खूब खाने को मिलेगा—खूब खायगे और मोटे-ताजे हो जायगे।" सियारिन ने कहा, "कैसी बाते करते हो? कुछ समझ मे नही आती, जो कुछ समझू तो विश्वास करू।" सियार ने कहा, "राजा इन्द्र ने राजा विक्रमाजीत के यहा तीन सिर भेजे है और यह शर्त रखी है कि जो राजा उनका मोल बता सकेगा तो राज्य भर मे सोना बरसेगा; जो न बता सकेगा तो गाजे गिरेगी। तो सुनो, सिरो का मूल्य तो कोई बता न सकेगा कि सोना बरसेगा। अब राज्य मे हर जगह गाज ही गिरेगी। खूब आदमी मरेगे। हम खूब खायगे और मोटे होगे।" इतना

तारै-ज्योंत बिगड़ जई । सिगटिनिया कहिस कि तौ तुम कुछू आय नहीं जनत्या; वैसे झूरै आय डींग मरत्या है । हेन आधी रात कै घौं को आय के बैठ हूँ जउन सुन लेई तौ इनकर भेदै खुल जई । सिगटऊ आव धरिन न ताव, चट्ट कहिन कि तै हमरे बात केर विसुआसै नहीं । नही मानती तौ ले सुन । तीनों मूडन केर मोल हम बताइत है कि तीनों मा एक मूंड ऐसेन है कि जौ एक सराई[1] सोने कै लै के काने ह्वै के डारै जो ओखे मुंहे ह्वैके ना निकरै तौ ओकर मोल अमोल है । दुसरे मूड़े का लै के जो सराई कानें ह्वैके डारै औ मुंहे ह्वै के निकर जाय तौ ओखर मोल दस हजार रुपिया । औ तीसर मूंड़ लेय औ ओखे काने ह्वैके सराई डारै औ सराई मुंहें, आखी, नकुवा सब जघा ह्वै के निकर जाय तो ओखर मोल है दुई कौंड़ी । पंडिताइन जा सब बात सुनत रहें तौ चुप्पै घर कइल चल दहिन ।

पंडिताइन खुशी-खुशी घरै आई औ पिछौरी टार के पंडित से कहिन का परे हा, चला उठा, नहा आव । कौने सोचन परे हा, हम बताउब न मूड़न केर मोल । पंडित बडे विहन्ने[2] उठे तौ राजा का सिपाही ठाढ रहे तौ खिसिआय के ओहो के ऊपर पड़े । कहिन, कि बड़ा सकार[3] न भा, आय के ठाढ़ ह्वै गे, अरे हम कहीं भगे थोड़ौ जात रहेन । जा राजा से कहि दिहा कि कउन वड़ा काम आय सौंपे है । नहाय धोय लेई, खाय पी लेई तौ आई । पंडित नहाइन धोइन पूजापाठ किहिन औ खाय पी के रीते एतनेन मा पंडिताइन से भेद पूंछपाछ के राजा के दरबार मा पहुंचे । पैलागी परनाम भई । पंडित जातै कहिन कि मंगाई कहां हैं तीनौं ठे मूंड़ । राजा उइ तीनौं मूड़ मंगाय दिहिन । पंडित उनही एह कैती ओह कैती उलटाय पलटाय के देखिन औ कहिन कि एक ठँ सोने की सराई तौ मंगाय देई । राजा सोने कै सराई मंगवाय दिहिन । पंडित सराई उठाइन औ एक मूंड़ के काने ह्वै के डारिन औ चारिउ कइत अहटाइन[4] तौ कौनौ कइत से न निकरी । पंडित सोचिन विचारिन औ धीरे से कहिन कि या मनई तौ बड़ा गमखोर है ।

---

१. सलाई　२. प्रातःकाल　३. सवेरा　४. टकरा-टकराकर टटोलना

कहकर सियार फिर "हुके-हुके, हुवा-हुवा" कहकर हंसने लगा। सियारिन ने पूछा, "क्या तुम इन सिरो का मूल्य जानते हो ?" सियार बोला, "जानता तो हू किन्तु बतलाऊगा नही, क्योकि यदि किसी ने सुन लिया तो सारा खेल ही बिगड जायगा।" सियारिन बोली, "तब तो तुम कुछ नही जानते, व्यर्थ ही डीग मारते हो। यहा आधी रात को कोन बैठा है जो तुम्हारी बात सुन लेगा और भेद खुल जायगा।" सियार को ताव आ गया। वह बोला, "तू तो मेरा विश्वास ही नही करती। अच्छा तो सुन, तीनो सिरो का मूल्य मै बतलाता हू। तीनो सिरो मे एक सिर ऐसा है कि यदि सोने की सलाई लेकर उसके कान मे से डाले और चारो ओर हिलाने-डुलाने से सलाई मुह से न निकले तो उसका मूल्य अमूल्य है। दूसरे सिर मे सलाई डालकर चारो ओर हिलाने-डुलाने से यदि मुह से निकल जाय तो उसका मूल्य दस हजार रुपया है। तीसरा सिर लेकर उसके कान से सलाई डालने पर यदि वह मुह नाक, आख सब जगह से पार हो जाय तो उसका मूल्य है दो कौडी।" पडिताइन यह सब सुन रही थी। चुपचाप दबे पाव घर की ओर चल पड़ी।

पडिताइन खुशी-खुशी घर पहुची। पडित अब भी मुह पर पिछौरी डाले पहले के समान चिन्ता मे डूबे पडे थे। पडिताइन ने चादर उठाई और कहा, "पडे-पडे क्या करते हो ? चलो उठो नहाओ-खाओ। क्यो व्यर्थ चिन्ता करते हो, मै बतलाऊगी उन सिरो का मूल्य।"

सवेरा होते-होते पडित उठे तो देखा दरवाजे पर राजा का सिपाही खडा है। पडित ने ठाट के साथ सिपाही को फटकारते हुए कहा, "सवेरा नही होने पाया और बुलाने आ गए! जाओ, राजा साहब से कह देना कि नहा ले, पूजा-पाठ करले, खा-पीलें तब आयगे।" सिपाही चला गया। पडित आराम से नहाये-धोये, पूजा-पाठ और भोजन किया। फिर पडिताइन से भेद पूछकर राजदरबार की ओर चले। पडित ने पहुचते ही कहा, "राजन्, मगाइए वे तीनो सिर कहा है ?"

राजा ने तीनो सिर मगवा दिये। पडित ने उन्हे चारो ओर इधर-उधर उलट-पलटकर देखा और कहा, "एक सोने की सलाई मगवा दीजिए।"

एखर पार नहि आय। महराज, लिखी एखर मोल अमोल है। येखे पाछे पंडित दुसरकंवा[1] मूड़ लिहिन। औ ओखे काने ह्वै के सराई डारिन औ चारौं कइत अहटाइन तौ मुंहे ह्वै के सराई निकर आई तौ कहिन कि या आदमी तौ कान का कच्चा है। जउन कान से सुनत है ओही मुंहे से कहिउ डारत है। लिखी राजा साहेब एखर मोल दस हजार रुपिया। तिसरे मूंड़े मा काने से सराई डार के लाग पंडित अहटामैं तौ ओखे आंखी, नकुवा, मुंहे सबै जघा से सराई निकरै लाग तौ पंडित मुंह बिचकाय[2] के कहिन—अरे या मनई तौ कौनौ काम केर नहि आय। या कौनौ बात थोरौ नहीं पचाय सकै। कान का बड़ा कच्चा है। लिखी राजा साहेब एखर मोल दुई कौड़ी। ऐसेन चुगुलखोर मनई का मोल एतनै बहुत है। पंडित को जवाब सुनके राजा बड़े खुशी भे औ बहुत का सोना चांदी हीरा जवाहर दै के पंडित का बिदा किहिन।

पंडित अपनै घरै गे औ राजा तीनौं मूंड़न के साथ वहै मोल लिखी के राजा इन्द्र के दरबार मा भेजवाय दिहिन। राजा इन्द्र बड़े खुशी भे। सारी राज मां हुम्न बरसा। रिआया खुशहाल ह्वै गै।

---

१. दूसरा २. मुंह बनाकर

सलाई मगवा दी गई। पडित ने एक सिर को उठाकर उसके कान मे सलाई डाली। चारो ओर हिलाई-डुलाई, पर वह कही से न निकली। पडित कहने लगा, "यह आदमी बडा गभीर है, इसका भेद नही मिलता। लिखिए महाराज, इसका मूल्य अमूल्य है।" फिर दूसरा सिर उठाकर उसके कान मे सलाई डाली। हिलाई-डुलाई तो सलाई उसके मुंह से निकल आई। वह कहने लगा, "यह आदमी कान का कुछ कच्चा है। जो कान से सुनता है वह मुह से कह डालता है। लिखिए महाराज, इसका मूल्य दस हजार रुपया।" पडित ने तीसरा सिर उठाया, उसके कान से सलाई डालते ही उसके मुह, नाक, आख सभी जगह से सलाई पार हो गई। उसने मुह बनाकर कहा, "अरे, यह आदमी किसी काम का नही। यह कोई भेद नही छिपा सकता। लिखिए महाराज, इसका मूल्य दो कौडी। ऐसे कान के कच्चे तथा चुगलखोर आदमी का मूल्य दो कौडी भी बहुत है।"

पडित का उत्तर सुनकर राजा प्रसन्न हुआ। उसने पडित को बहुत-सा धन, हीरा-जवाहरात देकर विदा किया।

इधर राजा ने तीनो सिरो का मूल्य लिखकर राजा इन्द्र के दरबार मे भिजवा दिया। इन्द्र प्रसन्न हुए। सारे राज्य में सोना बरसा। प्रजा खुशहाल हो गई।

राजा के बेटा के गेआन आ साधू के तीनगो बात

: ६ :

भोजपुरी

एगो राजा रहस। यो राजा का एकेगो लरिका रहे। लरिका का पढ़े गुनें में मन न लागे। ऊ भरदिन घुमले फिरे। अपना बेटा के बुड़बकई से राजा का बड़ा फिकिर हो गइल आ उ बाड़ा उदास रहे लगलन। बोजीर के बेटा राजा के बेटा से सब बिरतंत सुनवंलन। राजा के बेटा कहलन कि इआर घरे रह के केहु गेआन ना जाने। हम एकरा खातिर विदेस जाये के चाह-सबानी।

बोजीर के बेटा जाके राजा से कहलन कि इआर गेआन सिखे खातिर विदेस जाय के तैयार बाड़न। अब का रहे नीमन दिन बाऊ। एक दिन राजा के बेटा गेआन सिखे खातिर घर से बहर गइले।

जात जात राजा के बेटा एगो जंगल में पहुंचलन आ एगो लमहर शाया के गाछीतर ठहरलन। ऊंहवा ऊ देखत का बाड़न कि एगो साधू आख मुनले बइठलबा आ वोकरा देह पर दियका लाग गइलबा। बीतही चारु ओर के खर-पात उपिज गइल बा। राजा के बेटा पहिले चारु ओर के खबर-पात साफ कदेहलन, वोकरा बाद घास-बोस उखाड़के फेंक के वोतही खूब सफियाना बना देलन। येह सब कामसे जब फराकित मिलल त गवे-गवे साधू के देह पर के माटी-झोटी साफ कके ठीक ठाक कदेलन आ रात भइला पर वोतहिये फल फूल खाके आ पानी पी के सूत रहलन। दोसरा दिन उठलन त फेर चारु ओर के जमीन बहार के नदी में से पानी ले अइलन आ लीप पोत के चीकन-चुलबुल बना देलन। अब उनका रोज रोज के इहे काम रहे। कुछ दिन का बाद साधू के बारे बरिस के तपेसेया टूटल।

राजपुत्र को ज्ञान-प्राप्ति और साधु के तीन उपदेश : ९ :

हिन्दी रूपान्तर

एक था राजा। उसके एक लडका था। लड़के का मन पढने-लिखने मे नही लगता था। सारे दिन घूमता-फिरता रहता था। अपने लडके की मूर्खता से राजा को बहुत चिन्ता हुई। वह उदास रहने लगा। वजीर के लडके ने राजकुमार को यह वृत्तान्त सुनाया। राजकुमार कहने लगा, "मित्र, घर रहकर कही ज्ञान आया है? मै उसके लिए परदेस जाना चाहता हू।"

वजीर के लडके ने राजकुमार की बात राजा को सुनाई। कहा, "राजकुमार ज्ञान सीखने के लिए बाहर जाना चाहते हैं।" राजा ने सब तैयारी कर दी और राजकुमार शुभ मुहूर्त्त मे घर से निकल पडा।

राजा का लडका घूमते-घामते एक सघन वन में जा पहुचा। वहा उसने देखा कि एक साधु आंख मूदे बैठा है। उसके शरीर पर दीमक लग गई है। राजकुमार वही रुक गया। उसने पहले साधु के आसन के पास की जगह को घास-फूस हटा कर साफ किया, फिर धीरे-धीरे साधु के शरीर पर जमी हुई दीमक तथा मिट्टी को निकाला। सारा आश्रम साफ-सुथरा बना दिया। रात को वही सो गया। वह फल-मूल खाकर रहने और नित्य इसी प्रकार साधु की सेवा करने लगा। कुछ दिन बाद साधु की १२ वर्ष की तपस्या पूर्ण हुई। आख खोलते ही उसे अपने आसपास की जगह साफ दिखाई दी। साधु बोला, "जिसने मेरी इतनी सेवा की है, वह मेरे सामने आवे।" इस बात को सुनकर राजकुमार साधु के सामने हाथ जोडकर जा खडा हुआ। साधु कहने लगा, "तुम्हारी सेवा से मै प्रसन्न हू। वर मागो।" राजपुत्र

ऊ अपना तेजसे सब बात जान गइलन आ कहलन कि जे हमार येतना सेवा कइलख ऊ हमारा सामने आवे। येतना बात सुन के राजा के बेटा साधू का सोझा आके दंडवत कके खड़ा हो गइलन। साधू महाराज कहलन कि तोर सेवा से हम बाड़ा खुश बानी, बोल तू का मांगत बाड़े। इ बात सुनके राजा के बेटा कहलन कि अपने हमारा पर खुश बानी त हमरा के गेआन देहल जाव। साधू बात सुनके कहलन कि तू त हमरा से कुछो न मंगले आ सब कुछ माग ले ले। जो तोरा के हम गेआन दे देनी। देख तू तीनगो बात इआद रखिहे। रसता में असगर से दोसराइत भला। केहु बइठे के आसन देवे त वोकरा झार आ धुसका के बइठे के आ तीसर बात कि बिदेस में केहु खाये के देवे तो वो में से निकाल के पहिले कौनो जीया जनावर के देके खाये के। राजा के बेटा साधू से गेआन सिख के दंडवत कके उहवां से चल पड़लन।

राजा के बेटा साधू के पास से चललन त एगो लमहर पांतर में अइलन। उहवां केहु-कते ना रहे। ये ही बीच में देखताड़न कि नदी में एगो चील झपटा मरलक आ अपन शिकार ले के आकास में मेड़राये लागल। चीलवा एगो कछुआ पकडले रहे। जब वोंकरा देह पर ठोर मारे त हड़िये मिले। ये ही बोजह से चिलवा कछुआवा के छोड़ देलक। कछुआवा राजा के बेटा का आगाड़िये में गिरल। राजा के बेटा कछुआ के देखे लगलन त उनका साधू के बात इआद पड़ल कि रसता में असगर से दोसराइन भला। बुझाला भगवान जी हमरा के असगर देख के संघतिया दे देहलन हवे। इ सोच समुझ के ऊ कछुआवा के अपना झोरा में राख लेलव आ उहवां से आगे बढ़लन। गरमी के दिन रहे। बाड़ा कसके घाम उगल रहे। राजा के बेटा का चलत चलत फेने-फेन हो गइल रहे। थोड़ का दूर पर उनका एगो पाकर के पेड़ लउकल। ऊ बोतहिये जाके ठहरलन आ झोरा में से कछुआ के निकाल के बहरा धदेलन। झोरा के सिरहाना धके वोठग गइलन। राह के हरानी से वोठंग ते उनका नीन पड़गइल। वो पाकर के गाछ का सोर में एगो मनीअर सांप रहे। वो सांपवा का एगो काग आ एगो सियार से दोसती रहे। जब कवनो जातरी वो गाछ का नीचे आके सूत जाय तकगवा पंचभाखा बोले। राजा के

बोला, "महाराज, यदि आप प्रसन्न है तो मुझे ज्ञान दीजिए।" साधु बोला, "बेटा, तुमने कुछ नही मागा और सबकुछ माग लिया। मै तुम्हे ज्ञान देता हू। तुम्हे तीन बातो का ध्यान रखना चाहिए। पहली, रास्ते मे अकेला नही चलना चाहिए, दूसरी, किसी के दिए हुए आसन पर बिना जाच-पडताल किये नही बैठना चाहिए। तीसरी, परदेस मे यदि कोई अनजान मनुष्य कुछ खाने को दे तो उसमे से थोडा किसी जानवर को पहले खिलाकर तब खाना चाहिए।

राजपुत्र साधु से वरदान लेकर आगे चला। चलते-चलते वह एक तालाब के पास पहुचा। उसने देखा कि एक चील तालाब से शिकार लेकर ऊपर उड गई। चील ने कछुए को पकडा था। वह अपनी चोच उसके शरीर पर मारती तो उसे हड्डी के सिवा कुछ भी मालूम नही होता था। इसलिए उसने कछुए को छोड दिया। कछुवा राजकुमार के आगे आ गिरा। राजकुमार को साधु की बात याद आ गई कि रास्ते मे अकेला न चले। उसने समझा कि ईश्वर ने मुझे इस निर्जन मार्ग के लिए एक साथी दे दिया है। उसने कछुए को उठाकर अपनी झोली मे रख लिया और आगे बढा। राजकुमार चलते-चलते दोपहर को जगल के बीच एक पाकर के झाड के नीचे ठहर गया। कछुए को झोली से निकालकर पास रख दिया और आप झोले को सिरहाने रखकर लेट गया। थका-मादा तो था ही, लेटते ही आख लग गई। उस वृक्ष की जड मे एक साप रहता था। उसकी मित्रता एक काग और सियार से थी। जब कोई यात्री उस वृक्ष के नीचे आकर सोता तो काग 'काव-काव' कर आवाज लगाता। उसकी आवाज सुनकर सियार आ जाता और वह जोर-जोर से चिल्लाता। सियार की बोली सुनकर बिल मे से साप निकलता और उस सोते हुए मुसाफिर को काट खाता। मरने पर काग और स्यार दोनो मिलकर उसे चट कर जाते।

राजपुत्र को सोता देख काग बोलने लगा। उसकी बोली सुनकर सियार आ गया। सियार की बोली जब साप के कान मे पडी तो वह झटपट बिल मे से निकलकर राजपुत्र के पास पहुचा और उसके पैर के अगूठे मे

बेटा के सुतते काग बोललक त सियार अपना मान में से निकल के पंचभाखा बोललक। मनिअर का कान में आवाज जब पड़ल त ऊ सनसनाइल निकलल। आके देखलस त एगो खबसूरत जवान सूतल बा। ऊ जाके राजा का बेटा का दाहिना गोड़ के अंगूठा में काट लेलस आ अपना बिल में समा गइल। अछता-पछता के कागराम उतरलन। देखलन कि मोसाफिर मर गइल बा, त ऊ राजा के बेटा के आँख फोरे के लव देखे लगलन। कछुआवा बैठल बैठल, टुकुर-टुकुर ताकत रहे। जब काग राजा का बेटा के आँख निकाले के उतजोग में रहस तले कछुआवा टपसे कगऊ के नटी धलेलक आ अपन मुंडी खोपडइया में सेकुड़ाबे लागल। अब त कागराम के निहोरा-पाती करे। कछुआ कहलक कि तू जइसे हमरा इआर के मुआ देलहवे वोइस ही तोहरों हम जान लेके छोडब। अब त भइल मसकिल। काग कहलक कि तू हमार जान बखस दत तोहरो संघतिया के हम जीआ देतबानी। काग अपना कग-भासा में बोलल, सियार त पहिले ही आके खाड़ा भइल रहे ऊहो पंचभाखा में बोललक। मनीअर फेनु निकाल के आइल आ जहँवा कटले रहे बोत हिये कटलस। राजा के बेटा देह में के जहर त निकस गइल आ संपवा बोतहिये मूरछा के चित्त हो गइल। राजा के बेटा उठके बइठ गइलन। उनका उठते कछुआवा कगऊ के नटी काट देलक। राजा के बेटा राम राम कहके आपन आंख मललन त देखत बाड़न कि येने काग मूअल बा वोने सांप परल बा। अपना मने में ऊ कहलन कि हे भगवान इ सबका भइल। हवे फेन कछुआ से कहलन—बडी सूतान सूतनी अब इहवा से चले के चाही। कछुआ कहलक कि ये इआर रउआ सूतल ना रनी हवे। रउआ केत इ मनीअर साप काट ले लेरलख आ वोकरा बाद जडी से फूनगी तक सब बात कहा गइल आ कहलस कि येतही बड़का काल रलख आ केतना दिन से गरजान मोसाफिर के अख-रेरे जान लेत रहल हवे। अब देखले का बानी उठाई खांड आ मनीअर के टुकड़ा कदी। राजा के बेटा खांड निकललन आ मनीअर के टुकड़ा कदेलन। सियार अलगे से सब देखत रहे ऊत खाड देखते भाग परायेल।

अब राजा के बेटा आ कछुआ के हाथ में ले के आगे बढलन। थोड

काटकर बिल मे वापस चला गया। काग कुछ देर बाद नीचे उतरा और धीरे-धीरे राजकुमार की ओर बढने लगा। जब उसे विश्वास हो गया कि वह मर गया है तो वह उसके सिर के पास जाकर उसकी आखे निकालने की चेष्टा करने लगा। इसी समय कछुए ने झपटकर अपनी कातरो से उसकी गर्दन पकड़ ली। कांग का दम घुटने लगा। वह कछुए से गिडगिडाकर बोला, "ओ कछुआ भाई, मुझे मत मारो, छोड दो।" कछुवा बोला, "जैसे तुमने मेरे मित्र को मरवा डाला है, वैसे ही मै तुम्हे भी मार डालूगा।" काग बोला, "तुम मुझे छोड़ दो, मै तुम्हारे मित्र को जीवित किये देता हू।" ऐसा कहकर कौए ने आवाज लगाई। सियार पास ही खडा था। उसने बोलना शुरू किया। सियार की आवाज सुनकर साप बिल मे से निकला और उसने राजकुमार के पास जाकर घाव मे मुह लगाकर विष को खीच लिया। साप मूच्छित-सा होकर पड रहा। राजकुमार उठ बैठा। कहने लगा, "अहा-हा, क्या नीद आई थी।" कछुवा बोला, "मित्र, नीद नही आई थी। इस काले साप ने तुम्हे काट खाया था। तुम मर गए थे।" ऐसा कहकर उसने सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसने कौए का गला घोटकर उसकी जान लेली और राजकुमार से कहा, "देखते क्या हो ? यह तुम्हारा काल—साप पडा है, इसे मार डालो।" राजकुमार ने खजर निकालकर साप के टुकड़े-टुकडे कर डाले। इसके बाद राजकुमार कछुए को लेकर आगे बढा।

थोडी दूर आगे चलने पर एक तालाब मिला। कछुवा कहने लगा, "हम लोग कई दिन तक एक साथ रहे, अब मेरा घर आ गया है। आप मुझे छोड दीजिए।" यह सुनकर राजकुमार ने कछुए को तालाब की पार पर रख दिया। कछुवा तालाब मे चला गया और राजकुमार आगे बढा। उसे कुछ दूर चलने के बाद ठगपुर नामक एक गाव मिला। इस गाव मे ठगो का घर था। ठग के चार लड़के और दो लडकिया थी। लड़किया ज्योतिष मे पारंगत थी। जब कोई परदेसी उस नगर मे आता तो वे बतला देती थी कि उसके पास कितना धन है। चारो लडके गाव के चारो ओर चले जाते थे और यात्री को ठग लेते थे। जो उनसे बच निकलता, उसे उनका पिता

का आगे बढला पर एगो पोखरा लउकल। कछुआ कहलक कि हमनी का बहुत दिन तक साथ रहल। अब हमार घर आ गइल, हमरा के अपने छोड़ दी काहे कि थोड़ के दूर पर एगो गांव मिली आ अपने अदमिआइत हो जायेब। कछुआ के बात सुनके राजा के बेटा कछुआ के ले जाके पोखरा का किनारे धदेलन। कछुआ केतना दिन से बिछुड़ल अपना घर में समाइल। राजा के बेटा आगे बढ़लन। कुछ दूर पर ठगपुर गाव लउकल। येह ठगपुर गांव में एगो ठग रहे। वोकरा चारगो बेटा आ दुगो बेटी रहे। बेटिया स फकड़ा[1] जाने। जब कबनो परदेशी वो नगर में आवे तो बेटिया बता देवे कि फलना दीसा से एगो मोसाफिर आवत वा वोकरा पास एतना माल असबाव बाटे। चारु बेटवा चार ओरी चल जास आ मोसाफिर के ठग लेवे। वोकनी से जे बांचे तवज वोकर बापवा चउमुहानी पर बइठ के ठगे। त राजा के बेटा ठगपुर में न पूरबे से गइलन न पछिमे से ना दखिने से न उतरे से। ऊ कोना-कानी नगर में समा गइलन। घुमत फिरत ऊ चउमुहानी पर पहुँचलन, जहँव-बुढ़वा ठग बइठल रहे। ठगवा के बेटी कह देले रहे कि ये मोसाफिर का दहिना जांघ में चारगो लाल बाटे। वो ही लाल के लालच में ठगवा इन कर बाड़ा खातिर बात कइलक आ अपना पास बइठा के इनका हाल चाल पूछे लागल। राजा के बेटा सोचल कि चल एहु नगरिया में भगवान जो एगो संघतिया भेज देलन। साझ जब भइलन ठगवा कहलक कि रउआ बड़ी दूर से आवत बानी, चलीं आज हमरा घर पर ठहर। बिहान होई त अपन रासता लेब। राजा के बेटा सोचलन कि इहो ठिके कहतवा। ऊ बोकरा संगे बोकरा घरे चल अइलन। ठगवा इनका के एगो घरमें ले गइल। राजा के बेटा देखलन कि एगो खटिया पर उजर धपाधूप चदर बिछावल बाटे। ठगवा उनका के वोही पर बइठे के कह के अपने टर गइल। राजा का बेटा का साधूके बात इआद हो गइल। ऊ खटिया के चादर उठा के झारे के चहले तो देखत बाड़े कि खटिया बिना बिनले बा आ वोकरा नीचे एगो तरहारा बाटें आ वो

---

१. ज्योतिष

चौराहे पर बैठकर ठगा करता था। राजकुमार उस गाव मे एक कोने से घुसा और घूमते-फिरते उस चौराहे पर आ पहुचा, जहा ठगो का पिता बैठा था। ठग की बेटी ने बतला दिया था कि इस राजपुत्र की जाघ मे चार लाल है। ठग ने राजपुत्र को आते देख उसकी बडी खातिरदारी की। ठग कहने लगा—"सध्या होने वाली है। आगे दूर तक कोई गाव नही है। आज रात मेरे घर पर ही आराम कर लो।" राजकुमार ने उसकी बात मान ली और वह उसके साथ उसके घर जा पहुचा। ठग उन्हे एक कोठरी मे ले जाकर कहने लगा, "आप इस चारपाई पर आराम से लेटो।" ऐसा कह वह तुरन्त बाहर आ गया। राजपुत्र ने देखा कि चारपाई पर सफेद चादर बिछी हुई है। उसपर बैठने के पहले उसे साधु के वचन की याद आ गई। उसने चादर उठाकर देखा तो चारपाई मे कच्चा सूत बुना था। उसके नीचे एक गहरा गड्ढा था, जिसमे तेज धारवाले भाले और बर्छिया गड़ी थी। राजकुमार देखते ही सब समझ गया। उसने चारपाई पर चादर उसी तरह बिछा दी और जमीन पर बैठ गया। ठग ने देखा कि मेरी यह चाल बेकार गई। उसने अब विष मिलाकर रसोई तैयार कराई। एक थाली मे उत्तम व्यजन परोसकर यात्री को दे गया। राजकुमार जब भोजन करने बैठा तो उसे साधु का तीसरा वचन याद आ गया। उसने पूजा के बहाने थाली मे से थोडा-थोडा सब सामान निकाला और सडक पर लाकर एक कुत्ते को खिलाया। खाते ही कुत्ता चित होकर गिर पडा। राजकुमार भीतर गया और थाली के भोजन को लेकर पास के एक गड्ढे मे डाल दिया और थाली माजकर रख दी। ठग की जब यह चालाकी भी बेकार गई तो उसने यात्री को एक कमरे मे लेजाकर पलग पर सोने को कहा। राजकुमार पलग को जाचकर उसपर लेट गया। ठग ने अपनी लडकियो को आदेश दिया कि जैसे भी हो, इस यात्री से लाल ले लो। ठग की छोटी लडकी राजकुमार के सौदर्य पर मोहित हो गई थी उसने राजपुत्र के पास जाकर कहा, "मै तुम्हारी जान बचा दूगी, यदि तुम मेरे साथ विवाह करने का वचन दो।" राजकुमार ठगो के चंगुल मे फस गया था। अपनी जान बचाने के लिए उसने स्वीकृति

तरहारा में झंकलनत देखस कि किसिम किसिम के तेज बर छीआ भाला खाड़ा कइल बा। चादर के जइसे के तइसे बिछा के भुंइ पै बैठ गइलन। ठगवा इनकर चालाकी बूझ गइले। इनका खातिर बारहों किसिम के बिंजन बनववलक आ थार में परोस के खाये खातिर ले आइल। वोमे वोकनी का बीख मिला देले रहतब। जब राजा के बेटा खाये बइठलन त उनका साधू के बात इआद पड़ गइल। ऊका कइलन कि पूजा परतिसठा के बहाने सबमें से लेके बहरा निकल गइलन आ सड़क पर ले जाके एगो कूकर के खिला देलन। खाते भातर त कुकरा अउंधा के गिर गइल। राजा का बेटा का मालूम हो गइल कि हमरा खायेक में एकनीका बिख मिलबले बाड़ेन स। ऊ वापिस गइलन आ सब के एगो गड़हा में फेंक देलन आ बरतन मांज के धदेलन। ठगवा के जब इहो चालाकी न लागल त ऊ इनका के एगो घर में ले जाके पलंग उसा के सूते के कह देलक। आ अपन बेटियन के सिखा देलक कि जइसे होखे तइसे वोकनी मोसाफिर के लाल चोरा लसऽ। छोटकी बेटिया राजा के बेटा को खवसूरती देख के छकित हो गइल रहे। ऊ राजा के बेटा के कह देलस कि हम तोहर जान बचा देहव आ तू वचन हारऽ कि तू हमरा से बिआह् करबड़नू। राजा के बेटा तो ठग के घपला में पड़ गइल रहस, ऊ वचन हार गइलन। त ठगवा के बेटिया कहलक कि तोहरा पर हमनी दुनु बहिन के रात में पहराबा। आधा रात तक हमर जेठकी बहिन पहरा पर रही, वोकरा से तू कवनो तरेह जान बचा लीह, वोकरा बाद हमर पहरा पड़ी त देखल जाई। राजा के बेटा कैय दिन के हारल-खेदाइल रहस। नीमन बिछवना मिलते उन कर आख बन हो गइल। तले ठगवा के जेठकी बेटिया के पहरा परल। ऊ आबते देखलस कि मोसाफिर फोफ काटन बा। बाते का रहे, ऊ इनकर दुनु हाथ गोड़ रसरी से बान्ह देलस आ नंगी कटार लेके उनका छाती पर बइठ गइल।

राजा के बेटा हड़बड़ा के आंख खोललन आ सब समुझ गइलें। ठगिनिया कहलस—भल चाह त तू लाल निकाल के देद ना तो तोहर जान मार के हम लाल ले लेव। राजा के बेटा कहलन, हमरा के मारके का पइबू? जइसे बाम

दे दी । लडकी बोली, "तुमपर हम दोनो बहनो का रात को पहरा है। आधी रात तक मेरी बडी बहन रहेगी । तुम उससे किसी तरह अपने को बचा लेना । बाद में जब मै आऊगी तो तुम्हें उद्धार की तरकीब बतला दूगी ।

राजपुत्र कई दिन से मजिल कर रहा था। थका-मादा था, पलग पर लेटते ही उसे नीद आ गई । ठग की बडी लड़की पहरा देने पहुची । उसने अन्दर जाते ही देखा कि राजपुत्र सो रहा है । उसने उसके दोनो हाथ-पाव रस्सी से बाध दिये और कटार खीचकर उसकी छाती पर चढ बैठी । राजकुमार ने हडबडा कर आखे खोली तो सब माजरा उसकी समझ मे आ गया । ठग की बेटी कहने लगी, "यदि तुम अपने प्राण बचाना चाहते हो तो उन लालो को निकालकर मेरे हवाले कर दो, नही तो मै यह कटार तुम्हारे पेट मे घुसेड दूगी ।"

राजपुत्र बोला, "सुन ठग की बेटी, यदि तू मुझे मार डालेगी तो तुझे बाद मे उसी प्रकार पछताना पडेगा, जिस प्रकार चिडीमार बाज को मार कर पछताया था ।"

ठग की बेटी ने अचभे के साथ पूछा, "सो कैसे ? चिडीमार बाज को मार कर क्यो पछताया था ?" राजपुत्र कहने लगा, "पहले तुम मेरे हाथ-पाव खोल दो, कटार को म्यान मे रख लो, अच्छी तरह नीचे एक ओर बैठ जाओ , फिर मै तुम्हे बाज का किस्सा सुनाता हूं ।" ठग की बेटी का कौतूहल बढा । उसने राजपुत्र के हाथ-पैर खोल दिये और उसकी छाती पर से उतरकर पास मे बैठ गई । राजपुत्र कहने लगा—"सुन ठग की बेटी, किसी गाव मे एक चिडीमार रहता था । उसने एक बाज पाल रखा था । वह उस बाज को लेकर शिकार खेलने जाया करता था । जब वह किसी चिडिया को उड़ती देखता तो उसपर बाज छोड देता था । बाज उस चिडिया को मार लाता । इस प्रकार चिडीमार अपनी गुजर चलाता था । एक दिन वह शिकार की टोह मे फिरता-फिरता ऐसी जगह पहुंच गया जहा दूर-दूर तक पानी नही था । चलते-चलते उसे प्यास लग आई । पानी खोजा, पर कही न मिला । आखिर प्यास से

मार के मिसकार पछताइल वोईसहीं तोहरो पछताय के परी। ठगनिया पूछलक कि से कैसे ? राजा के बेटा कहे लगलन—एगो कवनो देश में एगो मिसकार रहे। मिसकरवा एगो बाझ पोसले रहे। बझवा के लेके ऊ जगल में चल जाय आ बझवा के कवनो चिरई देखा के उड़ा देवे। बझवा चिरइया के पकड़ ले आवे। साझ तकले शिकार खेल के मिसकार घरे लवटे। कुछ दिन का बाद मिसकार ऊहवा से अपन डेरा कूच कइलक। जात-जात मिस-कार एगो पातर में पहुंचला। चलत चलत वोकरा पियास लाग गइल। पियास के मारे वोकर परान छूटे लागल। मिसकार एगो पाकड़ का पेड तर बैठ गइल। वो ही घड़ी मिसकरवा के देह पर एक बून पानी गिर गइल। मिसकरवा अचंभा से ऊपर ताके लागल। तले एक बून फेर पानी गिरल। मिसकरवा देखलक कि ई पनिया बराबरे गिरता। वोकरा बुझाइल कि भगवान खुश होके वोकरा के पानी दे रहल बाड़न। ऊ तुरन्ते पत्ता के एगो दोना बनवलक आ पनिया जहंवा गिरत रहे वोही सीके दोनवा के ध देलक। थोड़ के देर में दोना पानी से भर गइल। मिसकार खुशी का मारे दोना उठा के मुंह से लगावहि के चाहत रहे कि बझवा उडल आ अपना डयना से मिसकार का हाथ में दोना गिरा देलक। मिसकरवा का बाडा खिस्स भइल। मिसकार तीन बेर दोना में पानी चुअवलक आ तीनो बेर बाझ दोना गिरा देलक। तिसरका बेरी मिसकार खिसे आन्हर हो गइल आ बझवा के घेंट ममोर के मुआ देलक। फेनु दोना में पानी चुआवे में देर होखी येह बोजह से ऊ सोचलक कि गाछे पर चढ़के पानी पीलीं। ई सोचके जब ऊ गाछ पर चढल त देखत बा कि एगो घोंघड़ में बेदहे अजगर मरके सड गइल ब। आ वोकरे लार ठोपे-ठोप चुअत बा। अब त मिसकार का बाड़ा अपसोस भइल आ ऊ मुरछाय के गिर गइल। ऐतना कहते कहते आधा रात बीत गइल आ छोटकी ठगनिया के पलहा हो गइल। ऊ आवते पूछलक— "का, बहिन, लाल हाथ लागल कि ना ?" जेठकी जबाब देलस कि "ना रे, दहिजरा बतगूने में बेरा गंवा देलक। तू एकरा बतगुजन में मत परिहे आ जइसे होखे लाल निकाल लीहे।" ऐतना कह के जेठकी त चल गइल। छोटकी

व्याकुल होकर पाकर के पेड की छाया मे जा बैठा। उसी समय उसने देखा कि पेड से एक-एक बूद पानी टपक रहा है। उसने पत्तो का एक दोना बनाकर उस जगह रख दिया, जहा बूदे गिर रही थी। कुछ समय मे दोना भर गया। उस दोने को उठाकर उसने मुह से लगाया था कि बाज झपटा और उसने अपना डैना मारकर दोना गिरा दिया। पानी गिरने से चिडीमार क्रोधित होकर बाज की ओर देखने लगा। उसने वह दोना फिर उसी जगह रख दिया। उसने तीन बार पानी इकट्ठा किया, पर पीते समय बाज ने तीनो बार डैना मारकर गिरा दिया। चिडीमार का क्रोध भडक उठा। उसने खजर निकालकर बाज के दो टुकडे कर दिये। बाज मर गया। उसका धीरज टूट गया। अब फिर कबतक पानी भरेगा ? वह झट पेड पर चढ गया। उसने सोचा कि पेडपर चढकर जहा से पानी आता है, वही जाकर पानी पी आना चाहिए। ऊपर जाकर देखता क्या है कि एक खोखट मे एक बडा अजगर मरा पडा है। उसकी देह सड-गल गई है। उसी मे से एक-एक बूद पानी नीचे टपक रहा है। यह दृश्य देख बाज के मारने का उसे बडा खेद हुआ। वह सिर धुनकर पछताने लगा और जीवन-भर उस दु ख को न भूला। इसी तरह यदि तू मुझे मारेगी तो जीवन-भर पछतायगी।"

कथा समाप्त होते-होते रात के बारह बज गये और ठग की छोटी लडकी अपने पहरे पर आ पहुची। उसने आते ही पूछा, "क्यो जीजी, लाल हाथ लगे या नही ?" ठग की बडी लडकी बोली, "नही बहन, इसने तो मुझे बातो मे फसाकर सारा समय निकाल दिया। अब तू इसकी बातो मे न आना और जिस तरह हो लाल लेकर ही रहना।" इतना कहकर बडी लडकी चली गई। छोटी लडकी राजपुत्र के पास जाकर कहने लगी, "देखो राजकुमार, मैं तुम्हारी जान बचाये देती हू। तुम फिर प्रतिज्ञा करो कि तुम मेरे साथ विवाह करोगे और मुझे अपनी रानी बनाओगे ?" राजपुत्र ने स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। ठग की पुत्री बोली, "ठीक है। अब तुम एक काम करो। घुडसार मे दो ऊटनी बधी हैं—एक मोटी-ताजी और दूसरी दुबली-पतली। मोटी-ताजी ऊटनी दिन मे साठ कोस चलती है और दुबली-पतली सौ कोस। तुम जाकर

ठगनिया राजा का बेटा का पलंग पर बइठ गइल। कहे लागल—"देख राजा, तोहार जान बचा देनी, अब तू सत बत कर कि हमरा से विआह करके आपन रानी बनइबऽ। राजा के बेटा मुंडी हिला देलन। ठगनिया कहलस कि घोड़सार में दूगो सांढ़िन बान्हलवा। एगो खूब मोटाएल बा, ऊ दिन में साठ कोस चलेला आ एगो के हाड़ निकलत्वा, ऊ सै कोस चलेला। तू जाके सै कोस वाली सांढिन ले आव तले हम तैयार होखत बानी। राजा के बेटा घोड़सार को चललन आ ठगिनिया अमरखाना से हिरा जवाहिर निकारे लागल। राजा के बेटा घोड़सार में गइलनन, उनका भरफटाह सांढ़िन न जंचल। ऊ मोटकरिये के खोल ले अइलन। ठगिनिया देखलस कि साठे कोस वाली साढ़िन राजा ले आइल बाड़न! बोकरा मने मन त दुख भइल फेर सोचलक कि जे राम करेलन सेही होखेला। आ ऊ हीरा-जवाहिरात के मोटरी लेके सांढ़िन पर बइठ गइल आ राजा के बेटा के बइठा के सांढ़िन हांक देलक।

होत बिहान सब ठगवा ठगिनिया वोह घर में आवतवा जाहां राजा के बेटा सूतल रहस। त देखत बा कि ना रजबेवा ना बोकर बिहनिये बा। ठगवा सोचलन स कि हो ना होय रजवा के बेटला हमरा बहिनिया के कमजोर पाके बोकरो के लेलेलक हवे आ अमरखाना से हीरा-जवाहिरात भी चोरा के गइल हवे। एगोड़ा दउड़ल घोडसार में गइल आ देखलक कि सै कोस वाली सांढ़िन बा। अब का रहे, ऊ फान के वोपर चढ़ गइल आ सांढ़िन के हांक देलक।

राजा के बेटा आ ठगिनिया साठ कोस पर जाके एगो गाछ तर बइठल रहे तले ठगवा के सांढ़िन पर ठगिनिया के नजर परल। ऊ राजा के बेटा के सिखा के गाछ पर चढ़ जायके कह देलस आ अपने ठगवा के अगाड़िये जाके कहे लागल—देख भइया, दहिजरा के बेटा हमरा के बान्ह के चोर बले आवत रहलख। तोहरा के देखते गाछी पर चढ़ गइलवा। ठगवा सोचलक कि बहिनिया ठीक कहत बा। ऊ झट से साढिन पर से उतरि के गाछ पर चढ़ गइल। ठगिनिया तले साठ कोस चले वाली सांढ़िन के एगो गोड़वे खांड से काट

उस दुबली-पतली ऊटनी को खोल लाओ, तबतक मै यहा धन-डेरा बाध कर इकट्ठा करती हू।" राजपुत्र घुडसार मे पहुचा। उसे दुबली-पतली ऊटनी न जची। वह मोटी-ताजी ऊटनी को खोलकर ले आया। जब ठग की बेटी ने देखा कि राजकुमार साठ कोसवाली ऊटनी ले आया है तो उसे दु ख हुआ। फिर सोचा कि जो ईश्वर करता है, वही होता है। उसने धन-दौलत की गठरी ऊटनी पर रखवाई, फिर दोनो उसपर सवार हो गए। ऊटनी आगे बढ चली।

सवेरा होने पर ठग उस कमरे मे पहुचा, जहा राजपुत्र सोया था। वहा पहुचकर वह अचभे में रह गया। वहा न राजपुत्र था, न उसकी छोटी बहन। वह समझा कि राजकुमार मेरी बहन को बलात् पकडकर अपने साथ भगा ले गया है। उसने जाकर घुडसार मे देखा तो सौ कोस चलनेवाली ऊटनी वहा थी। वह कूदकर उसपर चढ गया और उनका पीछा किया।

राजपुत्र साठ कोस जाकर एक पेड के नीचे ठहर गया। इतने मे ठग की पुत्री की निगाह भाई की ऊटनी पर पडी, जो उसी ओर आ रही थी। उसने राजपुत्र से कहा, "तुम फौरन पेड पर चढ़ जाओ। देखो, वह मेरा भाई ऊटनी पर सवार होकर हमे पकडने आ रहा है।" राजपुत्र पेड पर चढ गया और ठग की पुत्री आगे बढकर अपने भाई से मिली। कहने लगी, "देखो भैया, यह अभागा राजपुत्र मुझे बाधकर ले आया है। तुम्हे देखकर पेड पर चढ गया है।" ठग ने अपनी बहन की बातो पर विश्वास किया। वह ऊटनी पर से उतरकर पेड पर चढ गया।

ठग की पुत्री ने इधर साठ कोस चलनेवाली ऊटनी का एक पैर कटार मारकर घायल कर दिया और वह सौ कोस चलनेवाली ऊटनी पर सवार हो गई। राजपुत्र इस डाल से उस डाल पर भागता और ठग उसका पीछा कर रहा था। इसी समय ठग की बेटी नीचे से बोली, "भैया-भैया, देखो राजपुत्र डाल से कूदना चाहता है।" इतना सुनते ही राजपुत्र ठग की पुत्री की ऊटनी पर कूद पडा। दोनो सवार होकर चल दिये। बेचारा ठग पेड से उतरकर जब नीचे आया तो देखता क्या है कि उसकी ऊटनी तो राजपुत्र

देलस आ अपने सै फोसवाली पर चढ गइल। राजा के बेटा येह डार से वोह डार पर भागत रहस आ ठगवा उनकरा के चहेटत रहे। तले ठगिनिया कहलस—देखरे भैया, राजा के बेटा अब दोल्हे के चाहत वा। येतना बात सुनते राजा के बेटा दोल्ह साढ़िन का पीठ पर कूद गइलन आ ठगिनिया साढ़िन के हाक देठक। ठगराम जब गाछी पर से उतर के साठ कोस वाली सांढिन का लगे आवताड़न त देखत बाड़न कि ऊ त लंगड़ हो गइल वा। तले सांढ़िन त काहां से काहां चल गइल; ठगराम अछता पछता के रह गइलन।

कुछ दूर जात जात राजा के बेटा सोचे लगलन कि ई लड़की के कवनो बिसवास गइखे, जब ई अपना सहोदर भाई के न भइल आ तनका परेम खातिर वोकरा के धोखा दे देलकत हमार कवन विसात वा। हो सकेला कि हमरो से कवनो खबसूरत जवान भेंट हो जाय त हमरो जानमार के ई वोकरा सगे चल जाई। आखिर त छोटकेनू। येकर तनतानो होई त वोकरो वुधिया येकरे जइसन होई। ई सब बात सोच समुझि के राजा के बेटा खाड़ निकलन आ पछाड़िये से एके हाथ में ठगिन के दू टुकड़ा कके सांढ़िन पर से ढाह देलन। जात जात राजा के बेटा अपने मकान पर पहुंचलन। उनकर बाप मतारी केतना दिन पर अपना बेटा के देख के निहाल हो गइल लोग। राजा तले बूढा हो गइल रहस। अब का रहें ऊ अपना बेटा के राजा बना देलन आ बोजीर के बेटा बोजीर हो गइलन। बुढ़ऊ राजा आ वोजीर जंगल में तपसेया करे चल गइल लोग। राजा के बेटा राज-काज सम्हारे लगलन।

तथा उसकी बहन ले गई है और दूसरी ऊटनी पैर से लंगडी हो गई है। पीछा करने का कोई साधन न रहने से वह मन मारकर रह गया।

थोडी दूर आगे जाने के बाद राजपुत्र ने सोचा कि इस ठगपुत्री का क्या भरोसा! जब यह अपने सगे भाई को धोखा दे सकती है, तब मेरी क्या बिसात! यदि मुझसे अधिक सुन्दर कोई दूसरा जवान मिल जायगा तो वह मुझे मारकर उसके पास चली जायगी। आखिर है तो छोटी जाति! ऐसा सोच राजपुत्र ने पीछे से तलवार निकाली और ठगपुत्री का सिर काटकर नीचे फेंक दिया। उसके धड को भी नीचे गिरा दिया। इसके बाद राजपुत्र चलते-चलते घर पहुचा। उसके मा-बाप को बडा आनन्द हुआ। राजा बूढे हो गए थे। राजा ने पुत्र का राजतिलक कर दिया। वजीर का पुत्र उसका वजीर बन गया। बूढे राजा और मन्त्री तपस्या करने के लिए जगल में चले गये। नए राजा ने राज्य की व्यवस्था सभाल ली।

मैथिली

एक गोट बकरी छल। ओकरा कतेक कबुला पाती कयला क बाद एकटा बेटा भेलै। जखन ओ छौ मासक भेलै, तखन आसिन क दशमी पूजा लगि घा गेलै। छागर क गहाइक सब आबय लागल। छागर वाला बेचैलय उद्यत भय गेला। दाम दीगर सब ठीक भय गेलै। मुदा गहाइक के संग में सबटा दाम नहि रहैच। तं काल्हि भिनसुरका बात कहि गहाइक चल गेल।

राति भेनें बकरी अपना बेटा (छागर) कें कहलक जे बन्ड, तूं कते देवें सेबें एकटा बेटा भेलै। ओ तोरा कनियेंटा सें पोसलयौ। मुदा काल्हि मालिक तोरा दशमी पूजा लै बेचि लेतौ। तें तों रातिये राति गाम घर छाड़ि कय जंगल चल जो। जाहि ठाम मनुष्य सें भेंट नहि होक। जं बच में तं हमर नांव रहत।

छागर राति में गाम घर छाडि पडागेल। कोनो भारी बोन में चल गेल। ओकरा बोन में दू तीन वर्ष बीत गेल। ताबत ओ वड़काहा भय गेल। वड़ पैघ मोंट सोट देह, नमहर नमहर दाढ़ी आ सिंघ। आब ओ छागर[1] सें वत्तू[2] भय गेल छल। एक दिन ओ संयोग सें दोसर जंगल गेल। ओकरा ओहि ठाम एक गोट बाघ सें भेंट भय गलै। वत्तू बाघ कें देखि डरा गेल आ बाघो वत्तू कें देखि डरा गेल। कारण, बाघ एहेन जानवर पहिलें नहि देखनें छल। दूनू एक दोसर के देखैंन डरायल डरायल ठाढ़ छल। थोडे क कालक क बाद बाघ कहलकै—

नामी नामी दाढी मोंछ भकुला,
कहू कते सें अबैछी, नें तं देव ठकुरा[3]।

---

१. बकरी का बच्चा, २. बिजावर बकरा, ३. धान कूटने का औजार

बकरा

हिन्दी रूपान्तर

एक बकरी थी । कितनी ही मन्नतो के बाद उसके एक बच्चा पैदा हुआ । जब वह छ' महीने का हुआ, उस समय कुआर मे दुर्गापूजन का समय पास आ गया था । बकरे के ग्राहक आने लगे । बकरेवाला बेचने को तैयार हो गया । मूल्य तय हो गया, लेकिन ग्राहक के पास देने को पूरे दाम न थे । इसलिए वह दूसरे दिन सुबह दाम देकर बकरा ले जाने की बात पक्की कर गया ।

रात होने पर बकरी अपने बच्चे से कहने लगी, "बेटा, तू मेरी इकलौती संतान है । तुझे बचपन से लेकर अबतक पाला-पोसा है । लेकिन कल तुझे दुर्गा-पूजा के लिए मालिक बेच देगा । इसलिए तू आज ही रात को गाव छोडकर किसी ऐसे जगल को भाग जा, जहा आदमी मिले न आदम जात, नही तो तू मारा जायगा । यदि तू बचा रहेगा तो मेरा नाम तो रहेगा ।"

बकरी का बच्चा रात को ही गाव छोड कर भाग गया । वह एक बियावान जगल मे जा पहुचा । वहा उसे तीन साल बीत गये । अब वह बच्चे से बढकर एक बड़ा मोटा-ताजा बकरा हो गया । बडी-बडी दाढी और सीग निकल आये ।

एक दिन वह सयोग से किसी दूसरे जंगल में गया । वहा एक बाघ से उसकी भेंट हो गई । बकरा बाघ को देखकर डर गया । बाघ भी बकरे को देखकर सहम गया । कारण, बाघ ने ऐसा जानवर पहले नही देखा था । दोनो एक-दूसरे से डरते हुए खडे थे । कुछ देर बाद बाघ बोला '

लम्बी-लम्बी दाढी-मूंछ मटमैला,
कहो कहां से आते हो, नहीं तो मारूँ एक चांटा ।

तखन वत्तू कहलकै—

अरचुन्नी खेलौं गर चुन्नी[1] खेलौं, सिंह खेलौं सात।

आ जहिया दस बाघ नें होऐ, तहिया परौं ठकदय उपास।

ई बात सुनितें बाघ बेचारा भागि गेल। तावत रास्ता में मढिया[2] पंडित ओकरा भेट लैं। ओ बाघ कें पुछल कैं जे सरकार किये अहां अपस्यांत पडायल जाइछी? बाघ कहलकै कैं जे पंडित जी, की कहव? जंगल में एकटा भारी जानवर आवि गेल आछि। ओकरा एक एक हाथ क दाढी ओ सिंघ छैल। ओ कहैत आछि जे सातटा सिंह ओ दसटा बाघ हमर एक दिनुक भोजन अछि। तकरैं डरें पड़ायल जाइछी। नहितं हमरो खा लेत। मढिया हंसै लागल आ कहल कैं—सरकार, अपनें तं वलो डेराइछी। ओ तं बकरी का बेटा वत्तू थीक। ओकरा तं अहा एकहि बेरि में मारि देवौ। चलू, आइ बढ़ियां भोजन पैरि लागि गेल। पहिनें तं पडितक बातपर खातिर नहि भेलैं, किन्तु बहुत कहला सुनला क बाद बाघ मढ़िया क टांग में डोरी बान्हि कय अपना टांग में बान्हि लेलक आ चलल।

जखन वत्तू एहि दून्नू गोटाकें अवतं देखलकै तं सोचै लागल जे पंडित हमर परिचय कहि देलकै अछि। एही द्वारे दून्नू गोटे आबै अछि। आब जान नहि बाचत। तैयो अपन भरि युक्ति रची। ई सोचि कहलकै पंडित सैं जे दोस्त, हम अहां कें दू गोट बाघ आनय कहलौं, अहां एकेटा अनलौं। एते बात सुनितें बाघ बुझलक जे मढिया एकरैं द्वारे हमरा परतारि कय अनलक अछि, ई सोचि बघवा पंडित कें घिसि औनैं तिसि औनैं प्राण लय कय पड़ायल। यावत् मढ़िया हां हां कहैक, तावत् बघवा दश बीस फान मारलक, जाहि में मढ़िया मरि गेल आ बाघ ओ जंगल छाड़ि दोसर जंगल पड़ा गेल। तखन सें वत्तू ओहि जंगल में अनरे चरै लागल।

---

१. एक प्रकार की मछली का नाम २. सियार

बकरा बोला .

अर चुन्नी खाई पर चुन्नी खाई, सिह खाये सात ।
और दिस दिन दस बाघ न हो, उस दिन करता हूं उपास ।।

बकरे की बात सुनते ही बाघ बेचारा डरकर भाग गया । आगे रास्ते मे उसे एक सियार मिला । उसने बाघ से पूछा, "वनराज, आप आज घबडाये हुए से कहा भागे जा रहे है ?" बाघ ने खडे होकर दम लेते हुए कहा, "पडित-जी, कुछ न पूछो, आज इस जगल मे एक भारी जानवर आ गया है। उसके एक-एक हाथ की दाढी और सीग है। कहता था कि सात सिह और दस बाघ मेरा एक दिन का भोजन है। उसीके डर से भागा जा रहा हू । अगर नही भागू तो वह मुझे खा जायगा ।" सियार हँसने लगा । बोला—"आप धोखा खा गये है, इसीलिए इस तरह डर रहे है । वह तो बकरी का बच्चा है ! उसे तो आप एक चाटे मे ही मार सकते है । चलिए, आज बढिया भोजन हाथ लगेगा । बाघ को पहले तो सियार की बात पर भरोसा न हुआ, परन्तु बहुत-कुछ कहने-सुनने पर बाघ राजी हो गया । उसने रस्सी से सियार का पाव अपने पांव मे बाध लिया । दोनो चले ।

बकरे ने जब इन दोनो को आते देखा तो वह सोचने लगा, शायद सियार ने मेरी पहचान करा दी है । इसीलिए दोनो इस ओर आ रहे है । अब प्राण नही बचेगे । तो भी कोई-न-कोई तरकीब भिडानी चाहिए। ऐसा सोचकर बकरे ने सियार से कहा, "दोस्त, मैंने तो तुमसे दो बाघ लाने के लिए कहा था, तुम एक ही लेकर आ गए ।" इतनी बात सुनते ही बाघ समझा कि सियार मुझे चकमा देकर ले आया है । वह भाग खडा हुआ । जबतक सियार कुछ कहे तबतक बाघ तो दस-बीस छलाग मार चुका था । घसिटते-घसिटते सियार के प्राण-पखेरू उड गये । बाघ उस जगल को छोडकर दूसरे जगल मे चला गया । तब से बकरा उस जगल मे मजे मे चरने और विचरने लगा ।

राजस्थानी

एक राजा कही देस री। तैंरी नाम वीरभाण। सु और कुंवर खरच करतो देखै कयु नहीं। रुपीयो कांकरी बराबर कर खरचै। तद इयै रै तीन्ह जणां मेल्ह एक ब्राह्मण, एक लोहार, एक सुथार। इहां सूं कुंवर रै बडोस्यार। तद राजपूत कामदारे मेलै हुए नै कुंवर नुं कही राज थे खरच निर्भय थका करो छो। हर कहीं रजपुत सूं प्यार नहीं। सु राज करण करो ठीक नहीं। इहां इतरी कही तद कुंवर कही ग्यावण खरचणारो अर राज गै तो जैनै श्री परमेश्वरजी दीयै तैरा छै। ए तीन्हों सों मेल छै। इसु अै म्हारी देही छै। वेला वुरो रा सीरो छै। जितरै म्हाराज क्या छै इतरै थे सरब म्हारा छो। अर सायं हुतो कुंवर इतरी कही तद लोके कहीं थांरो ऐमोहीज धीरज दीसै छै। परमेसर देसी तदहीज राज लेसो। तद कुंवर कही म्हे जदहीज लेसां तद परमेश्वर देसी अर जिके मनुषा धीरज वंत हूं तिकारा कारज परमेश्वरजी करसी। इतरी कहि नै और दूहो कहै॥

दूहो॥ सूरां अर सतवादियां धीरां एक मनाह। दई करेसी कामडा अरंड फलेसी ताह॥१॥ और दूहो कुंवर कहीयो ता पाछै लोग सरब कुंवर सुं लाग करै। तद लोका तो राजा री छोटी राणी नुं भरवाय नै कुंवर नुं देसौटो देरायो। ब्राह्मण लोहार, सुथार ये तीन्हो साथ छै। तहरां अै उतर देस नुं चालीय जावै। तठै कहीं समुंद्र रै तीर गया। उठै एक रोही हुती तठै रोही मांहे एक सुथार घर वासीदार रहै। सु उडण खटोलणी री हुनर जाणै। उठै थैठो घडै। पद अै च्यार आय निसरीया छै। इहां च्यारां ही नुं च्यार रौ सीधो अर स सो उतरै तद ब्राह्मण रसोई करै। अै च्यारे जीमै इयै भांत माता मता अठै सुथार रे आया। तद कुंवर सुथार नूं पुछीयो।

हिन्दी रूपान्तर

किसी देश मे एक राजा था। उसका नाम था वीरभान। उसका पुत्र खर्च करने मे कुछ भी नही देखता था। पानी की तरह रुपये वहाता था। उसके तीन साथी थे एक ब्राह्मण, एक लुहार, एक बढई। राजकुमार का इनसे बडा प्रेम था। एक दिन राजपूत कामदारो ने इकट्ठे होकर राजकुमार से कहा कि हे कुमार, तुम अनाप-शनाप खर्च कर रहे हो और किसी राजपूत से तुम्हारा प्रेम नही। राज्य का काम करोगे कि नही ? कुवर ने कहा, "खाना, खर्चना और राज्य ये तो जिसे परमेश्वर देता है उसके है। वाकी इन तीनो से प्रेम है, इसलिए ये मेरे ही शरीर है, बुराई-भलाई के साथी है। जितने दिन परमात्मा की कृपा है, उतने दिन तुम सब मेरे हो और जब भगवान् की दया न रहेगी, तव ये तीनो ही मेरे साथी होगे।" यह सुनकर लोगो ने कहा, "तुम्हारा धैर्य ऐसा ही दीखता है, परमेश्वर देगा तभी राज्य लोगे ?" राजकुमार ने उत्तर दिया कि हा, मै तभी लूगा, जब परमेश्वर देगा और जो मनुष्य धैर्यवान है उनके कार्य भगवान् करता है।

शूरवीर सत्वव्रती धीरो का मत एक।
दई करेगा काम फल एरंड देगा नेक॥

इसके बाद से सब लोग राजकुमार से ईर्ष्या करने लगे। उन्होने राजा की छोटी रानी को बहकाकर कहा कि वीरभान को देश निकाला दे दो तो राज तुम्हारा हो जाय। रानी ने राजा को बहकाकर राजकुमार को बनवास दिलवा दिया। ब्राह्मण, लुहार, और बढई, ये तीनों साथ थे। अपने राज्य से निकलकर उत्तर देश की तरफ चले। चलते-चलते समुद्र के किनारे पहुंचे। उधर एक वन था। उसमे एक बढई घर बनाकर

कह्यों रे तूं अठै क्यों एकलो रहे छै। सहर तो कोई नहीं। जद सुथार कही जी अठै वस्तु हूं बणाऊं सूं तेरे आसरै रहू छूं। तद कुंवर कही रे एक माणस म्हारो तूं पासै मजूर राखै तो राखा। तद इयै कही राखीस।

जाहरां सूतहार नु उठै राख हर कही उडण खटोलणी री हुनर सीख अर आवे। सूथार नुं उठै रातिनै आघा चालीया। तीनें अर जावता चले जावता एकै रोही मांहे गया। देखै तो एक लोहार रहे छै। उवै रोही मांहे ताहरां उवै लोहार रै जाय नितरीया। तद लोहार नु पण पूछीयो। वहां रे तूं अठै एकलै घर मांडीयो छै। सू कासूं करै छै। तद लोहार कही राज हूं अठै बावडी रै पाणी सूं पाण देनें तरवार करूं छूं। सु तिका तरवार लाख रूपीया लाख लहै छै। जदै कुंवर लोहार नुं कही रे लोहार एक म्हारो चाकर तो पासै राखै तो म्हे राखां। तद इयै कही जो राखीस ताहरां कुंवर लोहार नुं कहो तूं अठै रहि अर तरवार को हुनर सीख हर आयें। लोहार नुं उठे राख हर अै आघा चालीया। तिके चालीया चालीया एकै रोही मांहे आया। उठै एक ब्राह्मण री घर। उठै ब्राह्मण तपरो हो रहै। तद कुंवर ब्राह्मण रै घरे गयो। उठे जाय ने ब्राह्मण नुं पूछी। कहो देवता तूं अठै क्युं रहै छै रोही मांहे। तद ब्राह्मण कहो आठै हूँ एक विद्या सीखूं छूं। विद्या री जाप मृतंजय री जाप छै। पु जपै सु तीन वरसो मूवौ जीवै। तद कुंवर कहो। आपरै नै ब्राह्मण नुं कही अठै रहि और मन्त्र सीख अर आयु। तद ब्राह्मण कही जो हूं थानै कठै मिलीस। तद कुंवर कही सूतहार उडण खटोलणी ले आसी तेरै साथ आयजो। तद ब्राह्मण नुं उठे राख हर आप घोडै चढि एकलो आघो चालीयौ। तिको किही पहाड मांहे गयौ। एकै पहाड री गुफा दीठी। तद कुंवर मांहे वडीयौ। सु आघो जावो तौ कासु चानणो दीसै। तद वलै आघो गयौ पद आगे देखै तौ कासु एक वडो सहर छै पण राखस सूनो कर राखीयौ छै। बाजार री हाटा मता सु भरी पडी छै। आगै देखै तौ कासुं घर पण सूना पडीया छै। मताह घणी ही पण मनखरी जात नहीं। तद और घोडे चढीयौ। आघै गयौ आगै देखै तौ कासुं कोट छै महलायत छै। जठै एक कन्या कही राजा री छै। तिका राखस ले आयी छै। सु पालणै मै बैठी हीडै छै। नाम फूलमती छै।

रह रहा था। वह उडनखटोले की विद्या जानता था और वहा बैठा-बैठा खटोले बनाया करता था। ये चारो उधर आ निकले। जब चारो के ही खाने का प्रबध होता तभी ब्राह्मण रसोई करता और चारो भोजन करते। इस प्रकार घूमते-फिरते बढई के पास आये। राजकुमार ने बढई से पूछा, "तुम यहा अकेले क्यो रहते हो, पास मे कोई शहर तो है नही ?" बढई ने उत्तर दिया, "अजी, मै यहा पर एक चीज बनाता हू, जिसके लिए रहता हू।" राजकुमार ने कहा, "हमारा एक आदमी तुम मजूर बनाकर रख लो तो रख जाय।" बढई ने कहा, "रख लूगा।"

कुमार ने अपने बढई साथी को वही छोडा और उससे कहा कि उडन-खटोले का हुनर सीखकर आना। उसे छोडकर तीनो आगे चले। चलते-चलते एक जगल मे जा निकले। वहा देखते क्या है कि एक लुहार रहता है। वे उस लुहार के पास गये और उससे पूछा, "कह रे, तू यहा घर बनाकर अकेला क्यो रह रहा है ?" लुहार ने उत्तर दिया, "मै यहा बावडी के पानी से तलवार पर धार चढाता हू, जिसके लाख-लाख रुपये मिलते है।" तब राजपुत्र ने कहा, "लुहार, तू अपने पास हमारा एक आदमी रख ले।" वह तैयार हो गया। कुमार ने लुहार साथी से कहा, "तू यहा रह और तलवार का हुनर सीखकर आ।" लुहार को छोड वे आगे बढे। चलते-चलते एक जगल मे पहुचे। वहा एक ब्राह्मण का घर था। वहा वह अकेला ही रहता था। कुमार उसके घर गया और वहा जाकर ब्राह्मण से पूछा, "देवता, तू यहा जगल मे क्यो रहता है ?" ब्राह्मण ने कहा, "यहा मै एक विद्या सीख रहा हू। विद्या का जप मृत्युजय का जप है। जो जप ले तो तीन वर्ष का मुर्दा जी जाय। राजकुमार ने ब्राह्मण साथी से कहा, "तुम यहा रहो और मत्र सीखकर आओ।" ब्राह्मण ने कहा, "मै आपसे कहा मिलूगा ?" कुमार ने कहा, "बढई उडनखटोला लेकर आयगा, उसके साथ आ जाना।" तब ब्राह्मण को वहा रखकर आप घोडे पर चढकर कुमार अकेला आगे बढा। वह किसी पहाड पर पहुचा। वहा एक गुफा दिखलाई दी। कुमार उस गुफा मे घुसा। जब आगे गया तो उसे कुछ

कुंवर नुं देख बहुत राजी हुई। तद कुंवर फूलमती मां नों देख आयो महल मांहे आयो। देखै तो गासुं बहुत सुन्दर। कुंवर रो मन इयेमों लागो अर फूलमती कुंवर नुं बोहत राजी हुई। तद फूलमती बोली रे मानवी तूं आठै कांसु आयो। अठै राखस आयो तो तनें मारसी तद कुंवर कही तो तेइ गत सु मेइ गत। तद फूलमती कही गत कांसूं करें तो नुं राखस मारसी। तद कुंवर कही राखस मारसी तो एक बार तो तूं मोनुं अंगीकार कर। तद फूलमती कही। हूं कुंवारी छूं। तद कुंवर फूलमती नुं हाय पकडकर फेरा ले नें परणीज अर उठै भोगवी। तैसो अें राखस रो डर री मारो संकोचीज अर रही हंती तद कुंवर री हाथ लागी तौसुं फूल गई। तद इयें कुंवर नुं कही इयेंतूं बल बांध अर राखस नुं मार नहीं तो आपा बिहनुं मारसी। ताहरां कुंवर खडग लें खणें छिर ऊभौ छैं। अर राखस आयो तद आवतेंज फूलमती नुं फूली दीठी। तद राखस कही फूलमती तो आज जोबन सो फूलीया छैं। तद फूलमती कही हुवै राज फूलियां छां। इतरें राखस बारणें मांहे नीचो सिर कर वडतौ हतो अर कुंवरे खडग बाह्यो तेंमुं राखस मारीयौ। इवै ए राखस मार आपरी सहर कर सूबो करें छे। तद सहर मांहे सींह आयो। ताहरां फूलमती कही . . . . राजा सिंह आयो छैं। तद उठै कुंवर सिंह नुं मारीयौ। तद बीजें दिन हाथियां री डार आयो। तद वीरभाण जिको आगे वडो कुंजर हतो तिको मारीयौ। तद और हाथी नाठ गया। ताहरां कुंवर हाथी रो मायो चीर अर गज मोती काढ फूलमती रें मोहडें आगें ढिग कीयो। तैसो इयें एक साडी घाघरो मोतिया री कीयो एडो साहिबी करें। नदीसूं राणी कल खांणी कलस पाणी रो भर ले आवें अर रसोई करें। तद कुंवर पांच पाताल परिसाय नें दोय पातल ताप राणी जीमें अर तीन्ह पातल छैं सु पंखी जनावरां नें घातें। जाहरां कुंवर नूं राणी पुछीयौ कही राज ए पातल तीन थे। परिसायर थे।

जनावरा नें कंरें नांव घातो छो सु कहो। ताहरां कुंवर कही वैराना साच कहीजें नहीं। ताहरां रांणो कही तो हूं थाहरो अरध सरीरी किसी बिध छुं अर में थारें पगां राखस ने मरायो अर थे मना सांच कहो नहीं तो थांहरो प्यार किसो। ताहरां कुंवर कही म्हारा तीन्ह चाकर छैं। हूं बीच राख आयो

रोशनी दिखाई दी । और आगे बढा तो देखता क्या है कि एक बडा भारी शहर है, किन्तु राक्षस ने उसे सूना बना रखा है । बाजार की दुकाने माल से भरी पडी है । और आगे क्या देखता है कि घर सूने पडे है । माल तो खूब है, पर मनुष्य का नाम नही । घोडे पर चढकर वह आगे बढा । आगे देखता क्या है कि कोट है, महल है । वहा किसी राजा की एक कन्या है । उसे राक्षस ले आया है । वह झूले मे बैठी झूल रही है । नाम था उसका फूलमती ।

राजपुत्र को देखते ही वह बहुत खुश हुई । कुमार फूलमती को देखकर आगे आया । देखता क्या है कि कुमारी बहुत ही सुन्दर है । कुमार उसपर मोहित हो गया और कुमार को देखकर फूलमती बहुत खुश हुई । फूलमती कहने लगी, " हे राजकुमार, तुम यहा कैसे आये? यदि राक्षस यहा आ गया तो तुम्हें मार डालेगा ।" कुमार ने कहा, "अब मै तुम्हारी ही शरण हू ।" तब फूलमती ने कहा, "राक्षस मारेगा तो देखा जायगा, एक बार तुम मुझे स्वीकार कर लो । मै कुमारी हू ।" राजकुमार ने फूलमती का हाथ पकडकर भावर लेकर उससे विवाह कर लिया और उसके साथ आनन्द मनाया । राक्षस के डर की मारी सकोच से रहनेवाली फूलमती अब कुमार के हाथ लगने से खिल गई । उसने राजकुमार से कहा, "अब तुम तैयार हो जाओ और राक्षस को मार डालो, नही तो वह हम दोनो को मार डालेगा ।" कुमार खड्ग लेकर कोने मे छिपकर खडा हो गया । राक्षस आया तो आते ही उसने फूलमती को खिली हुई देखा । राक्षस ने कहा, "फूलमती तो आज यौवन से फूली हुई है ।"

फूलमती ने कहा, "हा, फूली हुई हू ।" इतने मे राक्षस दरवाजे मे सिर नीचा करके घुसने लगा । राजकुमार ने खड्ग का वार किया । राक्षस मारा गया । राक्षस को मारकर शहर को अपना बनाकर राजपुत्र मौज करने लगा । एक दिन शहर मे एक शेर आ गया । फूलमती ने कहा, "महाराज, शेर आ गया है ।" राजकुमार ने शेर को मार डाला । दूसरे दिन हाथियो का झुड आया । राजकुमार ने आगे के सबसे बड़े हाथी को मार डाला । और हाथी भाग गये ।

छुं। तेना ए पातलां परासूं हुं। फुलाणी राजा री बेटी छुं। इयैं भांति निसरीयो छुं। जेसा तरह नीसरीया सो बात भांड हर कही। उवैं आयसैं ताहरां आपां देस जासा। एक दिन रांणी पांणी नुं गई हुंती तठै मोजड़ी तिलकी सुं पांणी मांहि गई। तद मोजड़ी मछरै हाथ आई। सु मछ नीगली। तद रांणी दीठौ एक मोजड़ी नहीं तो हेकै नूं कामूं करुं। तद रांणी बीजी मोजड़ी पग सुं चलाय पहाड़ की गुफा माहे राखी। आप पांणी ले घरे आई अर मोजड़ीयो बीजो जोड़ो करायो। अर ऊ मछ कही भांत उठै नदी नदी चलीयो तिको कठैक हीं कावल दिसै कही राजा रै देस आयो। राजा रै मछ तेल करावणो हुंतो। तद नदी माहे जाल नाखीयो। तद मछ सौ जाल माहे आयौ। तद राजा मछ री पेट चीरीयो तै म्हां उवा मोतीयां की जोड़ी लाख रुपीयां की नीसरी। तद मोजड़ी पैदास करी तो जैनुं आमो राज अर बेटी परणाऊं तद औ ढंढोरो राजा रै रनवास हुंतो नाई तैरी बहू सुणीयो। तद नाई री बहू नाई नूं कहीयो जु राजा कहै तो आ मोजड़ी कासूं छै इमैं यो जोड़ो रै पैरणहार सुं पैदास करुं। नायण दूती हुंती। नाई जाय राजानुं कही म्हाराज म्हारी नायण कहै छे। म्हाराज कहै तो मोजड़ी री कासूं चली जेरी आ जोड़ीरी मोजड़ी छै तैनुं पैदास करुं। तद राजा कही सावास आहोज आहोज बरीया ले आवो। ताहरां नायण राजा पास खरची लेने आदमी दस वीस ले नै एक डूंडे करायनै नदी नदी चाली। तठै जेही सहर मांहे नदी आवै सहर मांहे जाय साहूकार रा घर देखै बैरा रा गहणा बेस पहरीया तेठे देखै तद पाछी आय टूडे देखती उवैं सूनै सहर आई। तब उठै पिण डूंटी ऊभी राख सहर मांहे वडण लागी। तद एकण खूणी उवा बीजी पण मोजड़ी पड़ी दीठी तद नायण जूती उठाय लीवी अर पाछी आय जूती तो चाकरां नुं दीवी। कही जूती की घणीयांणी पण अठै हुसी। तद नायण गुफा मांहकार भीतर गई। आगे सूनी हाटां पडी छै कंदोई री पण हाटां मिठाई सों भरी पड़ी छै। तद नायण मिठाई री पांड भर हर बाहर जाय रजपूतां नुं देइ आई। रजपूता नै कठै ही रोही माहे राखि आई। अर आप भीतर गई। आगै जा देखै तो कासूं फूलमती बैठी छै। हींडोला माहें छै।

कुमार ने हाथी का मस्तक चीरकर तथा गजमुक्ता निकालकर फूलमती को दिया । उसने एक साडी तथा लहगा मोतियो का बनाया । वहा ये राज्य करने लगे । रानी पानी का कलश भरकर ले आती और भोजन बनाती । पाच पत्तलो मे भोजन परसकर उनमे से दो पत्तलो मे कुमार तथा रानी भोजन करते और शेष तीन पत्तलो को पशु-पक्षियो के सामने डाल देते । इसपर रानी ने एक दिन कुमार से पूछा, "महाराज, ये तीन पत्तल परसकर पशु-पक्षियो को किसके नाम से डालते हो सो मुझे बतलाओ ।" कुमार ने कहा, "स्त्रियो से सच्ची बात नही कहनी चाहिए ।" रानी ने कहा, "फिर मै तुम्हारी अर्द्धांगिनी किस तरह ? और मैने तुमसे राक्षस को मरवाया, फिर भी तुम मुझसे सच्ची बात नही कहते तो तुम्हारा प्यार कैसा ?" कुमार ने कहा, "मेरे तीन चाकर है, जिनको मै रास्ते मे ही छोड आया हू । उनके लिए ये पत्तले परसता हू । मै राजा का लडका हू । इस प्रकार निकला हू ।" जिस तरह देश-निकाला मिला था, वह बात उसने कह दी तथा यह भी कहा कि जब वे आयगे तब हम अपने देश चलेगे ।

एक दिन रानी पानी लाने के लिए गई थी । वहा उसकी जूती फिसलकर पानी मे गिरी । वह जूती एक मच्छ के हाथ लगी । वह निगल गया । रानी ने देखा कि एक जूती तो है नही, तो एक का क्या करूगी ।" इसलिए रानी ने दूसरी जूती पैर से निकालकर पहाड़ की गुफा मे रख दी । आप पानी लेकर घर आई और जूतियो का दूसरा जोडा बनवा लिया । उधर सयोगवश मच्छ नदी मे चलता हुआ उसके किनारे काबुल की ओर किसी राजा के देश मे आया । उस राजा को मछली का तेल तैयार करवाना था । इसलिए नदी मे जाल डलवाया गया । यह मच्छ उस जाल मे आ गया । जब राजा ने मच्छ का पेट चिरवाया तो उसमें एक लाख रुपयो की मोतियो की जूती निकली । उस जूती को देखकर राजा ने यह ढिढोरा पिटवाया कि जो इस जूती के जोडे का पता लगायगा उसे आधा राज्य और बेटी दूगा । राजा के इस ढिढोरे को राजा के नाई की स्त्री ने सुना । नाइन ने नाई से कहा कि अगर राजा कहे तो यह जूती तो क्या, इस जूती की पहननेवाली

तद नायण जाय बरायां लीना अर कही घोलो जावां म्हारी भाणोजी हूं उपर। इतरी कहि नाइन पास जाइ बैठी। कही तू म्हारी भाणोजी छै हूं थारी मागी छुं। तद फुलमनी कही तो वोहोत भलो। तद नायण पूछो कही थारी धणी कठै छै। तद इवे कही सिकार गयो छै। तद नायण इयें नुं पीठी कर सनान कराय मायो गूंग तैयार कीवी। इतरै कुंवर सिकार ले आयौ।

तद कुंवर फूलमती नुं पुछीयो आ कोण छै। तद रांणी कही म्हारी मासी छै। तद इयें रै मन सरोघाहि हुंतो तद उठै इयें नुं राखो आ उठै नायण रहै अर हीड़ा करै। रजपूता तूं सीधो मिठाई ले जाय देवै। इयें भांत यहवे। रहिता नायण फूलमती नुंकही एक हूं अखद जाणा छां तैसुं तेहु बोहोत सुख हुसी। तद फूलमती कहो तो बणाय। तद नायण उठै मुफरी बणायी अर खवायी कुंवर नु अर फुलमती नुं दोनां ही नुं। तैनुं अै बहुत राजी हुवा अै मुफरी खावै। इयें भांत रहिता रहितां एकै दिन नायण चले कही कुवर नुं एक गोली बणांयां छां तेसुं थे राजी हुसो। तद कुंवर कहीं गोली बणाय। तद नायण विस गोली बणाय हर कुंवर नुं दी वी। अर आपतो पाखती जाय सूती। कुंवर नुं घणी ही बोलयो पण कुवर तो बोलै नहीं। इवा नायण देखें तो कासूं कुवर तो। मूवो ताहरा फूलमती विचारीयो जु हमैं कूंका तो आपां री कोई नहीं अर इयें तिनाल कुंवर नुं नारीयो। तैना कहे कासूं हुवै। तद फूलमती विचारी औ कुवर री ब्राह्मण आसै तो उवै पासै संजीवन विद्या छै। सु जीवाउसी। तद फूलमती उठै कुंवर नुं महलायत मौहें अरंड री रूख हुती तैरै पाना माहे लपेट अर अरंड रै रूख ऊपर रालीयौ। परभात हुवो तद नायण कही राजकुंवरजी कठै। ताहरां इयें कही कुंवर तो रातें मूवो। सु रातोरात राकस उठाय ले गया। अठै राकस आवै छै। इतरी इयें कही तद नायण कही तो हालो आपा अठै सूं परी हालां। तद ऐ अठै सुं उठ अर नदी आई। आधे उठै रजपत डुंडी लीयां बैठा छै। नायण फूलमती नुं डूडी बैसाण कर डूंडी चलाई। सु अै चालीया आपरै सहर आया। नयण फूलमती ने ले डूंडी सुं उतर अर राजा री हजूर कै राजा कै आगे आंण सलाम कराई। महाराज आ अठै मोजड़ी की पैहरण वाली आई छै अर अठै मोजड़।

को लाकर पेश कर दू। नाइन दूती थी। नाई ने जाकर राजा से कहा, "महाराज, मेरी नाइन कहती है कि यदि महाराज कहे तो जूती तो क्या, जिसकी यह जूती है उसीको लाकर पेश करू।" राजा ने कहा, "शावाश, इसी समय ले आओ।" नाइन राजा के पास से खर्च तथा दस-बीस आदमी लेकर एक नाव बनाकर नदी-नदी चली। नदी के पास जो भी शहर आता वहा वह साहूकारो के घरो को जाकर देखती, स्त्रियो के गहने और पहनावा देखती, फिर वापस आकर नाव मे वैठकर आगे चलती। इस तरह कई शहर देखे। इसके बाद देखती-देखती उस सूने शहर मे घुसने लगी। एक कोने मे उसे वह दूसरी जूती पडी हुई दिखाई दी। नाइन ने जूती उठा ली और वापस आकर जूती नौकरो को दे दी, कहा, "जूती की मालकिन भी यही होगी।" नाइन गुफा के अन्दर घुसी। आगे दुकाने सूनी पडी थी, पर हलवाई की दूकाने मिठाई से भरी पडी थी। नाइन मिठाई की पोटली भरकर और वाहर जाकर राजपूतो को दे आई। राजपूतो को कही जगल मे छोड आई, आप भीतर गई। आगे जाकर देखती क्या है कि फूलमती झूले पर झूल रही है। नाइन ने जाकर वलैया ली और कहा, "अपनी धेवती पर न्यौछावर होती हू।" इतना कहकर नाइन पास जाकर बैठ गई और कहा, "तू मेरी धेवती है, मैं तेरी मौसी हू।" फूलमती ने कहा, "बहुत अच्छा।" नाइन ने पूछा, "तुम्हारा पति कहा है?" उसने कहा, "शिकार के लिए गये है।" नाइन ने उसके उवटनकर स्नान कराकर, चोटी गूथकर उसे तैयार कर दिया। इतने में कुमार शिकार ले आया।

कुमार ने फूलमती से पूछा, "यह कौन है?" रानी ने कहा, "मेरी मौसी है।" उसके मन मे विश्वास हो गया और उसे वहा रख लिया। नाइन वहा रहती और सेवा करती। राजपूतो के लिए भोजन-मिठाई ले जाकर दे आती। इस तरह रहती रही। रहते-रहते नाइन ने फूलमती से कहा, "मै एक दवा जानती हू, जिससे तुम्हे वहुत सुख मिलेगा। फूलमती ने कहा, "तो तैयार करो।" नाइन ने उठकर मुफरा बनाया और राजकुमार और फूलमती दोनो को खिलाया। दोनो ने वहुत खुश होकर मुफरा खाया। इस

उर्वा हाजर कीवी। तठै राजा इयँ री रूप देख बहुत राजी हुवो। नायण ता पण इनाम दे नै फूलमती नु भीतर ले गयो। तठै रात पड़ी जद राजा फूलमती री सालीयँ गयो। तद फूलमती कही राजा जो तू मोनु हय लायो तो हूँ अवेह महल रहीस एठै बरस दिन तांई पुन्य कर कुंवर री बरसी कर पछै थारे ढोलीयै आईस इतरै मनें छेड़े मतां। ताहरां राजा एक एकांत महल कराय उठै उवै नुं राखी। पासती उवा नायण अर तीन्ह बीजी राखी छोकरी कुंवारी एक ब्राह्मण री बेटी छै एक सुथार री बेटी एक लुहार री बेटी उठै अै तीन्ह छोकरी राखी। उठै फूलमती सदाव्रत मांडीयो जिकोई आवै तैनुं सीधो दीजै। इयँ भांत रहै तठै उवै नारी कुंवर तीन्ह चाकर राख आयो हुंतो तिका हुनर सीखीया। जिको सुथार चालीयो सु लोहार पासै आयो लुहार नुं ले अर ब्राह्मण पासे आया। तीन्हे भेला हुई अर कुंवर री खबर करण नुं चालीया। तिके चालिया चालिया उवै सहर आया। जिके सहर फूलमती आई हुंती तद अै सदाबरत नु लेवण गया। उठै इंहा च्यार जणां री सीधो मांगीयो। तद इंहा नै कह्यो थे तीन्ह छो च्यार री सीधो क्यु मांगो। तद इहां कही म्हे च्यार छां। तद जिके सदाबरत देता हतां जिके जाय कही बहूजी राज तीन्ह जणा आया छै तिके च्यार रीसीधो मांगे छै कौण हुकम। ताहरां रांणी कह्यो दीयो। तद इंहा नै सीधो दीयो। उठे ही ज महल नीचै रूंख हुंतो तठै ही ब्राह्मण रसोई कीवी हर च्यार पातल परीसी। एक पातल अर लोटो आधो मेल नमस्कार कर अर ब्राह्मण जीमण बैठो अर उवै सुथार लोहार पिण पातल री परिक्रमा कर जीमण बैठा। तठै फूलमती दीठा। तद फूलमती विचारी ए सही और कुंवर कहतो तिके हीज छै। ताहरां राणी आपरा कपडा उतार दासी रा कपडा पहर इहा कन्है आई तद रांणी पूछीयो साज कहो थे कौन छो अर पातल कंयुं पासै राख हर नमस्कार करो छो। तद इहां कही म्हे बीरभांण कुंवर रा चाकर छां। सु म्हाने वासै रा[illegible] आयौ हुंतौ सु हमै म्हे कुंवर री खबर करण जावां छा। तद रांणी कही [illegible] जै वास्तै वंसै राखिया हंता सु विद्या सीखी क नहीं। तद इहां कहीं तूं [illegible] पूछै सु तूं कौण छै। तद इयै आपरी हकीकत कही। इयै कही इण भांत मो कुंवर